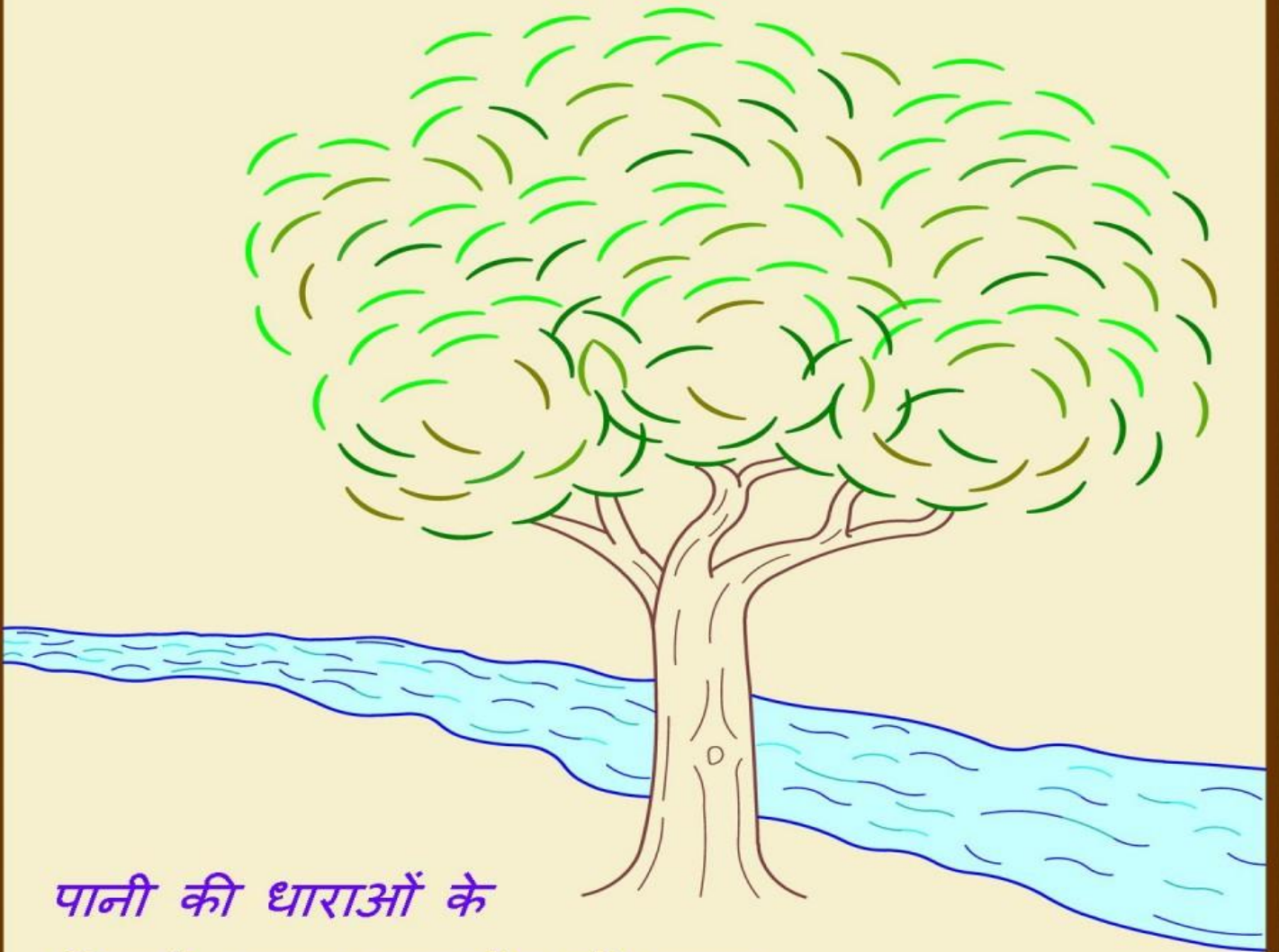


शाश्वत जीवन की नींव

वे बातें जो हम जानते हैं, वे कार्य जो हम
करते हैं, और वे कार्य जो परमेश्वर करते हैं

थॉमस जी. एडेल द्वारा



पानी की धाराओं के
किनारे लगाए गए पेड़ की तरह

भजन संहिता 1

शाश्वत जीवन की नींव

वे बातें जो हम जानते हैं, वे कार्य जो हम करते हैं, और वे कार्य जो परमेश्वर करते हैं

थॉमस जी. एडेल द्वारा

कॉपीराइट 2012, 2021, 2026 थॉमस जी. एडेल द्वारा सुरक्षित

द्वितीय संस्करण, एआई अनुवाद संस्करण, फरवरी 2026

यह पुस्तक गैर-व्यावसायिक प्रयोजनों के लिए स्वतंत्र रूप से मुद्रित, प्रतिलिपि, और वितरित की जा सकती है। लेखक की अनुमति के बिना प्रतियाँ लाभ के लिए बेची नहीं जा सकतीं। कृपया यथासंभव इस कॉपीराइट वक्तव्य को शामिल करें।

अन्य अनुवाद और ईबुक प्रारूप यहाँ उपलब्ध हो सकते हैं:

ShalomKoinonia.org

कृपया टिप्पणियाँ, सुधार, और संशोधन के सुझाव निम्नलिखित पर भेजें:

Thomas@ShalomKoinonia.org

जब तक अन्यथा सूचित न किया गया हो, सभी शास्त्र उद्धरण World English Bible (WEB, अद्यतन संस्करण दिनांक 28 जनवरी, 2026) से लिए गए हैं, जो सार्वजनिक क्षेत्र में है। कुछ श्लोकों को अनुवाद को सुगम बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा सूक्ष्म रूप से संशोधित किया गया है।

"YLT" अंकित शास्त्र उद्धरण Young's Literal Translation से हैं, जो सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध है।

अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में दिए गए शास्त्र उद्धरण अंग्रेज़ी शास्त्रों के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा अनुवादित संस्करण हैं। कृपया इस पुस्तक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा किए गए शास्त्र अनुवादों की तुलना अपनी भाषा के विश्वसनीय बाइबल अनुवाद से अवश्य करें।

इस पुस्तक के अंग्रेज़ी से अन्य भाषाओं में अनुवाद मुख्यतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा किए गए हैं, जिनमें लेखक की इच्छा के विरुद्ध त्रुटियाँ और असंगतताएँ हो सकती हैं। कृपया .epub फ़ाइल में आवश्यक सुधार करें एवं संशोधित प्रति लेखक को प्रेषित करें ताकि संभवतः वितरण किया जा सके (मुफ्त "Sigil" सॉफ़्टवेयर .epub फ़ाइल संशोधन हेतु एक उपयुक्त उपकरण हो सकता है)।

सामग्री सूची

भूमिका
परिचय

इस पुस्तक का उपयोग करने के तरीके

भाग 1: वे बातें जिन्हें हम जानते हैं

1. आदिकाल में, परमेश्वर
2. आदिकाल में वचन था
3. पाप ने संसार में प्रवेश किया
4. मसीह ने हमारे पापों के लिए मृत्यु पाई
5. वह पुनः जीवित हुआ है
6. परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया
7. प्रभु कृपाशील हैं
8. प्रभु धर्मी और न्यायप्रिय हैं
9. प्रभु महिमामय हैं
10. प्रभु मेरा पालक हैं
11. यीशु
12. आपके विरोधी शैतान हैं
13. मृतकों का पुनरुत्थान
14. न्याय का दिन
15. स्वर्ग में आपका पुरस्कार

भाग 2: हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्य

16. मुझे उद्धृत होने के लिए क्या करना चाहिए?
17. बपतिस्मा ग्रहण करना
18. "मेरी स्मृति में यह करें"
19. अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करो
20. अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करो जैसा तुम स्वयं से रखते हो
21. दान करना
22. जैसे प्रभु ने आपको क्षमा किया, उसी प्रकार आप भी क्षमा करें
23. पूजा करें, आनंदित हों, और धन्यवाद दें!
24. प्रार्थना
25. शास्त्रों की परीक्षा करें
26. एक साथ मिलना
27. आज्ञाकारिता करें

अंश 3: परमेश्वर के कार्य

28. अनुग्रह
29. पापों की क्षमा
30. पाप से मुक्ति
31. परमेश्वर से उत्पन्न होना
32. पवित्र आत्मा का उपहार
33. एक शरीर
34. प्रत्येक आध्यात्मिक आशीर्वाद

भाग 4: परमेश्वर और हम जो कार्य करते हैं

35. विश्वास
36. आशा
37. प्रेम
38. आत्मा के अनुसार चलना
39. आत्मिक फल
40. विविध दान
41. हाथ लगाना

भाग 5: वे बातें जिन्हें हमें नहीं करनी चाहिए

42. कृत्यों द्वारा नहीं; धर्मशास्त्र द्वारा नहीं
43. पृथ्वी के खजाने
44. यौनिक पाप
45. अहंकार
46. प्रतिशोध
47. विवाद करना
48. पाप करना जारी रखना

भाग 6: वे बातें जो परमेश्वर नहीं करता

49. अन्याय करना, न्याय को विकृत करना

भाग 7: सब कुछ एक साथ जोड़ना

50. मोक्ष
51. मसीह में
52. "मेरे पास आओ"
53. अडिग खड़े रहना

निष्कर्ष

भूमिका

“मेरे पास आओ, हे सब परिश्रम करने वालों और भारी बोझ से दबे हुए लोगों, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं मन में दीन और नम्र हूँ; तो तुम्हें अपने प्राणों के लिए विश्राम मिलेगा। क्योंकि मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हल्का है।”

(मत्ती 11:28-30)

“यदि कोई प्यासा है तो वह मेरे पास आए और पिये! जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा धर्मग्रंथ में कहा गया है, उसके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।”

(यूहन्ना 7:37-38)

यीशु हम प्रत्येक को अपने पास आने के लिए आमंत्रित करते हैं। यह मोक्ष का निमंत्रण है: **“मेरे पास आओ।”** मोक्ष मुख्यतः जानकारी या कर्मों का विषय नहीं है, बल्कि—मोक्ष का विषय सही संबंध है:

“अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे, जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, और जिसे तूने भेजा है, अर्थात् यीशु मसीह को जानें।” (यूहन्ना 17:3)

अनन्त जीवन में परमेश्वर को जानना शामिल है; परमेश्वर के साथ सही संबंध होना। परमेश्वर को और अधिक भली-भांति जानने के लिए, हमें वे बातें सीखनी और करनी चाहिए जो हमारे परमेश्वर के साथ संबंध को मजबूत करें। हमें उन बातों से बचना चाहिए जो हमारे परमेश्वर के साथ संबंध को हानि पहुँचाती हैं। यही कारण है कि **“वे बातें जो हम जानते हैं,” “वे बातें जो हम करते हैं,”** और **“वे बातें जो हमें नहीं करनी चाहिए”** के विषय में लिखा गया है। उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर को और अधिक जान सकें; परमेश्वर के साथ अपने संबंध को और गहरा करने के लिए; परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को और गहरा करने के लिए।

क्या आप पहले ही यीशु के पास आ चुके हैं? यदि हाँ, तो यह पुस्तक आपके परमेश्वर के साथ संबंध को और गहरा करने में आपकी सहायता करे।

क्या आप अभी तक यीशु के पास नहीं आए हैं? ईश्वर करे यह पुस्तक आपके परमेश्वर के साथ संबंध की शुरुआत करने में आपकी सहायता करे।

आत्मा और दुल्हन कहते हैं, “आ!” सुनने वाला भी कहे, “आ!” जो प्यासा है वह आए। जो चाहे, वह जीवन का जल निःशुल्क ले ले। (प्रकाशितवाक्य 22:17)

परिचय

आध्यात्मिक विषयों के संबंध में भ्रम व्यापक है। आध्यात्मिक भ्रम से जीवन टूट जाते हैं। यह पुस्तक यह प्रयास करती है कि महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य को स्पष्ट किया जाए, जिससे स्पष्टता भ्रम पर विजय प्राप्त करे और टूटे हुए जीवन फिर से पूर्ण हो जाएँ।

इस पुस्तक का उद्देश्य **नया** दृष्टिकोण प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि पुराने सत्य को स्पष्ट और सरल ढंग से इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि समझना सहज हो जाए।

यह पुस्तक अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का समावेश करती है। अन्य लेखकों ने जिन विषयों पर संपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं, वे यहाँ केवल कुछ पृष्ठों में समाहित हैं। किसी भी विषय का विस्तृत विवरण अपेक्षित न करें; परंतु अपेक्षा करें कि कुछ पृष्ठों में ही बहुत कुछ समेटा गया है।

मैंने विषय-वस्तु को इन्हीं विषयों तक सीमित रखने का प्रयास किया है, जो:

- बहुत प्रबल और स्पष्ट शास्त्रीय आधार रखते हैं, और
- सभी लोगों तथा सभी संस्कृतियों में लागू होते हैं।

प्रार्थना है कि इन पृष्ठों के वचन आपको परमेश्वर के प्रेम को जानने, परमेश्वर को और अधिक समझने तथा परमेश्वर से गहरा प्रेम करने में सहायक हों।

मैं आपको इसका आग्रह करता हूँ कि आप निम्न प्रार्थना को अपनी बना लें:

हे परमेश्वर, मेरी सहायता कर कि मैं तेरे प्रेम को जान सकूँ। मेरी सहायता कर कि मैं तेरे मार्ग सीख सकूँ और उनमें चल सकूँ। मेरी आत्मिक आंखें खोल, ताकि मैं स्वयं को वैसे ही देख सकूँ जैसे तू मुझे देखता है, और अपनी परिस्थितियों को वैसे ही समझ सकूँ जैसे तू उन्हें समझता है। मुझे अपनी आत्मा से भर दे, ताकि मैं जहां भी तू ले चले, वहां तेरा अनुसरण कर सकूँ।

क्या आपने इसे वास्तव में कहा था? या, क्या वह प्रार्थना केवल खाली शब्द थे? उस प्रार्थना को वास्तव में कहने के लिए आपको क्या चाहिए?

विचार करें कि उस प्रार्थना को सच में करें।

इस पुस्तक का उपयोग करने के तरीके

इस पुस्तक में विषयों की प्रस्तुतिकरण का क्रम महत्वपूर्ण है, अतः इस पुस्तक को आरंभ से अंत तक सीधा पढ़ना उत्तम होगा।

हालांकि यदि आपके पास पूरी पुस्तक पढ़ने का समय नहीं है, तो आप चाहें तो अनुक्रमणिका में से किसी रुचिकर विषय का चयन कर वहीं से आरंभ कर सकते हैं। जैसा आपके लिए उपयुक्त हो, वैसा करें!

प्रत्येक अध्याय अपेक्षाकृत संक्षिप्त है, इस कारण यह पुस्तक आसानी से दैनिक भक्ति हेतु भी प्रयुक्त की जा सकती है, उन लोगों के लिए जिन्हें इसका लाभ होगा।

यह पुस्तक छोटे समूह में चर्चा या अध्ययन के लिए भी उपयोगी है। समूह की रुचि के अनुसार जितनी भी बैठकों के लिए उचित लगे, उतने विषय चुनें। यह भी अच्छा रहेगा कि बारी-बारी से अध्याय पढ़ें तथा उसमें उल्लिखित वचनों व पूछे गए प्रश्नों पर चर्चा करें। चर्चा एक सरल, सतत प्रश्न के इर्द-गिर्द केंद्रित हो सकती है: **“और आप क्या सोचते हैं? आप पर इसका क्या प्रभाव होना चाहिए?”** अध्यायों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि प्रत्येक अध्याय को एक बार में छापा या कॉपी किया जा सके, ताकि प्रत्येक समूह सदस्य के पास उसकी एक प्रति हो। इस पुस्तक के प्रारंभ में दिए गए कॉपीराइट नोटिस के अनुसार, **इस पुस्तक की प्रतिलिपि बनाना और वितरण करना पूर्णतः स्वतंत्र है।**

अध्यायों को संक्षिप्त रखने के कारण, बहुत सी बातें अनकही रह जाती हैं। जो लोग अधिक गहराई में जाना चाहते हैं, उनके लिए प्रत्येक अध्याय के अंत में **“और मनन के लिए”** सुझाव दिए गए हैं। ये सामान्यतः धर्मग्रंथ संदर्भ होते हैं, और कभी-कभी कुछ प्रश्न भी होते हैं। यदि आपके पास समय है, तो संभवतः आपको धर्मग्रंथ में और गहरे सत्य की खोज से लाभ होगा (और यह जाँचने के लिए भी कि इस पुस्तक में जो लिखा है वह सत्य है या नहीं)। कभी-कभी किसी अन्य पुस्तक का भी उल्लेख है। कुछ सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें जो मैंने पढ़ी हैं, वे अत्यधिक प्रसिद्ध नहीं हैं; संभव है मेरे सुझाव आपके लिए लाभकारी सिद्ध हों।

ध्यान रहे कि धर्मग्रंथ को छोड़कर अन्य सभी पुस्तकें अपूर्ण हैं, क्योंकि वे अपूर्ण मनुष्यों द्वारा लिखी गई हैं। जब आप इन पृष्ठों को पढ़ें, तो परमेश्वर से सत्य और भ्रांति में भेद discern करने की बुद्धि माँगें।

भाग 1: वे बातें जिन्हें हम जानते हैं

नये नियम की अधिकांश पत्रियों में सबसे पहले उन बातों पर बल दिया गया है जिन्हें हमें **जानना** चाहिए। इसके बाद, बल उन बातों पर आता है जिन्हें हमें **करना** चाहिए। प्रायः **सही सोच** ही **सही कर्मों** से पहले आती है। यदि हम पहले परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली **सोच** को नहीं सीखेंगे, तो हम परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला **जीवन** नहीं जी सकते।

इसलिए, इस पुस्तक के भाग 1 में बल उन बातों पर है जिन्हें हमें **जानना** चाहिए। भाग 2 में ध्यान उन बातों पर दिया जाएगा जिन्हें हमें **करना** चाहिए।

अध्याय 1 आदि में परमेश्वर

आदि में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की।

(उत्पत्ति 1:1)

प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

(भजन 107:1)

एक परमेश्वर हैं, जो एकमात्र परमेश्वर हैं, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी तथा उनमें स्थित सभी वस्तुओं की सृष्टि की है। आप उसकी सृष्टि का भाग हैं। यद्यपि आप इसे पहले से जानते होंगे, फिर भी इसे पुनः स्मरण करना उचित है, क्योंकि अनेक लोग परमेश्वर के अस्तित्व से इनकार करते हैं, या ऐसे किसी देवता में विश्वास करते हैं जो उस परमेश्वर से भिन्न है, जिन्होंने **“स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की”** और जिनकी **“प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।”**

धर्मग्रंथ, परमेश्वर के अस्तित्व के लिए अधिक तर्क प्रस्तुत नहीं करता। यीशु के अनुयायी प्रायः यह समझते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं को धर्मग्रंथों तथा सृष्टि में प्रकट किया है, और ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर अपने अस्तित्व की स्थापना के लिए समय देना आवश्यक नहीं समझते। इसके स्थान पर, धर्मग्रंथ इस प्रकार कहते हैं:

मूर्ख ने अपने मन में कहा, “कोई परमेश्वर नहीं है।” (भजन 14:1, भजन 53:1)

...जो परमेश्वर के विषय में जाना जाता है, वह उनमें प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें प्रकट कर दिया है। उसकी अदृश्य बातें, अर्थात् उसकी अनन्त सामर्थ्य और दिव्यत्व, संसार की सृष्टि के समय से बनाई गई वस्तुओं के द्वारा स्पष्ट रूप से देखी जाती हैं; ताकि वे निरुत्तर रह जाएं। (रोमियों 1:19-20)

आदि में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

यदि आप परमेश्वर के अस्तित्व को लेकर संघर्ष कर रहे हैं, तो इसका एक कारण निम्नलिखित हो सकता है:

- सच्चे विश्वास का विरोध करने वाले मीडिया का प्रतिदिन होने वाला प्रभाव।
- उन बहुत से लोगों का पाखंड, जो परमेश्वर का अनुयायी होने का दावा करते हैं।
- परमेश्वर में विश्वास न करने के लिए साथियों का दबाव।

- परमेश्वर के बारे में आपकी अपनी गलत धारणाएँ, जैसे संसार और आपके जीवन की सारी बुराई का दोष परमेश्वर को देना।
- पूर्व में 'चर्च' से जुड़े नकारात्मक अनुभव।

इनमें से प्रत्येक बिंदु का आपके ऊपर कितना प्रभाव पड़ता है?

जहाँ तक संभव हो, मीडिया के ऐसे प्रभाव को कम करें; पाखंडियों को आपको सत्य से दूर न करने दें; अपने साथियों का अनुसरण करते हुए नरक की ओर न जाएँ; स्वीकार करें कि परमेश्वर के विषय में आपकी कुछ मान्यताएँ गलत हो सकती हैं; **दूसरों की असफलताओं को आपको अनन्त जीवन से दूर न होने दें!**

परमेश्वर को वास्तव में जानने के लिए यह आवश्यक है कि आप उन्हें **अपने सम्पूर्ण हृदय से** खोजें। क्योंकि परमेश्वर ने कहा है:

“तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे, जब तुम अपने सम्पूर्ण हृदय से मुझे खोजोगे।”
(यिर्मयाह 29:13)

बहुत से लोग परमेश्वर की खोज में ठीक इसी बिंदु पर विफल हो जाते हैं। वे वास्तव में परमेश्वर को जानने और उनका अनुसरण करने का प्रयत्न नहीं करते। बल्कि, वे सच में एक ऐसे अलौकिक प्राणी की तलाश में रहते हैं, जैसे सांता क्लॉज़ या जिन्न, जो बिना कोई अपेक्षा किए उनकी इच्छाएँ पूरी कर दे।

आपके विषय में क्या? क्या आप सच में परमेश्वर को जानना और उनका अनुसरण करना चाहते हैं, या केवल किसी जिन्न को खोजना चाहते हैं जो आपकी समस्याएँ दूर कर दे?

आगे मनन के लिए

प्रेषितों के काम 17:24-28: पौलुस एथेंस में सृष्टिकर्ता के विषय में बोलते हैं।

इब्रानियों 11:3: ब्रह्मांड परमेश्वर के वचन से रचा गया।

उत्पत्ति 1:1 से 2:3: सृष्टि के सात दिन।

1कुरिन्थियों 8:4-6: एक परमेश्वर के विषय में स्पष्टीकरण।

यूहन्ना 8:31-32: सत्य को जानना तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

पुस्तक संदर्भ: “अनंत जीवन की नींव के नीचे” थॉमस एडेल द्वारा। निःशुल्क ई-पुस्तक ShalomKoinonia.org पर उपलब्ध है।

अध्याय 2 आदि में वचन था

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब वस्तुएँ उसी के द्वारा बनीं; और उसके बिना कुछ भी नहीं बना, जो बना। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। ... वचन शरीर बना और हमारे मध्य निवास किया।

(यूहन्ना 1:1-4, 1:14)

वह उनसे बोला, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?” शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र।”

(मत्ती 16:15-16)

और आप क्या कहते हैं? आप यीशु को कौन मानते हैं?

इस अध्याय को लिखते समय मुझे अपने शब्दों में कोई ऐसी बात कहने में कठिनाई हुई, जो धर्मग्रंथ को सही रूप में स्पष्ट कर सके। इसलिए, यीशु कौन हैं, इस विषय पर कुछ महत्वपूर्ण आयतें प्रस्तुत हैं:

फिर महायाजक ने उससे पूछा, “क्या तू मसीह है, धन्य के पुत्र?”

यीशु ने कहा, “मैं हूँ। तुम मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य के दाहिने हाथ बैठा हुआ और आकाश के बादलों के साथ आते हुए देखोगे।” (मरकुस 14:61-62; साथ ही देखें दानिय्येल 7:13-14)

इसलिए इस्राएल के समस्त घराने निश्चित रूप से जान लें कि परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया था, प्रभु और मसीह ठहराया है। (प्रेषितों के काम 2:36)

वह अदृश्य परमेश्वर की छवि है, समस्त सृष्टि में पहिलौठा। क्योंकि उसी के द्वारा सब वस्तुएँ सृजी गईं, स्वर्ग में और पृथ्वी पर, दृश्य और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों या प्रभुत्व, प्रधानता या अधिकार। सब वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। वह सब वस्तुओं से पहले है, और उसी में सब वस्तुएँ स्थिर रहती हैं। वह देह, अर्थात् सभा का सिर है, जो आदि है, मरे हुएओं में से जी उठनेवाला पहिलौठा है, ताकि वह सब बातों में प्रधान रहे। (कुलुस्सियों 1:15-18)

वह मन जो मसीह यीशु में था, वही तुम में भी हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के समानता को अपनाए रखने को कुछ भी नहीं समझा,

परंतु अपने आप को शून्य कर दास का रूप धारण किया, और मनुष्यों के समान बन गया। और मनुष्य की दशा में पाया जाकर, उसने अपने आप को दीन किया, और मृत्यु तक, हाँ, क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। इसलिए परमेश्वर ने भी उसे अत्यन्त ऊँचा किया, और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है; ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग में, पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, हर एक घटना झुके, और हर एक जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु है, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए। (फिलिप्पियों 2:5-11)

“वचन जो उसने इस्राएल की संतान के पास भेजा, यीशु मसीह के द्वारा शांति की शुभ समाचार का प्रचार किया—वह सबका प्रभु है— ...” (प्रेषितों के काम 10:36)

यीशु उनके पास आए और उनसे बोले, “स्वर्ग और पृथ्वी पर समस्त अधिकार मुझे दिए गए हैं।” (मत्ती 28:18)

यीशु ने अपने शिष्यों के सम्मुख और भी बहुत से चिह्न किए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं; परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है; और विश्वास करते हुए उसके नाम में तुम्हें जीवन मिले। (यूहन्ना 20:30-31)

इन पदों से स्पष्ट होता है कि यीशु **मसीह, परमेश्वर का पुत्र, सबका प्रभु** हैं। वे पृथ्वी पर अपने जीवन से पूर्व **“परमेश्वर के स्वरूप में”** थे, और **“सब वस्तुएँ उन्हीं के द्वारा उत्पन्न की गईं”**!

आगे मनन के लिए

‘मसीह’, ‘प्रभु’ और ‘परमेश्वर का पुत्र’ शब्दों का क्या अर्थ है?

क्या यीशु बहुत से मसीहों में से एक हैं, या यीशु ही एकमात्र सच्चे मसीह हैं?

लूका 1:31-35: स्वर्गदूत गब्रियल के मरियम से वचन।

यूहन्ना 8:21-59: आप क्यों नहीं समझते?

1कुरिन्थियों 8:4-6: एक परमेश्वर के विषय में स्पष्टीकरण।

इब्रानियों 1:1-14: परमेश्वर ने हमसे अपने पुत्र के द्वारा वचन किया है।

पुस्तक संदर्भ: 'मसीह के लिए तर्क' ली स्ट्रोबेल द्वारा।

अध्याय 3 पाप संसार में प्रवेश कर गया

प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को यह आज्ञा दी, 'तू बाग के हर वृक्ष का फल बिना रोक-टोक खा सकता है; परंतु भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना; क्योंकि जिस दिन तू उसमें से खाएगा, उसी दिन निश्चय ही मर जाएगा।'

(उत्पत्ति 2:16-17)

इसलिए, जैसा कि एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु, वैसे ही मृत्यु सब मनुष्यों पर फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।

(रोमियों 5:12)

संसार में इतनी अधिक बुराई क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर उत्पत्ति अध्याय 3 में दिया गया है, जहाँ आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, जिससे पाप और मृत्यु संसार में आ गई। आदम और हव्वा से उत्पन्न प्रत्येक व्यक्ति इससे प्रभावित हुआ है। जैसा शास्त्र में लिखा है:

यदि हम कहें कि हमारे भीतर पाप नहीं है, तो हम अपने आप को धोखा देते हैं, और सत्य हमारे भीतर नहीं है। (1यूहन्ना 1:8)

यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हमारे भीतर नहीं है। (1यूहन्ना 1:10)

सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23)

सामान्यतः, "पाप" को परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले किसी भी विचार या कर्म के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। (परमेश्वर ही यह निर्धारित करने वाले परम न्यायाधीश हैं कि क्या सही है और क्या गलत; यह स्वयंसिद्ध है।)

पाप का मुख्य परिणाम मृत्यु है:

क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है... (रोमियों 6:23)

इसलिए, जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु, वैसे ही मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सब ने पाप किया। (रोमियों 5:12)

मैं समझता हूँ कि यहाँ जो 'मृत्यु' कही गई है, उसमें शारीरिक और आत्मिक दोनों तत्व सम्मिलित हैं। हम पाप के कारण शारीरिक रूप से प्राकृतिक मृत्यु का अनुभव करते हैं, और हम सब मसीह के द्वारा नया जीवन ग्रहण करने से पूर्व आत्मिक रूप से मृत होते

हैं। इस आत्मिक मृत्यु का उल्लेख अन्यत्र धर्मग्रंथ में भी मिलता है, जैसे:

तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, जिनमें तुम कभी इस संसार की रीति के अनुसार चलते थे। (इफिसियों 2:1-2)

तुम अपने अपराधों और अपने शरीर की खतना-रहित स्थिति में मरे हुए थे।
(कुलुस्सियों 2:13)

और क्योंकि परमेश्वर पूर्णतः धर्मी और पवित्र हैं, हमारा पाप हमें परमेश्वर से अलग कर देता है।

परन्तु तुम्हारे अपराधों ने तुम्हें और तुम्हारे परमेश्वर को अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों ने उससे उसका मुख छिपा लिया है, जिससे वह नहीं सुनता।
(यशायाह 59:2)

हम यह सोचकर स्वयं को उचित ठहराने का प्रयास कर सकते हैं कि हमारे अच्छे कार्य किसी प्रकार हमारे बुरे कार्यों की भरपाई कर देंगे, परन्तु धर्मग्रंथ इसे इस प्रकार नहीं देखता:

क्योंकि जो कोई पूरी व्यवस्था का पालन करता है, और फिर भी एक बिंदु में गिरता है, वह सब का दोषी बन जाता है। (याकूब 2:10)

भविष्यद्वाक्ता यशायाह ने यह बहुत सुंदर रूप में कहा है:

क्योंकि हमारे अपराध तेरे सामने बहुत बढ़ गए हैं, और हमारे पाप हमारे विरुद्ध साक्षी देते हैं; हमारे अपराध हमारे साथ हैं, और हमारे अधर्मों को हम जानते हैं: हम प्रभु के विरुद्ध अपराध और उसका इनकार करते हैं, अपने परमेश्वर का अनुसरण करने से मुड़ जाते हैं, दमन और विद्रोह की बातें बोलते हैं, और मन से झूठ के वचन गढ़ते और कहते हैं। (यशायाह 59:12-13)

आपके विषय में क्या? क्या आप यह दावा करते हैं कि आपने पाप नहीं किया है?

आपने किन मार्गों में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है?

आपके पापों के क्या परिणाम हैं?

आगे मनन के लिए

उत्पत्ति 3:1-24: मनुष्य का पतन / प्रथम पाप।

लूका 18:9-14: फरीसी और कर संग्रहकर्ता।

रोमियों 3:9-20: कोई भी धर्मी नहीं है।

भजन 51: राजा दाऊद का पाप स्वीकारना।

अध्याय 4 मसीह हमारे पापों के लिए मरे

क्योंकि सबसे पहले मैंने तुम्हें वही दिया, जो मैंने भी पाया: कि मसीह हमारे पापों के लिए धर्मग्रंथों के अनुसार मरे, और गाड़े गए, और तीसरे दिन धर्मग्रंथों के अनुसार जी उठे।

(1कुरिन्थियों 15:3-4)

क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, उसी समय उचित समय पर मसीह अधर्मियों के लिए मरे। किसी धर्मी व्यक्ति के लिए शायद ही कोई मरे। फिर भी, किसी भले व्यक्ति के लिए कोई मरने का साहस कर सकता है। परन्तु परमेश्वर ने अपना स्वयं का प्रेम हमारे प्रति इस बात में प्रकट किया कि जब हम अभी पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरे।

(रोमियों 5:6-8)

मसीह ने भी पापों के लिए एक बार दुख सहा; धर्मी ने अधर्मियों के लिए, ताकि वह तुम्हें परमेश्वर के समीप लेकर आए।

(1पतरस 3:18)

पुराने नियम में, मूसा की व्यवस्था के अधीन, नियमों और विधानों पर आधारित एक धार्मिक व्यवस्था परमेश्वर द्वारा स्थापित की गई थी। मूसा की व्यवस्था परमेश्वर की अंतिम मोक्ष की योजना नहीं थी, यह एक अस्थायी व्यवस्था थी जिसका उद्देश्य पाप को प्रकट करना और दंडित करना था, और ऐसा करके सच्चे विश्वास को बढ़ावा देना था। इसने इस्राएल के लोगों के लिए एक विधिक व्यवस्था भी स्थापित की, ठीक वैसे ही जैसे आज संसार के विभिन्न देशों में विधिक व्यवस्थाएँ हैं। मूसा की व्यवस्था का एक मुख्य उद्देश्य लोगों को सच्चे विश्वास तक ले जाना था:

इसलिए व्यवस्था हमारी शिक्षक बन गई है, ताकि वह हमें मसीह के पास ले आए, जिससे हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें। गलातियों (3:24 NIV)

मूसा की व्यवस्था के भाग के रूप में पशु बलि की एक प्रणाली स्थापित की गई थी, जो यह दर्शाती थी कि लोगों के पापों का न्याय करने के लिए लहू बलिदान आवश्यक है। परन्तु, इब्रानियों का लेखक स्पष्ट करता है कि वे बलिदान वास्तव में केवल मसीह के हमारे पापों के लिए किए गए परम बलिदान की छाया मात्र थे:

क्योंकि व्यवस्था में आनेवाली अच्छी वस्तुओं की छाया है, स्वयं उनका स्वरूप नहीं; इसलिए वे साल दर साल लगातार वे ही बलिदान चढ़ाकर, जो वे चढ़ाते

हैं, आनेवालों को कभी सिद्ध नहीं कर सकते। अन्यथा, क्या वे बलिदान देना बंद न कर देते, क्योंकि उपासकों के एक बार शुद्ध हो जाने पर उन्हें अब पाप का कोई बोध न रहता? परंतु उन बलिदानों में हर वर्ष पापों की याद दिलाई जाती है। क्योंकि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर कर देना असंभव है।

इस कारण जब वह संसार में आता है, तो वह कहता है, “तूने न तो बलिदान और न भेंट चाही, परंतु मेरे लिए एक देह तैयार की; तुझे सम्पूर्ण होमबलि और पाप के लिए बलिदान में प्रसन्नता नहीं मिली। तब मैंने कहा, ‘देख, मैं आया हूँ (पुस्तक के ताव में मेरे विषय में लिखा है) — हे परमेश्वर, तेरा इच्छा पूरी करने के लिए।’” पहले कहा, “बलिदान और भेंट और सम्पूर्ण होमबलि तथा पाप के लिए बलिदान, ये तूने न चाहीं और न उनमें प्रसन्नता पाई” (ये वही हैं जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं), उसके बाद उसने कहा, “देख, मैं आया हूँ तेरा इच्छा पूरी करने।” वह पहले को हटाता है, ताकि दूसरे को स्थापित करे, और उसी इच्छा के द्वारा हम यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार चढ़ाए जाने से पवित्र किए गए हैं।

हर याजक नित्य खड़ा रहकर सेवा करता है और बार-बार वही बलिदान चढ़ाता है, जो कभी भी पाप दूर नहीं कर सकते; परन्तु वह, जब उसने पाप के लिए एक ही बार सदा के लिए बलिदान चढ़ाया, तो परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया, और तब से अपने शत्रुओं के अपने पाँवों की चौकी बनने की प्रतीक्षा कर रहा है। क्योंकि एक ही भेंट के द्वारा उसने उन लोगों को सदा के लिए सिद्ध कर दिया है, जो पवित्र किए जा रहे हैं। (इब्रानियों 10:1-14)

आपके विषय में क्या? क्या आप अपने पापों के लिए यीशु का बलिदान स्वीकार करेंगे?

आगे मनन के लिए

रोमियों 5:6-21: मसीह भक्तिहीनों के लिए मरा।

यशायाह 53:1-12: यीशु के विषय में पुराना नियम की भविष्यवाणी।

मत्ती 26:47-27:54: यीशु का न्याय और क्रूस पर चढ़ाया जाना। (साथ ही मरकुस 14:43-15:39; लूका 22:47-23:49; यूहन्ना 18:1-19:37 भी देखें)

पुस्तक संदर्भ: “The Power of the Blood of Jesus” एंड्रयू मरे द्वारा; इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध।

अध्याय 5 वह जीवित हो गया है

दूत ने स्त्रियों को उत्तर दिया, “मत डरो, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम उस यीशु को ढूँढ़ रही हो, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह यहाँ नहीं है, क्योंकि वह जी उठा है, जैसा कि उसने कहा था।

(मत्ती 28:5-6)

क्योंकि सबसे पहले मैंने तुम्हें वही दिया, जो मैंने भी पाया: कि मसीह हमारे पापों के लिए धर्मग्रंथों के अनुसार मरे, और गाड़े गए, और तीसरे दिन धर्मग्रंथों के अनुसार जी उठे।

(1कुरिन्थियों 15:3-4)

यदि मसीह मरे हुआं में से नहीं जी उठे, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; तुम अब भी अपने पापों में हो।

(1कुरिन्थियों 15:17)

यीशु का पुनरुत्थान नया नियम का मूल केंद्र है, और यह हमारे विश्वास का भी आधार है। यदि यीशु मरे हुआं में से नहीं जी उठे, तो न तो यीशु का अनुसरण करने का कोई कारण है, और न ही उन्हें एक महान शिक्षक मानने का कोई कारण है। यदि यीशु सचमुच शारीरिक रूप से मरे हुआं में से नहीं जी उठे होते, तो सारा नया नियम एक बड़ा झूठ सिद्ध होता। उनके सभी मूल अनुयायी झूठे साक्षी ठहरते, जिन्होंने मूर्खता से अपनी जान किसी ऐसी बात के लिए दे दी, जिसे वे स्वयं झूठ जानते थे।

स्वयं यीशु ने बार-बार सिखाया कि वह मरेगा और मरे हुआं में से जी उठेगा:

उसी समय से यीशु अपने शिष्यों को दिखाने लगे कि उसे अवश्य यरूशलेम जाना है और प्राचीनों, प्रधान याजकों और शास्त्रियों से बहुत दुःख उठाना है, और मार डाला जाना है, और तीसरे दिन जी उठना है। (मत्ती 16:21)

जब वे गलील में ठहरे हुए थे, तब यीशु ने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ सौंपा जाने वाला है, और वे उसे मार डालेंगे, और तीसरे दिन वह पुनरुत्थित किया जाएगा।” (मत्ती 17:22-23)

“देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ सौंपा जाएगा, और वे उसे मृत्यु दंड की आज्ञा देंगे, और उसे अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे कि वे उसका उपहास करें, कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं; और तीसरे दिन वह पुनरुत्थित किया जाएगा।” (मत्ती 20:18-19)

प्रेषितों के काम की संपूर्ण पुस्तक में, यीशु के अनुयायियों ने उसके पुनरुत्थान को अपने संदेश का केंद्र-बिंदु बनाया। उदाहरण के लिए:

“परमेश्वर ने इसी यीशु को जीवित किया, जिसके हम सब गवाह हैं।” (प्रेषितों के काम 2:32)

“हम उन सब बातों के गवाह हैं, जो उसने यहूदियों के देश में और यरूशलेम में कीं; उन्होंने उसे भी मार डाला, और उसे लकड़ी पर लटकाया। परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जीवित किया।” (प्रेषितों के काम 10:39-40)

पौलुस, जैसा उसकी रीति थी, उनके पास गया; और उसने लगातार तीन सप्ताह तक उनके साथ धर्मग्रंथों से तर्क करके यह समझाया और प्रमाणित किया कि मसीह को दुःख सहना और मृतकों में से पुनरुत्थान होना आवश्यक था, और कहा, “यह यीशु, जिसे मैं तुम्हें प्रचार करता हूँ, वही मसीह है।” (प्रेषितों के काम 17:2-3)

यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास करने में कठिनाई प्रायः दो कारणों में से एक से उत्पन्न होती है:

1. परमेश्वर के अस्तित्व और/या परमेश्वर की शक्ति पर प्रश्न करना।
2. या इस पर प्रश्न करना कि क्या यीशु वास्तव में मरे थे।

यदि पहला आपके लिए लागू होता है, तो मैं आपको अध्याय 1 में वापस जाने और परमेश्वर की वास्तविकता पर पुनर्विचार करने तथा परमेश्वर की शक्ति के विषय में अध्याय 9 देखने की सलाह देता हूँ। यदि दूसरा लागू होता है, तो अध्याय 4 में जाएँ और यीशु की मृत्यु की आवश्यकता तथा वास्तविकता पर पुनर्विचार करें।

मसीह जीवित हुए हैं!! क्या आप **“वास्तव में वह जीवित हुए हैं!!”** उत्तर दे सकते हैं?

आगे मनन के लिए

लूका 24:1-53: यीशु का पुनरुत्थान। (साथ ही मत्ती 28:1-20, मरकुस 16:1-20, यूहन्ना 20:1-31)

प्रेषितों के काम 2:22-32: पतरस के पहले उपदेश का भाग।

1कुरिन्थियों 15:12-21: पुनरुत्थान का महत्व।

रोमियों 6:1-14: पुनरुत्थान के महत्व का वर्णन।

पुस्तक संदर्भ: “मसीह के लिए तर्क” ली स्ट्रोबेल द्वारा (विशेषकर भाग 3 “पुनरुत्थान का अनुसंधान”) ।

अध्याय 6 परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया

“परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र जन्मा हुआ पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिये नहीं भेजा कि वह संसार का न्याय करे, परन्तु इसलिये कि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए।”

(यूहन्ना 3:16-17)

प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

(1 इतिहास 16:34; भजन 106:1, 107:1, 118:1, 118:29, 136:1)

परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पापों के लिये क्रूस पर मरने के लिये संसार में क्यों भेजा? क्योंकि **“परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया...”**

क्या परमेश्वर ने यीशु को केवल उन्हीं लोगों के लिये मरने भेजा था जो पहले से ही मूलतः अच्छे थे? नहीं, यीशु ने पापियों को बचाने के लिये प्राण दिया:

धर्मी व्यक्ति के लिये कोई शायद ही अपने प्राण देगा, और किसी भले व्यक्ति के लिये भी कोई साहस करे प्राण देने का। परन्तु परमेश्वर हमारा प्रति अपना प्रेम इस से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियों 5:7-8)

परन्तु परमेश्वर, जो दया में धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया, उसने जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जीवित किया—अनुग्रह से ही तुम उद्धार पाए हो। (इफिसियों 2:4-5)

क्या परमेश्वर पापियों को नरक भेजने में आनंदित होते हैं? नहीं:

“क्या मुझे दुष्ट की मृत्यु में प्रसन्नता है?” प्रभु परमेश्वर कहते हैं, “क्या मेरा अधिक आनंद इसमें नहीं है कि वह अपने मार्ग से लौट आए और जीवित रहे?” (यहेजकेल 18:23)

परमेश्वर का प्रेम कैसा है? परमेश्वर का प्रेम वैसा है जैसा एक अच्छे पिता का अपनी संतान के प्रति होता है:

देखो, पिता ने हम पर कितना महान प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की संतान

कहलाएँ! (1यूहन्ना 3:1)

जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही प्रभु उन पर दया करता है जो उसका भय मानते हैं। (भजन 103:13)

परमेश्वर अपने लोगों के लिए अपने प्रेम की तुलना एक माँ के अपने बच्चे से अधिक प्रबल प्रेम से करते हैं:

परन्तु सिय्योन ने कहा, “प्रभु ने मुझे छोड़ दिया है, और प्रभु मुझे भूल गया है।”

क्या कोई स्त्री अपने दूध पीते शिशु को भूल सकती है, कि वह अपने गर्भ के पुत्र पर दया न करे? हाँ, वे भूल भी जाएं, तो भी मैं तुझे नहीं भूलूँगा!” (यशायाह 49:14-15)

परमेश्वर स्वयं अपनी तुलना दूल्हे से करते हैं, और अपने लोगों को अपनी दुल्हन मानते हैं:

“जा और यरूशलेम के कानों में प्रचार कर, कह, ‘प्रभु कहता है: “मैं तेरे लिये तेरे युवावस्था की करुणा को, और दुल्हन के समान तेरा प्रेम, कि कैसे तू जंगल में, एक बोर्ड न गई भूमि में, मेरे पीछे चली आई—याद करता हूँ।””
(यिर्मयाह 2:2)

“जिस प्रकार दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण आनन्दित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तुझ में आनन्दित होगा।” (यशायाह 62:5)

धर्मग्रंथ यहाँ तक कहता है कि परमेश्वर स्वयंप्रेम हैं:

हम जानते हैं और हमने उस प्रेम पर विश्वास किया है जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है। (1यूहन्ना 4:16)

आगे मनन के लिए

निर्गमन 34:6-7: प्रेमपूर्ण करुणा में प्रचुर।

भजन 103:8: प्रेमपूर्ण करुणा से परिपूर्ण।

भजन 136: उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

लूका 15:11-32: प्रेमपूर्ण पिता और खोया हुआ पुत्र।

2पतरस 3:9: नहीं चाहता कि कोई नाश हो।

पुस्तक संदर्भ: “The Way to God” डी. एल. मूडी द्वारा। इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध।

अध्याय 7 प्रभु* भला है

क्योंकि प्रभु भला है। उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है, उसकी विश्वासयोग्यता सभी पीढ़ियों पर बनी रहती है।

(भजन 100:5)

प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

(1 इतिहास 16:34; भजन 106:1, 107:1, 118:1, 118:29, 136:1)

आप भले हैं, और भलाई करते हैं। मुझे अपनी विधियों की शिक्षा दीजिए।

(भजन 119:68)

जब सर्प ने हव्वा को उत्पत्ति 3 में प्रलोभित किया, तब उसने हव्वा को परमेश्वर के स्वभाव पर प्रश्नचिह्न लगाने के लिए प्रेरित किया। उसने संकेत दिया कि परमेश्वर ने उससे झूठ बोला था और वास्तव में उसके भले की इच्छा नहीं रखते थे (उत्पत्ति 3:1-5)। यही प्रश्न आज हम सबके सामने है। क्या परमेश्वर सचमुच भले हैं? क्या हम अपने जीवन के हर क्षेत्र में उन पर पूरी तरह भरोसा कर सकते हैं?

हव्वा ने निष्कर्ष निकाला कि सर्प सही था, कि परमेश्वर उसकी भलाई नहीं चाहता था, कि परमेश्वर की आज्ञाएँ अच्छी नहीं थीं। इसलिए, उसने परमेश्वर की आज्ञा ना मानने का चुनाव किया। आप क्या करेंगे? क्या आपने भी सर्प के झूठ को स्वीकार कर लिया है? क्या आप मानते हैं कि किसी न किसी स्तर पर, किसी न किसी रूप में, परमेश्वर भले नहीं हैं?

जब मैं परमेश्वर के "भला" होने की बात करता हूँ, तो मेरा अभिप्राय "भला" शब्द के सबसे व्यापक अर्थ से है, जिसमें वे सभी सकारात्मक गुण शामिल हैं जिनसे परमेश्वर का वर्णन किया जा सकता है। निम्नलिखित वचनों पर विचार करें:

प्रभु दयालु और कृपालु हैं, क्रोध करने में धीमे हैं, और प्रेमपूर्ण करुणा से परिपूर्ण हैं। (भजन 103:8)

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र उत्पन्न पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

प्रभु सबके प्रति भला है। उसकी कोमल दया उसके सब कार्यों पर है। (भजन 145:9)

वह हमारे साथ धैर्यवान है, नहीं चाहता कि कोई नाश हो, वरन् यही चाहता है कि सब पाप से पश्चात्ताप करें। (2पतरस 3:9)

प्रभु अपने सब मार्गों में धर्मी और अपने सब कार्यों में कृपालु हैं। (भजन 145:17)

प्रभु कृपालु और धर्मी हैं। हाँ, हमारा परमेश्वर दयालु है। (भजन 116:5)

प्रभु दया और करुणा से पूर्ण हैं। (याकूब 5:11)

हमने जीवित परमेश्वर पर विश्वास रखा है, जो सभी मनुष्यों के उद्धारकर्ता हैं, विशेष रूप से उन पर जो विश्वास करते हैं। (1तीमुथियुस 4:10)

परमेश्वर भला है; हर समय; हर प्रकार से!

आगे मनन के लिए

क्या आपने कभी परमेश्वर की आज्ञा न मानने का निर्णय किया क्योंकि आपको लगा कि उसकी विधियाँ भली नहीं हैं? इसका परिणाम आपके लिए कैसा रहा?

निर्गमन 34:6-7: दयालु और अनुग्रहकारी, और क्रोध करने में धीमे।

भजन 34: चखो और देखो कि प्रभु भला है।

भजन 107: परमेश्वर की भलाई।

मत्ती 5:44-45: वह धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा करता है।

इफिसियों 1:3-14: परमेश्वर से प्राप्त हर आत्मिक आशीष।

1तीमुथियुस 2:1-4: परमेश्वर चाहता है कि सभी लोग उद्धार पाएं।

प्रकाशितवाक्य 21 और 22: एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी; अब मृत्यु, शोक, रोना या पीड़ा नहीं रहेगी।

*** टिप्पणी:** कई बाइबल अनुवादों में, "प्रभु" (सभी अक्षर बड़े—पुराना नियम में) परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम दर्शाता है। परमेश्वर के नाम के सही उच्चारण को लेकर कुछ अनिश्चितता है, आंशिक रूप से इस परंपरा के कारण कि परमेश्वर के नाम का उच्चारण नहीं किया जाना चाहिए। इस अनिश्चितता और परंपरा के कारण, कई अनुवाद परमेश्वर के नाम को "प्रभु" के रूप में अनुवादित करते हैं। कुछ अंग्रेजी अनुवाद परमेश्वर के नाम को अधिक शाब्दिक रूप से "याहवेह" या "यहोवा" के रूप में अनुवादित करते हैं।

अध्याय 8 प्रभु धर्मी और न्यायी हैं

**आपके सिंहासन की नींव धार्मिकता और न्याय है। प्रेमपूर्ण करुणा और सत्य
आपके आगे चलते हैं।**

(भजन 89:14)

**सेनाओं के प्रभु न्याय में उच्च हैं, और परमेश्वर, पवित्र एक, धार्मिकता में पवित्र
किए गए हैं।**

(यशायाह 5:16)

**निश्चय ही, परमेश्वर कभी बुरा नहीं करते, और न ही सर्वशक्तिमान कभी न्याय को
विकृत करते हैं।**

(अय्यूब 34:12)

परमेश्वर धार्मिक और न्यायी हैं। परमेश्वर ने कभी गलत कार्य नहीं किया। परमेश्वर ने कभी किसी का गलत न्याय नहीं किया।

यहेजकेल के समय में भी, कुछ लोगों ने परमेश्वर पर न्यायी न होने का आरोप लगाया:

**“फिर भी तुम कहते हो, ‘प्रभु का मार्ग न्यायसंगत नहीं है।’ अब सुनो, इस्राएल
के घराने; क्या मेरा मार्ग न्यायसंगत नहीं है? क्या वास्तव में तुम्हारे ही मार्ग
न्यायसंगत नहीं हैं?” (यहेजकेल 18:25)**

आज भी ऐसा ही होता है: लोग परमेश्वर पर न्यायी न होने का आरोप लगाते हैं, किंतु वास्तव में परमेश्वर पर आरोप लगाने वाले ही न्यायी नहीं हैं। लोग अपने पाप को उचित ठहराने के लिए परमेश्वर पर गलत मानदंड रखने का आरोप लगाते हैं। वास्तविकता यह है कि वे सच्ची धार्मिकता और न्याय को अस्वीकार करते हैं।

परमेश्वर धार्मिक और न्यायकारी थे जब उन्होंने संसार को जलप्रलय से नष्ट किया (उत्पत्ति 6 से 8)। परमेश्वर धार्मिक और न्यायकारी थे जब उन्होंने सदोम और अमोरा पर गंधक और आग बरसाई (उत्पत्ति 19)। परमेश्वर धार्मिक और न्यायकारी थे जब उन्होंने कनानियों को उनके पापों के कारण नष्ट करने की आज्ञा दी (लैव्यव्यवस्था 18:24-30; व्यवस्थाविवरण 9:4-5, 12:29-31, 18:9-12)। परमेश्वर धार्मिक और न्यायकारी थे जब उन्होंने अपनी ही चुनी हुई प्रजा पर बाबुल की सेना लाकर आक्रमण करने दिया (2इतिहास 36:11-21)। परमेश्वर हर बार जब वे लोगों का उनके पापों के लिए न्याय करते हैं, धार्मिक और न्यायकारी हैं। परमेश्वर यदि हम में से प्रत्येक को हमारे

पापों के लिए दोषी ठहराएँ, तो भी वे धार्मिक और न्यायकारी होंगे; क्योंकि **सब ने पाप किया है** (रोमियों 3:23), और **पाप की मजदूरी मृत्यु है** (रोमियों 6:23)।

फिर भी, परमेश्वर दुष्टों की मृत्यु में प्रसन्नता नहीं रखते (यहेजकेल 18:23)। परमेश्वर केवल धर्मी और न्यायी ही नहीं हैं; वह **एक दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर हैं, जो क्रोध करने में धीमे और प्रेमपूर्ण करुणा से परिपूर्ण हैं** (निर्गमन 34:6-7)। धार्मिकता, न्याय और प्रेम परमेश्वर के सभी महत्वपूर्ण गुण हैं:

वह धार्मिकता और न्याय से प्रेम करते हैं। धरती प्रभु की प्रेमपूर्ण करुणा से परिपूर्ण है। (भजन 33:5)

“परन्तु जो घमण्ड करता है, वह इसी बात में घमण्ड करे कि उसके पास समझ है, और वह मुझे जानता है, कि मैं ही प्रभु हूँ, जो पृथ्वी पर प्रेमपूर्ण करुणा, न्याय, और धार्मिकता करता हूँ, क्योंकि मैं इन्हीं बातों में प्रसन्नता रखता हूँ,” प्रभु की यह वाणी है। (यिर्मयाह 9:24)

परमेश्वर की धार्मिकता, न्याय और प्रेम के कारण ही यीशु हमारे पापों से छुटकारा दिलाने के लिए क्रूस पर गए, ताकि हम दोषी न ठहराए जाएँ। क्रूस पर यीशु का बलिदान हमारे पाप के लिए परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था है, जो परमेश्वर के धार्मिक न्याय को, परमेश्वर के प्रेम द्वारा, हम पर पूर्ण करता है।

पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का निष्कलंक वरदान मसीह यीशु हमारे प्रभु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)

आगे मनन के लिए

मत्ती 5:17-48: परमेश्वर के धार्मिक मानदंड।

रोमियों 5:6-21: यीशु के द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप।

भजन 96:10-13, 98:8-9: परमेश्वर धार्मिकता के साथ न्याय करेगा।

मत्ती 25:31-46: भेड़ें और बकरियाँ।

2पतरस 2:1-22: अधर्मियों पर परमेश्वर का न्याय।

प्रकाशितवाक्य 20:11-15: अंतिम न्याय।

यशायाह 9:6-7: न्याय और धार्मिकता सदा सर्वदा के लिए।

अध्याय 9 प्रभु महान है

क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु महान है, और हमारा प्रभु सब देवताओं से ऊपर है।

(भजन 135:5)

प्रभु महान है, और उसकी अत्यंत स्तुति की जानी चाहिए! उसकी महानता अगम्य है।

(भजन 145:3)

हमने देखा है कि परमेश्वर भला है, और यह भी देखा है कि परमेश्वर धार्मिक और न्यायी है। परन्तु क्या परमेश्वर **महान** है? उसकी भलाई और धार्मिकता तभी हमारे लिए मूल्यवान हैं जब उनके पीछे सामर्थ्य का समर्थन हो। यदि हमें उस पर सच्चा विश्वास करना है तो परमेश्वर का **महान** होना अनिवार्य है। क्या परमेश्वर वास्तव में हमारी रक्षा करने में समर्थ है? क्या परमेश्वर सचमुच हमारी हर आवश्यकता को पूरा करने में समर्थ है? क्या परमेश्वर सचमुच अंत समय में हमें उद्धार देने में समर्थ है? **क्या परमेश्वर वास्तव में महान हैं?**

परमेश्वर की सैन्य शक्ति पर विचार करें:

उस रात, प्रभु के दूत ने अश्शूरियों के छावनी में एक लाख पचासी हज़ार को मार डाला। जब लोग प्रातःकाल उठे, तो देखिए, वे सब मृत शरीर थे। (2राजा 19:35)

“क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने पिता से नहीं माँग सकता, और वह मुझे अभी बारह से भी अधिक सेना के दलों के स्वर्गदूत भेज सकते हैं?” (मत्ती 26:53)

परमेश्वर की सृष्टि पर अधिकार की शक्ति पर विचार करें। अय्यूब को उत्तर देते हुए, परमेश्वर अपनी क्षमताओं की तुलना अय्यूब की क्षमताओं से करते हैं:

“क्या तुम प्लेयाड्स के समूह को बाँध सकते हो, या ओरायन के बंधनों को खोल सकते हो? क्या तुम तारकों के समूहों को उनके मौसम में बाहर ले जा सकते हो? या क्या तुम भालू और उसके बच्चों का मार्गदर्शन कर सकते हो? क्या तुम स्वर्ग के विधानों को जानते हो? क्या तुम पृथ्वी पर उसका प्रभुत्व स्थापित कर सकते हो? “क्या आप अपने स्वर को बादलों तक पहुँचा सकते हैं, कि जल की प्रचुरता आपको ढँक ले? क्या आप बिजली भेज सकते हैं, कि

वे जा सकें? क्या वे आपको उत्तर देते हैं, 'हम यहाँ हैं'? किसने आंतरिक भागों में बुद्धि रखी है? या किसने मन को समझ दी है?" (अय्यूब 38:31-36)

परमेश्वर की संपत्ति पर विचार करें:

"स्वर्ग के नीचे सब कुछ मेरा है।" (अय्यूब 41:11)

परमेश्वर के ज्ञान पर विचार करें:

कोई भी प्राणी उसकी दृष्टि से छिपा नहीं है, परन्तु सब वस्तुएँ उसकी आँखों के सामने नग्न और खुली हुई हैं, जिसके आगे हमें लेखा देना है। (इब्रानियों 4:13)

परमेश्वर की सृजनात्मक सामर्थ्य पर विचार करें:

"हाय प्रभु परमेश्वर! देखिए, आपने अपने महान सामर्थ्य और अपनी फैली हुई भुजा से स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की है। आपके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।" (यिर्मयाह 32:17)

परमेश्वर के अधिकार पर विचार करें:

क्योंकि परम प्रधान प्रभु अद्भुत हैं। वह सारी पृथ्वी के ऊपर महान राजा हैं। (भजन 47:2)

किसी भी अन्य गुण पर विचार करें जिससे महानता को परखा जा सकता है, और मैं समझता हूँ कि आप सहमत होंगे:

महान है प्रभु, और अति स्तुति के योग्य है! उसकी महानता अगम है। (भजन 145:3)

आगे मनन के लिए

उत्पत्ति 1: परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी को वचन से अस्तित्व में लाया।

मत्ती 8:23-27: यीशु ने आंधी को शांत किया।

प्रेषितों के काम 12:1-24: पतरस को जेल से छोड़ा गया; याकूब शहीद किए गए।

अय्यूब 38 और 39: परमेश्वर का अय्यूब को और उत्तर।

यिर्मयाह 32:17-19: कुछ भी कठिन नहीं है।

अध्याय 10 प्रभु मेरा चरवाहा है

प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी वस्तु की घटी न होगी। वह मुझे हरे-भरे चारागाह में लेटाता है। वह मुझे शांत जल के पास ले जाता है। वह मेरे प्राण को पुनःस्थापित करता है। वह अपने नाम के लिए मुझे धार्मिकता के मार्गों में ले चलता है। यद्यपि मैं मृत्यु की छाया की तराई से होकर चलूँ, फिर भी मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि आप मेरे साथ हैं। आपकी लाठी और आपकी छड़ी मुझे सांत्वना देती हैं। आप मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज़ लगाते हैं। आप मेरे सिर पर तेल से अभिषेक करते हैं। मेरा प्याला उमड़ता है। निश्चित रूप से भलाई और प्रेमपूर्ण करुणा मेरे जीवन के सब दिनों तक मेरे पीछे-पीछे चलेगी, और मैं सदैव प्रभु के घर में वास करूँगा।

(भजन 23:1-6)

परमेश्वर अपने लोगों की, अर्थात् उन सभी की जो सच्चाई से उनका अनुसरण करते हैं, देखभाल करते हैं। धर्मग्रंथ में इस बात के अनेक उदाहरण मिलते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों की आवश्यकताओं की किस प्रकार पूर्ति करते हैं। कुछ पदों पर विचार करें:

हे उसके पवित्र जनों, प्रभु का भय मानो, क्योंकि जो उसकी truly fear him उन्हें किसी बात की घटी नहीं होती। जवान सिंह भी घटी और भूखे रहते हैं, परंतु जो प्रभु की खोज करते हैं उन्हें किसी भी भली वस्तु की कमी नहीं होती।

(भजन 34:9-10)

मैं युवा था और अब वृद्ध हो गया हूँ, फिर भी मैंने कभी किसी धर्मी को त्यागा हुआ या उसके बच्चों को रोटी के लिए भीख माँगते नहीं देखा। (भजन 37:25)

क्योंकि प्रभु परमेश्वर सूर्य और ढाल हैं। प्रभु अनुग्रह और महिमा प्रदान करेंगे। वह उन लोगों से कोई भी उत्तम वस्तु नहीं रोकता, जो निष्कलंक होकर चलते हैं। (भजन 84:11)

क्योंकि प्रभु की आँखें धर्मियों पर लगी हुई हैं, और उसके कान उनकी प्रार्थना की ओर खुले हैं। परन्तु प्रभु का मुख बुराई करने वालों के विरुद्ध है।” (1पतरस 3:12)

क्या आपने ध्यान दिया कि ये सभी कथन शर्तों पर आधारित हैं? ये उन लोगों पर लागू होते हैं जो “**उसका भय मानते हैं,**” “**जो प्रभु को खोजते हैं,**” जो “**धर्मी हैं,**” “**जो निष्कलंक होकर चलते हैं।**” मुझे ऐसा कोई धर्मग्रंथ ज्ञात नहीं है जो यह बताए कि

परमेश्वर उन सभी की आवश्यकताओं को पूरी करेंगे जो वास्तव में उसका अनुसरण नहीं करते।

कुछ लोग सही रूप से पूछ सकते हैं: **“वह कोई भी अच्छी वस्तु नहीं रोकता”** में क्या सम्मिलित है? यह मानव स्वभाव है कि सबसे पहले यही सोचे कि यह सांसारिक संपत्ति पर लागू होता है। किन्तु, निम्नलिखित पदों पर विचार करें:

धर्मी के पास जो थोड़ा है, वह अनेक दुष्टों की बहुतायत से उत्तम है। क्योंकि दुष्टों की भुजाएँ टूट जाएंगी, परन्तु प्रभु धर्मी को संभालेगा। (भजन 37:16-17)

प्रभु का भय सहित थोड़ा, उस बड़े धन से उत्तम है जिसमें क्लेश हो। (नीतिवचन 15:16)

धार्मिकता के साथ थोड़ा होना, अन्याय से प्राप्त बड़ी आय से उत्तम है। (नीतिवचन 16:8)

सोने से बुद्धि प्राप्त करना कितना उत्तम है! हाँ, समझ प्राप्त करना चाँदी से अधिक चुना जाना चाहिए। (नीतिवचन 16:16)

शांत वातावरण में सूखी रोटी, कलह से भरे भोज वाले घर से उत्तम है। (नीतिवचन 17:1)

“आज हमें हमारी प्रति दिन की रोटी दे।” (मत्ती 6:11)

परमेश्वर के दृष्टिकोण से, ऐसा प्रतीत होता है कि **“अच्छी बातें”** भौतिक मूल्य से कहीं अधिक आत्मिक मूल्य रखती हैं। परमेश्वर पहले हमारे आत्मिक कल्याण की चिंता करते प्रतीत होते हैं, न कि हमारे शारीरिक आराम या सांसारिक सफलता की।

आगे मनन के लिए

क्या आप भौतिक संपत्ति को आत्मिक संपत्ति से अधिक महत्व देते हैं?

मत्ती 6:25-34: चिंता न करो, पहले उसके राज्य को खोजो।

इफिसियों 1:3-14: मसीह में हर आत्मिक आशीष।

1 तीमुथियुस 6:6-10: संतोष सहित भक्ति।

अध्याय 11

यीशु

उसके वस्त्र पर और उसकी जांघ पर यह नाम लिखा है: "राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु।"

(प्रकाशितवाक्य 19:16)

यह पुस्तक मुख्य रूप से यीशु के अनुयायियों के लिए लिखी गई है। यीशु हमारे विश्वास का केंद्र हैं। अध्याय 2 में हमने कुछ महत्वपूर्ण धर्मग्रंथों को देखा, जो यह स्पष्ट करते हैं कि यीशु कौन हैं—वह **मसीह, परमेश्वर का पुत्र और सबका प्रभु** हैं। वह पृथ्वी पर अपने जीवन से पूर्व **"परमेश्वर के स्वरूप में"** थे, और **"उसी के द्वारा सब कुछ सृजा गया"**।

यह आवश्यक है कि हमारे पास यीशु की स्पष्ट समझ हो, ताकि हम धोखे में न पड़ें। स्वयं यीशु ने हमें चेतावनी दी है:

"सावधान रहो कि कोई तुम्हें भटका न दे। क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ,' और बहुतों को भटका देंगे।" (मत्ती 24:4-5)

आइए हम यीशु के विषय में कुछ और महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार करें। निम्नलिखित सूची का अधिकांश भाग प्रारंभिक विश्वासियों के कुछ "आस्तवाक्य" से लिया गया है।

- **यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, सबके प्रभु हैं।** (अध्याय 2; मत्ती 16:13-17; मरकुस 1:1, 8:27-30; लूका 1:35; यूहन्ना 11:25-27, 20:26-31; 1यूहन्ना 5:5, प्रेषितों के काम 10:36; रोमियों 10:8-13; 1कुरिन्थियों 12:3; प्रकाशितवाक्य 17:14, 19:11-16)
- **सब वस्तुएँ उसी के द्वारा बनाई गईं।** (यूहन्ना 1:3, 1:10; 1कुरिन्थियों 8:6; कुलुस्सियों 1:15-16; इब्रानियों 1:1-2)
- **वह पवित्र आत्मा से गर्भित हुए।** (मत्ती 1:18-25; लूका 1:30-35; फिलिप्पियों 2:5-8)
- **वह कुमारी मरियम से उत्पन्न हुआ।** (यशायाह 7:14; मत्ती 1:18-25; लूका 1:30-35, 2:1-7)
- **वह ने अनेक चमत्कार किए।** (सम्पूर्ण मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में)
- **वह पौन्तियूस पीलातुस के अधीन दुःख भोगा।** (मत्ती 27:11-31; मरकुस 15:1-20; लूका 23:1-25; यूहन्ना 18:28 से 19:16 तक)

- वह क्रूस पर चढ़ाया गया, मरा, और गाड़ा गया। (अध्याय 4; मत्ती 27:32-61; मरकुस 15:21-47; लूका 23:26-56; यूहन्ना 19:17-42; 1कुरिन्थियों 15:3-4)
- वह मृतकों में से तीसरे दिन जी उठा। (अध्याय 5; मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-14; लूका 24:1-12; यूहन्ना 20:1-23; 1कुरिन्थियों 15:3-4)
- वह स्वर्ग में आरोहित हुआ। (मरकुस 16:19; लूका 24:50-53; प्रेषितों के काम 1:1-11)
- वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर महिमामंडित किया गया है। (मरकुस 16:19; लूका 22:69; प्रेषितों के काम 2:33, 5:31, 7:55-56; रोमियों 8:34; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3, 8:1, 10:12, 12:2)
- वह महिमा के साथ फिर आएगा। (मत्ती 16:27; 24:30, 25:31, 26:64; मरकुस 8:38, 13:26, 14:62; लूका 9:26, 21:27; प्रेषितों के काम 1:11; 2थिस्सलुनीकियों 2:1-8; प्रकाशितवाक्य 3:11, 22:7, 22:12, 22:20)
- वह जीवितों और मरे हुएों का न्याय करेगा। (अध्याय 14; मत्ती 25:31-46; यूहन्ना 5:21-30; प्रेषितों के काम 17:29-31; रोमियों 2:16; 2तीमुथियुस 4:1-2; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)
- उसका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा। (यशायाह 9:6-7; दानिय्येल 7:13-14; लूका 1:31-33; इब्रानियों 1:8; प्रकाशितवाक्य 5:13, 11:15, 22:3-5)

हमें विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि जब यीशु फिर से आएंगे, तो यह सबके लिए स्पष्ट होगा। जैसा कि स्वयं यीशु ने स्पष्ट किया है:

“इसलिए यदि वे तुमसे कहें, ‘देखो, वह जंगल में है,’ तो बाहर मत जाना; या ‘देखो, वह भीतरी कमरों में है,’ तो विश्वास मत करना। क्योंकि जैसे पूरब में बिजली चमकती है और पश्चिम तक दिखाई देती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र का आना होगा।” (मत्ती 24:26-27)

आगे मनन के लिए

प्रत्येक बिंदु को और भली-भांति समझने हेतु, तथा यह सत्यापित करने के लिए कि क्या धर्मग्रंथ वास्तव में उपरोक्त बिंदुओं का समर्थन करता है या नहीं, संदर्भित शास्त्र वचनों को देखें।

यीशु के जीवन के एक या एक से अधिक वर्णन पढ़ें (बाइबल में: मत्ती, मरकुस, लूका या यूहन्ना)।

अध्याय 12 आपका विरोधी शैतान

सावधान और आत्म-संयमी रहें। जागरूक रहें। आपका विरोधी, शैतान, गर्जने वाले सिंह की तरह घूमता है, यह खोजता है कि वह किसे निगल जाए। अपने विश्वास में दृढ़ रहकर उसका सामना करें, यह जानते हुए कि संसार में आपके भाई भी ऐसे ही कष्ट सह रहे हैं।

(1पतरस 5:8-9)

परमेश्वर का पूरा हथियार धारण करो, ताकि तुम शैतान की चालों का सामना कर सको। क्योंकि हमारी मल्लयुद्ध शरीर और लहू से नहीं है, परंतु प्रधानताओं से, अधिकारों से, इस युग के अंधकार के संसार के शासकों से, और स्वर्गीय स्थानों की दुष्ट आत्मिक शक्तियों से है।

(इफिसियों 6:11-12)

धर्मग्रंथ स्पष्ट रूप से बताता है कि एक आत्मिक क्षेत्र अस्तित्व में है, जिसमें अच्छे और बुरे आत्मिक प्राणी रहते हैं। शैतान या शैतान को बुरे आत्मिक प्राणियों का नेता बताया गया है। आइए आगे विचार करें कि धर्मग्रंथ शैतान के बारे में क्या कहता है।

शैतान संभवतः एक पतित “चेरुब” (एक प्रकार का स्वर्गदूत) है, जिसे परमेश्वर ने रचा था। यह यहेजकेल 28:12-19 से समझा जाता है, जहाँ परमेश्वर “**तायर के राजा**” के विषय में कहते हैं कि वह कभी “**परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर**” और “**एदेन, परमेश्वर की वाटिका**” में था। आगे परमेश्वर कहते हैं:

“तेरा हृदय तेरे सौंदर्य के कारण ऊँचा हो गया। तूने अपनी भव्यता के कारण अपनी बुद्धि को भ्रष्ट कर लिया। मैंने तुझे पृथ्वी पर गिरा दिया। मैंने तुझे राजाओं के सामने रख दिया, ताकि वे तुझे देखें।” (यहेजकेल 28:17)

शैतान परमेश्वर से घृणा करता है, और वह परमेश्वर की प्रजा से भी घृणा करता है। चूँकि वह सीधे परमेश्वर को हानि नहीं पहुँचा सकता (क्योंकि परमेश्वर महान हैं, और शैतान नहीं), इसलिए वह परमेश्वर की प्रजा को नष्ट करने का प्रयास करता है। यह बात ऐसे पदों से समझी जा सकती है:

अजगर स्त्री से क्रोधित हुआ, और गया कि बाकी सन्तानों से, जो परमेश्वर की आज्ञाएँ मानते हैं और यीशु की गवाही को थामे रहते हैं, युद्ध करे। (प्रकाशितवाक्य 12:17)

शैतान की परमेश्वर की प्रजा को हानि पहुँचाने की क्षमता, कम से कम कुछ अवसरों पर, स्वयं परमेश्वर द्वारा सीमित की जाती है, जैसा कि अय्यूब की पुस्तक में चित्रित है:

तब शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, और कहा, “क्या अय्यूब बिना कारण परमेश्वर का भय मानता है? क्या तू ने उसके चारों ओर, उसके घर के चारों ओर, और जो कुछ उसके पास है, उसके चारों ओर बाड़ नहीं बना रखी है?”

(अय्यूब 1:9-10)

इफिसियों 6:10-18 यह दर्शाता है कि शैतान पर विजय पाने की कुछ जिम्मेदारी परमेश्वर की प्रजा पर भी है:

अपने ऊपर परमेश्वर का पूरा अस्त्र पहन लो, ताकि तुम शैतान की चालों के सामने दृढ़ रह सको। *(इफिसियों 6:11)*

परमेश्वर आत्मिक अस्त्र प्रदान करते हैं, परंतु उसे पहनना और उसमें दृढ़ रहना हमारा उत्तरदायित्व है। यहाँ जो चित्रण प्रस्तुत किया गया है, वह है—दृढ़ता से खड़े होकर आक्रमण का सामना करना, न कि आक्रमण करना। (अध्याय 53 “दृढ़ रहना” में इफिसियों 6:10-18 का अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है।)

यदि आप याकूब 4:17 की दोहरी शर्तों को पूरा करते हैं, तो शैतान आपसे **“भाग जाएगा”**:

इसलिए परमेश्वर के अधीन रहो। शैतान का सामना करो, और वह तुमसे भाग जाएगा। *(याकूब 4:7)*

परमेश्वर के अधीन हुए बिना केवल शैतान का विरोध करना संभवतः उसे भागने के लिए विवश नहीं करेगा।

शैतान का स्वभाव मुख्यतः हत्यारा और झूठा है, जैसा कि यीशु ने बताया है:

तुम अपने पिता शैतान के हो, और अपने पिता की इच्छाएँ पूरी करना चाहते हो। वह आरंभ से ही हत्या करने वाला है, और सत्य में स्थिर नहीं रहता, क्योंकि उसमें सत्य नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो अपने ही स्वभाव से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, और झूठ का पिता है।” *(यूहन्ना 8:44)*

अनेक धर्मग्रंथ बुरी आत्माओं या “दुष्टात्माओं” का भी उल्लेख करते हैं। बहुतों का विश्वास है कि ये बुरी आत्माएँ भी गिरे हुए स्वर्गदूत हैं, किंतु उनकी शक्ति शैतान से कम है। धर्मग्रंथ दुष्टात्माओं के अस्तित्व को लेकर स्पष्ट है, परंतु उनकी उत्पत्ति, उनका स्वभाव, और यह कि वे मनुष्यों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं—इन बातों के विषय में वह उतना स्पष्ट नहीं है। (प्रकाशितवाक्य 12:4 को प्रायः इस विश्वास के समर्थन के

लिए उद्धृत किया जाता है कि स्वर्गदूतों का एक तिहाई भाग शैतान के साथ परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही हो गया, और वे पृथ्वी पर दुष्टात्माएँ बन गए।)

संपूर्ण सुसमाचारों में देखा जाता है कि दुष्टात्माएँ मनुष्यों में वास करती हैं और ऐसे लोगों के जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न करती हैं। यीशु और उनके शिष्यों को दुष्टात्माओं पर अधिकार प्राप्त था और वे उन्हें लोगों से बाहर निकालते थे (देखें धर्मग्रंथ सन्दर्भ “आगे और मनन के लिए”)।

उन संसार के भागों में जहाँ यीशु के अनुयायी अधिक हैं, **अनुभव** बताता है कि दुष्टात्माएँ बहुत गुप्त रूप से कार्य करती हैं, ताकि यीशु के अनुयायियों से प्रत्यक्ष टकराव से बच सकें, जिनके पास उन पर अधिकार है। संसार के अन्य भागों में, जहाँ यीशु के अनुयायी कम हैं, वहाँ उनकी सक्रियताएँ सामान्यतः अधिक खुली दिखती हैं।

हर परिस्थिति में, धोखा और झूठ ही प्रमुख तरीके हैं जिनके द्वारा दुष्टात्माएँ लोगों को प्रभावित करती हैं, जैसा स्वयं शैतान करता है। दुष्टात्माओं से व्यवहार करते समय, यीशु के अनुयायियों को उन विभिन्न झूठों को न मानने में सावधान रहना चाहिए जिन्हें दुष्टात्माएँ बढ़ावा देती हैं, क्योंकि वे कुशल भ्रमित करने वाले हैं, और धोखा ही उनके लोगों पर अधिकार का मुख्य स्रोत है। सत्य का सामान्य प्रचार उनके विरुद्ध एक प्रभावशाली हथियार है: उनके झूठ का पर्दाफाश करें; यीशु पर भरोसा रखें; परमेश्वर के अधीन रहें और उनका विरोध करें (याकूब 4:7)।

जिन लोगों को स्पष्ट रूप से दुष्टात्माओं से परेशान देखा जाता है, उन्हें क्षमा के विषय पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि दूसरों के पाप क्षमा न करने से दुष्टात्माओं को पहुँच मिलती है, जैसा कि मत्ती 18:21-35 में संकेत है (अध्याय 22 “क्षमा करें...” देखिए)। इसी प्रकार, यदि क्रोध unresolved रहता है तो वह शैतान को लाभ पहुंचा सकता है, जैसा कि इफिसियों 4:26-27 में उल्लेखित है।

यदि किसी व्यक्ति के जीवन में सही प्रकार से सत्य का प्रयोग किए बिना किसी दुष्टात्मा को बाहर निकाला जाता है, तो परिणाम और भी बुरा हो सकता है, जैसा कि मत्ती 12:43-45 और लूका 11:24-26 में दर्शाया गया है।

यीशु के अनुयायी प्रायः शैतान और दुष्टात्माओं के संबंध में दो में से एक भूल करते हैं:

1. उन्हें अनदेखा कर देना या उनके अस्तित्व से इनकार करना।
2. उन्हें अत्यधिक शक्ति और महत्व दे देना।

यद्यपि यीशु के अनुयायियों को शैतान और दुष्टात्माओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए, किंतु उनके प्रति भयभीत होने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि हमें यीशु के द्वारा उन पर विजय प्राप्त है। जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है:

क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न तो मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य की बातें, न शक्तियाँ, न ऊँचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें उस परमेश्वर के प्रेम से, जो मसीह यीशु हमारे प्रभु में है, अलग कर सकेगी। (रोमियों 8:38-39)

आगे मनन के लिए

उत्पत्ति 3:1-15: अदन की वाटिका में प्रलोभन। “सर्प” को सामान्यतः शैतान के रूप में समझा जाता है।

मत्ती 4:1-11: शैतान यीशु को प्रलोभित करता है; यीशु प्रलोभन का सामना करने के लिए धर्मग्रंथ का उपयोग करते हैं। (देखें लूका 4:1-13)।

इफिसियों 6:10-18: परमेश्वर का सम्पूर्ण शस्त्र पहन लो।

यशायाह 14:3-20: “बाबुल के राजा” के विषय में भविष्यवाणी, जिसे बहुत लोग शैतान के लिए संदर्भित मानते हैं।

यहेजकेल 28:12-19: “सूर के राजा” के विषय में कुछ इतिहास, जिसे बहुत लोग शैतान के लिए संदर्भित मानते हैं।

अय्यूब 1:1 से 2:10: अय्यूब की पीड़ा में शैतान की भूमिका।

प्रकाशितवाक्य 20:7-10: शैतान का अंत।

दुष्टात्माओं का निकाला जाना: मत्ती 8:16, 8:28-34, 9:32-34, 12:22-30, 15:22-28, 17:14-21; मरकुस 1:23-28, 1:32-34, 1:39, 5:1-20, 6:13, 7:24-30, 9:14-29, 9:38-40; लूका 4:33-37, 6:17-19, 7:21, 8:1-3, 8:26-39, 9:37-42, 11:14-26; प्रेषितों के काम 5:16, 8:7-8, 16:16-19, 19:11-17।

पुस्तक संदर्भ: “बंधन-विनाशक” नील एंडरसन द्वारा।

पुस्तक संदर्भ: “War on the Saints” — जेसी पेन-ल्यूस और इवान रॉबर्ट्स (1912); यह असंक्षिप्त संस्करण इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध है। यह पुस्तक, जो कुछ हद तक विवादास्पद रही है, शैतान और दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डालती है।

अध्याय 13

मरे हुआँ का पुनरुत्थान

“उनमें से बहुत से लोग जो पृथ्वी की मिट्टी में सो रहे हैं, जाग उठेंगे — कुछ अनन्त जीवन के लिए, और कुछ लज्जा तथा अनन्त तिरस्कार के लिए। जो लोग बुद्धिमान हैं, वे आकाश के विस्तार की ज्योति के समान चमकेंगे। जो बहुतों को धार्मिकता की ओर मोड़ते हैं, वे सदैव और सदा के लिए तारों के समान चमकेंगे।”

(दानियेल 12:2-3)

जब वे लोगों से बातें कर रहे थे, तब याजक, मन्दिर के कप्तान और सद्दूकी उनके पास आए, क्योंकि वे लोगों को सिखाते और यीशु में मरे हुआँ के पुनरुत्थान का प्रचार करते थे; इस कारण वे खिन्न थे।

(प्रेषितों के काम 4:1-2)

“मुझे परमेश्वर पर आशा है, जिसे ये भी अपनी ही आशा मानते हैं, कि मरे हुआँ का पुनरुत्थान होगा, चाहे वे धर्मी हों या अधर्मी।”

(प्रेषितों के काम 24:15)

यदि मैंने मानव स्वार्थवश इफिसुस में पशुओं से संग्राम किया, तो मुझे क्या लाभ? यदि मरे हुए नहीं उठते, तो “आओ, खाएं-पीएं, क्योंकि कल हम मर जाएंगे।”

(1कुरिन्थियों 15:32)

क्या मृत्यु के बाद जीवन है? उपरोक्त पद स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' है: **मरे हुआँ का पुनरुत्थान अवश्य होगा, चाहे वे धर्मी हों या अधर्मी।**

यदि मृत्यु के बाद जीवन नहीं है, तो वास्तव में कुछ भी अधिक महत्वपूर्ण नहीं है: **“आओ, खाएं-पीएं, क्योंकि कल हम मर जाएंगे।”** (1कुरिन्थियों 15:32)। यह समझ कि मृत्यु के बाद जीवन है, हमारे जीवन को अर्थ देती है। पृथ्वी पर हमारे निर्णय और कर्म अच्छे या बुरे लिए शाश्वत परिणाम ला सकते हैं।

यह आश्चर्यजनक है कि यीशु के पृथ्वी पर रहने के समय कई धार्मिक अगुआ (सद्दूकी) मृत्यु के बाद जीवन पर विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने इस विषय में यीशु में दोष खोजने का प्रयास किया, और यह तर्क किया कि विवाह संबंधी समस्याएँ मृत्यु के बाद जीवन के विरुद्ध उनके दृष्टिकोण को सिद्ध करती हैं। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया:

“क्या यह इस कारण नहीं कि तुम भूल में हो, क्योंकि तुम धर्मग्रंथों और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते? क्योंकि जब वे मरे हुआओं में से पुनरुत्थान पाएंगे, तब न तो विवाह करेंगे, न विवाह में दिए जाएंगे, परन्तु स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होंगे। परन्तु मरे हुआओं के विषय में, कि वे पुनरुत्थान पाएंगे, क्या तुमने मूसा की पुस्तक में झाड़ी के विषय में नहीं पढ़ा, जहाँ परमेश्वर ने उससे कहा, ‘मैं अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ’? वह मरे हुआओं का परमेश्वर नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है। इसलिए तुम घोर भूल में हो।” (मरकुस 12:24-27)

हमें 1 कुरिन्थियों से और भी निर्देश मिलता है:

यदि मरे हुआओं का पुनरुत्थान नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार भी व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। हाँ, हम परमेश्वर के झूठे साक्षी भी ठहरे, क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उसने मसीह को जिलाया, जिसे उसने नहीं जिलाया—यदि वास्तव में मरे हुआओं का पुनरुत्थान नहीं होता। यदि मरे हुए नहीं उठाए जाते, तो मसीह भी नहीं उठाया गया। यदि मसीह मरे हुआओं में से नहीं जी उठे, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; आप अब भी अपने पाप में हैं। तब वे भी जो मसीह में सो गए हैं, नाश हो गए। यदि हमने केवल इस जीवन में मसीह में आशा रखी है, तो हम सभी मनुष्यों में सबसे अधिक दया के पात्र हैं। पर अब मसीह मरे हुआओं में से पुनरुत्थान किया गया है। (1 कुरिन्थियों 15:13-20)

आगे मनन के लिए

मरकुस 12:18-27: सदूकी यीशु से प्रश्न करते हैं। (यह भी देखें: मत्ती 22:23-33 और लूका 20:27-38)

यूहन्ना 5:28-29: यीशु द्वारा मरे हुआओं का पुनरुत्थान।

यूहन्ना 11:20-26: “मैं पुनरुत्थान हूँ...”

1 कुरिन्थियों 15:12-58: पौलुस द्वारा मरे हुआओं के पुनरुत्थान पर शिक्षा।

फिलिप्पियों 3:10-11: मरे हुआओं में से पुनरुत्थान प्राप्त करना।

प्रकाशितवाक्य 20:4-6: पहला पुनरुत्थान।

अध्याय 14 न्याय का दिन

तब राजा अपने दाहिने हाथ वालों से कहेगा, 'आओ, मेरे पिता के धन्य लोगो, उस राज्य के अधिकारी बनो, जो तुम्हारे लिए संसार की स्थापना से तैयार किया गया है।'

(मत्ती 25:34)

फिर वह बाएँ हाथ के लोगों से भी कहेगा, 'मेरे पास से दूर हो जाओ, हे शापित लोगो, उस अनंत अग्नि में जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है।'

(मत्ती 25:41)

मैं तुमसे कहता हूँ कि जो भी मनुष्य निष्क्रिय वचन बोलेंगे, वे न्याय के दिन उसका हिसाब देंगे।

(मत्ती 12:36)

यदि किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न पाया गया, तो उसे आग की झील में डाल दिया गया।

(प्रकाशितवाक्य 20:15)

जो विजयी होगा, मैं उसे ये सब बातें दूँगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा। परंतु कायरों, अविश्वासियों, पापियों, घृणितों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में है, जो आग और गंधक से जलती है; यही दूसरी मृत्यु है।

(प्रकाशितवाक्य 21:7-8)

धर्मग्रंथ में हम परमेश्वर के धर्मी न्याय की विषयवस्तु बार-बार पाते हैं। कभी-कभी उसका न्याय इस जीवन में स्पष्ट रूप में प्रकट होता है, जैसा कि नूह और बाढ़ के समय (उत्पत्ति 6-9) देखा गया। अक्सर उसका न्याय इस जीवन के बाद के लिए सुरक्षित होता है, जैसा कि धनवान व्यक्ति और लाज़र (लूका 16:19-31) के प्रसंग में देखा गया। हम सभी परमेश्वर के कोप के पात्र हैं, क्योंकि हम सभी ने पाप किया है (अध्याय 3 के अनुसार)। एक दिन आएगा जब परमेश्वर **“हर एक को उसके कर्मों के अनुसार प्रत्युत्तर देगा”** (रोमियों 2:6)।

परंतु यह अत्यंत शुभ समाचार है! परमेश्वर ने एक क्षमादान योजना स्थापित की है। यीशु में विश्वास के द्वारा, और क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा, आपके पाप क्षमा हो सकते हैं, जिससे न्याय के दिन आपको दोषी न ठहराया जाए:

“परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र जन्मा हुआ पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार का न्याय करे, परन्तु इसलिए कि संसार उसके द्वारा मोक्ष प्राप्त करे। जो उसमें विश्वास करता है, उस पर न्याय नहीं होता। जो विश्वास नहीं करता, वह पहले ही दण्डित हो चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र उत्पन्न पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।” (यूहन्ना 3:16-18)

परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध स्थापित करने के लिए न्याय के दिन की प्रतीक्षा न करें। तब बहुत देर हो जाएगी:

देखो, अब स्वीकार करने का समय है। देखो, अब मोक्ष का दिन है। (2कुरिन्थियों 6:2)

यदि आप अभी तक यीशु के अनुयायी नहीं हैं, या अपनी मोक्ष के विषय में सुनिश्चित नहीं हैं, तो अध्याय 16 **“मोक्ष प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?”** देखें। आपको दंड से बचने के लिए यीशु में विश्वास करना आवश्यक है:

“जो उसमें विश्वास करता है, उस पर न्याय नहीं होता। जो विश्वास नहीं करता, वह पहले ही दण्डित हो चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र उत्पन्न पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।” (यूहन्ना 3:18)

“और मोक्ष किसी और में नहीं है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में ऐसा कोई और नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हमें मोक्ष प्राप्त करना आवश्यक है!” (प्रेषितों के काम 4:12)

आगे मनन के लिए

दानिय्येल 12:2: अनन्त जीवन या अनन्त अपमान।

मत्ती 25:31-46: भेड़ें और बकरियाँ।

लूका 16:19-31: धनी मनुष्य और लाज़र।

यूहन्ना 5:21-30: जीवन या न्याय का पुनरुत्थान।

रोमियों 2:5-8: क्रोध का दिन।

1तीमुथियुस 2:1-4: परमेश्वर चाहता है कि सब लोग मोक्ष प्राप्त करें।

2पतरस 2:4-9: यदि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को भी न छोड़ा...

2पतरस 3:1-13: प्रभु का दिन आएगा।

1यूहन्ना 4:17-18: न्याय के दिन निर्भीकता।

प्रकाशितवाक्य 20:11-15: अंतिम न्याय।

अध्याय 15

स्वर्ग में आपकी प्रतिफल

**और जो कुछ भी आप करें, उसे पूरे मन से प्रभु के लिए करें, न कि मनुष्यों के लिए; यह जानते हुए कि आपको प्रभु से ही विरासत का प्रतिफल मिलेगा।
क्योंकि आप प्रभु मसीह की सेवा करते हैं।**

(कुलुस्सियों 3:23-24)

धन्य हैं आप जब लोग आपको दोष दें, सताएँ, और मेरे कारण आप पर झूठा दोष लगाएँ। आनन्दित होना और अत्यन्त प्रसन्न रहना, क्योंकि स्वर्ग में आपका प्रतिफल महान है। इसी प्रकार उन्होंने आप से पहले भविष्यद्वक्ताओं को भी सताया था।

(मत्ती 5:11-12)

क्या आप यीशु का अनुसरण करने के लिए इस जीवन में बड़ा प्रतिफल पाने की उम्मीद करते हैं? या, क्या आप उम्मीद करते हैं कि प्रतिफल अगले जीवन में मिलेगा? क्या आप उम्मीद करते हैं कि इस जीवन में प्रतिफल, इस जीवन में आने वाली लागत से अधिक होगा?

बहुत से लोग यीशु का अनुसरण करना तब छोड़ देते हैं जब इस जीवन में प्राप्त होने वाला तत्काल प्रतिफल उसकी अपेक्षाकृत अधिक लागत के सामने कम पड़ जाता है। जैसा कि यीशु ने कहा:

“जब वचन के कारण कोई कष्ट या उत्पीड़न आता है, तो वे तुरंत ठोकर खा जाते हैं।” (मरकुस 4:17)

वे लोग जो **तुरंत ठोकर खाते हैं**, वे उस भविष्य के प्रतिफल को समझ या उसका मूल्यांकन नहीं कर पाते, जो उन लोगों को मिलेगा जो विश्वासपूर्वक यीशु का अनुसरण करते हैं।

निश्चित रूप से, यीशु का अनुसरण करने के कारण इस जीवन में भी लाभ हैं; परंतु नया नियम मुख्यतः भविष्य के प्रतिफल पर ही बल देता है:

यदि हमने केवल इसी जीवन में मसीह में आशा रखी है, तो हम सभी मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय हैं। (1कुरिन्थियों 15:19)

विश्वास द्वारा जीने का एक भाग यह समझना है कि परमेश्वर उनका प्रतिफल देता है जो उसका अनुसरण करते हैं; और यह समझना कि प्रतिफल मुख्यतः भविष्य में है, न कि इस वर्तमान युग में। विश्वास के लोगों के विषय में इब्रानियों के लेखक लिखते हैं:

बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो परमेश्वर के पास आता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है, और वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों 11:6)

ये सभी विश्वास में मरे, उन्होंने प्रतिज्ञाएँ प्राप्त नहीं कीं, परंतु उन्हें दूर से देखकर और स्वीकार कर लिया, और मान लिया कि वे पृथ्वी पर परदेशी और यात्री हैं। (इब्रानियों 11:13)

विश्वास से मूसा ने, जब वह बड़ा हुआ, फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इनकार कर दिया, और कुछ समय के लिए पाप के सुख भोगने की अपेक्षा परमेश्वर की प्रजा के साथ दुःख उठाना अधिक पसंद किया; क्योंकि उसने मसीह के अपमान को मिस्र के खजानों से बड़ी दौलत समझा। क्योंकि उसकी दृष्टि प्रतिफल पर थी। (इब्रानियों 11:24-26)

आपके विषय में क्या? क्या आप भविष्य के प्रतिफल की आशा कर रहे हैं, या आप मुख्य रूप से इसी जीवन में प्रतिफल प्राप्त करना चाहते हैं?

आगे मनन के लिए

मत्ती 16:27: यीशु से भविष्य में प्रतिफल की प्राप्ति।

लूका 6:35: महान प्रतिफल।

1कुरिन्थियों 3:6-15: प्रतिफल के लिए निर्माण करना।

2कुरिन्थियों 5:1-10: स्वर्ग में शाश्वत घर।

इफिसियों 6:8: प्रभु से पुनः प्राप्त करना।

1तीमुथियुस 6:3-19: सांसारिक संपत्ति को उचित दृष्टिकोण में रखना।

1पतरस 1:3-9: आपके लिए स्वर्ग में सुरक्षित विरासत।

1पतरस 5:10: वर्तमान दुःख, शाश्वत महिमा।

भजन 73: वर्तमान असमानता; भविष्य की महिमा।

प्रकाशितवाक्य 22:12: प्रभु प्रत्येक को प्रतिफल देंगे।

प्रकाशितवाक्य 21:1-7: एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी।

प्रकाशितवाक्य 22:3-5: वे सदा-सर्वदा राज्य करेंगे।

भाग 2: वे बातें जो हम करते हैं

यह अति आवश्यक है कि हम स्पष्ट रूप से उन बातों में भेद करें जिन्हें हमें स्वयं करना है (उस सामर्थ्य के साथ जो परमेश्वर प्रदान करता है), और उन बातों में जिन्हें परमेश्वर स्वयं करता है, या पहले से कर चुका है। यदि हम ऐसा भेद नहीं करेंगे, तो हम अपनी ही सामर्थ्य में वे कार्य करने का प्रयास कर सकते हैं जिन्हें परमेश्वर पहले ही कर चुका है, और उस विजय में चलने में असफल हो सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से ही प्रदान की है।

इसलिए, भाग 2 उन बातों पर केन्द्रित है जिनकी मुख्य जिम्मेदारी हमारी है। अगला खंड, भाग 3, उन बातों पर केन्द्रित होगा जिनकी मुख्य जिम्मेदारी परमेश्वर की है।

निम्नलिखित आयतें एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु प्रदान करती हैं:

परन्तु वचन के करनेवाले बनो, केवल सुननेवाले ही नहीं, अपने आप को धोखा देनेवाले न बनो। (याकूब 1:22)

इसलिए, जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उन पर अमल करता है, मैं उसका उन बुद्धिमान पुरुषों से तुलना करूंगा जिन्होंने अपना घर चट्टान पर बनाया। वर्षा हुई, बाढ़ आई, और हवाएँ चलीं और उस घर पर प्रहार किया। परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर थी। और जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उन पर अमल नहीं करता, वह उस मूर्ख पुरुष के समान होगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया। वर्षा हुई, बाढ़ आई, और हवाएँ चलीं और उस घर पर प्रहार किया। और वह गिर गया—और उसका पतन बहुत बड़ा था।” (मत्ती 7:24-27)

अध्याय 16

“मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?”

उसने दीपक मंगवाए, अंदर कूदा, कांपता हुआ पौलुस और सिलास के सामने गिर पड़ा, उन्हें बाहर ले जाकर पूछा, “हे सज्जनों, मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?” उन्होंने कहा, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना बच जाएगा।” फिर उन्होंने प्रभु का वचन उसके और उसके घर के सभी लोगों को सुनाया। उसने उसी घड़ी उनके घाव धोए, और तत्काल, वही और उसका सारा घराना बपतिस्मा लिया।

(प्रेषितों के काम 16:29-33)

संभवतः इससे अधिक महत्वपूर्ण कोई प्रश्न नहीं है:

“मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?”

कई लोग जीवन की व्यस्तताओं में इतने उलझे रहते हैं कि इस प्रश्न पर विचार नहीं करते। कई लोग जीवन में अनजान बने रहते हैं और इस प्रश्न से बचते हैं। कई लोग यह सोचने को तैयार नहीं होते कि वे खोए हुए हो सकते हैं।

“मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?”

“प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू मोक्ष पाएगा...” (प्रेषितों के काम 16:30-31)

क्या केवल “विश्वास” करना ही पर्याप्त है? “विश्वास करना” का क्या अर्थ है?

तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर एक है। तुम अच्छा करते हो। दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती हैं—और कांपती हैं। (याकूब 2:19)

दुष्टात्माएँ भी जानती हैं कि यीशु मसीह हैं (लूका 4:41); अतः मोक्ष देने वाला विश्वास केवल सत्य की बौद्धिक सहमति ही नहीं है, उससे कहीं अधिक है।

जब पौलुस और साथी ने “उसको प्रभु का वचन सुनाया”, तब पौलुस ने उस कारापाल को “विश्वास” और मोक्ष को कैसे स्पष्ट किया? (प्रेषितों के काम 16:32) प्रेषितों के काम की पुस्तक में, पौलुस की यात्रा सेवकाई के अंतिम समय में, पौलुस अपने प्रचारित सन्देश का सारांश प्रस्तुत करता है:

“मैंने लाभकारी बातों में से कोई बात बताने या तुम्हें सिखाने से न तो कतराया, न ही परहेज किया, बल्कि सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर, यहूदियों और यूनानियों दोनों के सामने परमेश्वर की ओर पश्चाताप और हमारे प्रभु यीशु पर विश्वास की गवाही दी।” (प्रेषितों के काम 20:20-21)

इससे हम समझते हैं कि उद्धार पाने वाला विश्वास इन बातों को सम्मिलित करता है:

1. परमेश्वर की ओर पश्चाताप।

2. हमारे प्रभु यीशु में विश्वास।

पश्चाताप का अर्थ है सोच में परिवर्तन; अविश्वास से विश्वास की ओर परिवर्तन; अपने जीवन की दिशा में परिवर्तन। यह स्वीकार करें कि आपने पाप किया है, और पापों की क्षमा तथा पाप के अधिकार से मुक्ति के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ें। पापी इच्छाओं के पीछे चलते रहने के बजाय परमेश्वर का अनुसरण करने का चुनाव करें। पश्चाताप का आह्वान सभी के लिए है:

“अतः परमेश्वर ने अनजाने समयों को अनदेखा किया। पर अब वह आज्ञा देता है कि सब लोग सर्वत्र पश्चाताप करें।” (प्रेषितों के काम 17:30)

यीशु में विश्वास का मतलब है यह मानना कि यीशु प्रतिज्ञात मसीह (मसीह), केवल परमेश्वर का पुत्र और सबका प्रभु है; कि उसने आपके पापों और समस्त संसार के पापों के लिए अपनी जान दी (1यूहन्ना 2:2); कि वह मृतकों में से जीवित हुआ; और वह हमारे लिए वही करेगा जो धर्मग्रंथ कहता है यदि हम उसका अनुसरण करें।

यीशु में विश्वास रखना लगभग उसी अर्थ में है जैसे *यीशु में विश्वास करना*। “*विश्वास*” और “*भरोसा*” ये दोनों शब्द नया नियम की मूल यूनानी भाषा में समानार्थी हैं। दोनों में केवल मानसिक ज्ञान नहीं, बल्कि दृढ़ निश्चय और विश्वास भी शामिल है। यीशु पर विश्वास करना हमें यीशु की शिक्षाओं का पालन करने के लिए अग्रसर करता है।

भूमिका में हमने देखा कि यीशु हमें मोक्ष के लिए अपने पास आमंत्रित करते हैं। अतः, मोक्ष (और पश्चाताप तथा विश्वास) में यीशु के पास आना, यीशु पर विश्वास करना, और यीशु का अनुसरण करना शामिल है।

जो लोग सच्चे मन से परमेश्वर की ओर पश्चाताप करते हैं और यीशु पर अपना विश्वास रखते हैं, वे आत्मिक रूप से 'नया जन्म' पाते हैं, और परमेश्वर की पवित्र आत्मा उन्हें नया जीवन और उद्देश्य प्रदान करती है (यूहन्ना 3:1-21)।

कुछ लोग प्रतीत होते हैं कि वे मोक्ष, विश्वास और पश्चाताप की ओर शीघ्रता से, मुख्य रूप से एक ही घटना के रूप में, आ जाते हैं। कुछ अन्य लोगों के लिए, यह प्रक्रिया समय के साथ कई छोटे-छोटे कदमों के रूप में घटती प्रतीत होती है।

परमेश्वर के पास आने के लिए यह सोचकर प्रतीक्षा न करें कि पहले आपको 'पर्याप्त अच्छा' बनना है; ऐसा कभी नहीं होगा! जब आप परमेश्वर के पास पश्चाताप में लौटते हैं और यीशु पर विश्वास करते हैं, तभी आपको पाप पर विजय और नया आत्मिक जीवन प्राप्त होता है। उद्धार पाने का और कोई मार्ग नहीं है।

आपके विषय में क्या? **क्या आपने पश्चाताप में परमेश्वर की ओर अपना मन फेरा है? क्या आपको हमारे प्रभु यीशु में विश्वास है?**

यदि नहीं, तो आज ही ऐसा क्यों न करें? **“देखो, अब वह स्वीकार्य समय है। देखो, अब मोक्ष का दिन है।”** (2कुरिन्थियों 6:2)। आप अकेले स्वयं, या दूसरों की उपस्थिति में, मोक्ष के लिए परमेश्वर के पास आ सकते हैं। **यहाँ कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं:**

पश्चाताप में परमेश्वर की ओर मन फेरें। इसके लिए परमेश्वर से सहायता माँगें। सच्चा पश्चाताप इनमें से कुछ बातें भी सम्मिलित कर सकता है:

- परमेश्वर के सामने स्वीकार करें कि आपने उसके विरुद्ध पाप किया है। जितना उपयुक्त लगे, उतना स्पष्ट रहें। पूरी ईमानदारी रखें।
- परमेश्वर के सामने स्वीकार करें कि आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है; कि आप स्वयं को नहीं बचा सकते। आप अपने पाप स्वयं सुधार या मिटा नहीं सकते।
- परमेश्वर के सामने घोषित करें कि अब आप उसका अनुसरण करने का निर्णय ले रहे हैं। यह स्वीकार करें कि ऐसा करने के लिए आपको उसकी सहायता की आवश्यकता है, कि आप अपनी सामर्थ्य से यह नहीं कर सकते।
- अपने उन सभी वचनों और प्रतिबद्धताओं को त्याग दें जो परमेश्वर का अनुसरण करने के विरुद्ध हैं।

हमारे प्रभु यीशु पर विश्वास रखें:

- स्वीकार करें कि यीशु ही मसीह हैं, परमेश्वर का एकमात्र पुत्र, और सबका प्रभु हैं। यह घोषित करें कि यीशु अब आपके प्रभु हैं।
- स्वीकार करें कि यीशु ने आपके पापों के लिए मृत्यु सहन की और वे मृतकों में से जी उठे।
- यीशु के पास आएं, यीशु पर विश्वास करें, और यीशु का अनुसरण करें।

परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने आपको बचाने के लिए अपनी दया और अनुग्रह किया।

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको अपनी आत्मा से परिपूर्ण करे, ताकि आप ऐसा जीवन जी सकें जो उसकी दृष्टि में प्रिय हो।

बपतिस्मा: जब अवसर मिले, तो किसी अन्य यीशु के अनुयायी के द्वारा बपतिस्मा लें (अध्याय 17 “बपतिस्मा लें” देखें)।

आगे मनन के लिए

पश्चाताप के विषय में:

यहेजकेल 18:30-32: पश्चाताप का आह्वान।

मत्ती 3:1-2, मरकुस 1:4, लूका 3:3: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षा का सारांश।

मत्ती 4:17, मरकुस 1:15: यीशु की शिक्षा का सारांश।

मत्ती 11:20-24: क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया।

मरकुस 6:12: 12 शिष्यों के प्रचार का सारांश।

लूका 13:1-5: यीशु द्वारा पश्चाताप की आवश्यकता पर बल।

लूका 15:1-7: यीशु द्वारा खोई हुई भेड़ के विषय में शिक्षा।

लूका 15:8-10: यीशु द्वारा खोए हुए सिक्के के विषय में शिक्षा।

प्रेषितों के काम 2:38, 3:19, 5:31: पतरस द्वारा पश्चाताप पर शिक्षा।

प्रेषितों के काम 17:29-31, 20:18-21, 26:19-21: पौलुस द्वारा पश्चाताप पर शिक्षा।

इफिसियों 4:20-24: हम मसीह को कैसे जान पाए।

2पतरस 3:9: परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वह चाहता है कि सब लोग पश्चाताप करें।

प्रकाशितवाक्य 2:5, 2:14-16, 3:1-3, 3:19-20: यीशु के द्वारा मंडलियों को पश्चाताप के संबंध में संदेश।

प्रकाशितवाक्य 9:20-21, 16:9-11: पश्चाताप करने से इनकार।

यीशु में विश्वास के संबंध में:

यूहन्ना 3:16-18: जो कोई यीशु पर विश्वास करता है।

यूहन्ना 7:37-39: जो कोई यीशु पर विश्वास करता है।

रोमियों 1:17, 3:19-31: विश्वास के द्वारा धर्मी।

गलातियों 2:15-16: विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं।

इफिसियों 2:8-9: अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार।

फिलिप्पियों 3:8-9: परमेश्वर से प्राप्त धार्मिकता।

इब्रानियों 11:1-40: “विश्वास का अध्याय।”

याकूब 2:14-26: कर्मों के बिना विश्वास।

पुस्तक संदर्भ: “The Way to God” डी. एल. मूडी द्वारा। इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध।

अध्याय 17 बपतिस्मा लें

पतरस ने उनसे कहा, “मन फिराओ और तुममें से प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह के नाम में पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।”

(प्रेषितों के काम 2:38)

तब जिन्होंने उसके वचन को खुशी से स्वीकार किया, वे बपतिस्मा पाए। उस दिन लगभग तीन हज़ार प्राण जोड़े गए।

(प्रेषितों के काम 2:41)

“जाओ, सब जातियों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो; और उन्हें वह सब कुछ मानना सिखाओ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है। देखो, मैं युग के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।”

(मत्ती 28:19-20)

जल बपतिस्मा हमारे मोक्ष का एक बाहरी चिन्ह है। यह हमारे लिए और दूसरों के लिए यह गवाही है कि हमने यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लिया है।

जल बपतिस्मा की एक सरल समझ यह है कि यह एक धार्मिक स्नान है, जो पाप से शुद्ध होने का प्रतीक है। इस समझ का समर्थन निम्नलिखित पदों से होता है:

इस कारण यूहन्ना के शिष्यों और कुछ यहूदियों के बीच शुद्धिकरण के विषय में विवाद हुआ। वे यूहन्ना के पास आकर बोले, “रब्बी, जो व्यक्ति आपके साथ यरदन के पार था, जिसके विषय में आपने गवाही दी थी, देखिए, वही बपतिस्मा दे रहा है, और सब उसके पास जा रहे हैं।” (यूहन्ना 3:25-26)

“अब तुम प्रतीक्षा क्यों करते हो? उठो, बपतिस्मा लो, और अपने पाप धो डालो, प्रभु का नाम लेकर पुकारो।” (प्रेषितों के काम 22:16)

जल बपतिस्मा आंतरिक शुद्धिकरण का वह बाहरी प्रतीक है, जो मोक्ष के साथ होता है:

उसने हमें पुनर्जनन के स्नान और पवित्र आत्मा के द्वारा नवीनीकरण के माध्यम से बचाया। (तीतुस 3:5)

अनेक लोग जल बपतिस्मा को हमारे पुराने स्वभाव की मृत्यु (यीशु के साथ गाड़े जाने) और हमारे नए जीवन में उठाए जाने (यीशु के साथ मृतकों में से जीवित किए जाने) का एक प्रतीक मानते हैं। यह समझ इन धर्मग्रंथों से समर्थित है:

क्या आप नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु में ही बपतिस्मा लिया? इसलिए हम उसके साथ बपतिस्मा के द्वारा मृत्यु में गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मृतकों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन में चल सकें। (रोमियों 6:3-4)

उसी में तुम्हारा वह खतना हुआ, जो हाथों से नहीं, अर्थात् शरीर के पापों को उतार फेंकना, मसीह का खतना है; क्योंकि तुम उसके साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की कार्यशक्ति में विश्वास के द्वारा, जिसने उसे मृतकों में से जिलाया, उसके साथ उठाए भी गए। (कुलुस्सियों 2:11-12)

कुछ संस्कृतियों में जल बपतिस्मा अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, और कभी-कभी अविश्वासी इसे अपनी संस्कृति व धार्मिक विश्वासों से अस्वीकृति के रूप में देखते हैं। यीशु के एक अनुयायी को उनके नए विश्वास के कारण, विशेषकर बपतिस्मा लेने के पश्चात, मित्रों और परिवार द्वारा अस्वीकार किया जा सकता है। अक्सर विश्वासियों के लिए यह उचित रहता है कि वे मित्रों और परिवार से दूरी उत्पन्न न करें। फिर भी, कभी-कभी मित्रों और परिवार द्वारा अस्वीकृति टालना असंभव होता है, और ऐसे में एक नए विश्वासी को परमेश्वर की प्रजा के बीच नई आत्मिक परिवार की खोज करनी पड़ती है। जैसे-जैसे आप उसमें विश्वास बनाए रखेंगे, परमेश्वर इस स्थिति में आपकी सहायता करेगा (मरकुस 10:29-30, लूका 18:29-30)।

आगे मनन के लिए

मत्ती 3:1-12: बपतिस्मा देनेवाले यहून्ना (और मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-20)

मत्ती 3:13-17: यीशु का बपतिस्मा (और मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22)

रोमियों 6:1-14: मसीह के साथ गाड़े जाना और जिलाए जाना।

अध्याय 18 “यह मेरे स्मरण में करो”

क्योंकि मैंने प्रभु से वही प्राप्त किया, जो मैंने तुम्हें भी पहुँचाया, कि जिस रात प्रभु यीशु पकड़वाए गए थे, उन्होंने रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ा और कहा, “लो, खाओ। यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा जाता है। यह मेरे स्मरण में करो।” इसी प्रकार, भोजन के बाद उन्होंने कटोरा भी लिया और कहा, “यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है। जब भी तुम इसे पीओ, मेरे स्मरण में करो।” क्योंकि जब तक तुम यह रोटी खाते और यह कटोरा पीते हो, तब तक तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हो जब तक वह आते हैं।

(1कुरिन्थियों 11:23-26)

स्वयं यीशु ने यह निर्देश दिया कि हमें उसकी मृत्यु की स्मृति में रोटी तोड़नी और कटोरा साझा करना चाहिए। यह सरल विधि हमें याद दिलाती है कि यीशु की मृत्यु हमारे विश्वास का केन्द्र है। यीशु की मृत्यु, विशेष रूप से उसके लहू का बहाया जाना, हमें छुड़ाता है, जिससे पापों की क्षमा संभव होती है, और हमारा मोक्ष संभव होता है। पापों की क्षमा के विषय में मत्ती की पुस्तक में यह संबंध स्पष्ट है:

वह प्याला लेकर धन्यवाद करता है और उन्हें देता है, और कहता है, “तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह नये वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है।” (मत्ती 26:27-28)

धर्मग्रंथ यह भी कहता है:

उसी में हमें उसके लहू के द्वारा उद्धार, अर्थात् हमारे पापों की क्षमा, उसकी अनुग्रह की संपन्नता के अनुसार प्राप्त होती है। (इफिसियों 1:7)

इब्रानियों का लेखक हमें स्मरण कराता है कि:

लहू बहाए बिना क्षमा नहीं होती। (इब्रानियों 9:22)

कुछ लोग यह दावा करते हैं कि यीशु वास्तव में क्रूस पर नहीं मरे, या कि किसी और को क्रूस पर चढ़ाया गया, न कि स्वयं यीशु को। इसके विपरीत, यीशु की मृत्यु हमारे मोक्ष का एक आवश्यक भाग है। **यदि यीशु की मृत्यु न होती, तो पापों की क्षमा न होती; किसी के लिए भी मोक्ष संभव न होता।** मिलकर रोटी तोड़ना और प्याला साझा करना हमें स्मरण कराता है कि यीशु हमारे लिए मरा।

रोटी और प्याला साझा करने की विधि यीशु के अनुयायियों में बहुत भिन्न-भिन्न है। नया नियम बहुत कम विशिष्ट निर्देश देता है, इसलिए परमेश्वर की प्रजा के बीच विविध रीति-रिवाजों की स्वतंत्रता होनी चाहिए। फिर भी, कुछ स्पष्टीकरण सहायक हो सकते हैं:

- यीशु प्याले को **“लता का फल”** (मत्ती 26:29) कहते हैं, अतः सामान्यतः समझा जाता है कि यीशु अंगूर का रस या मदिरा साझा कर रहे थे।
- हम रोटी और प्याला यीशु और उसकी मृत्यु की **“स्मृति में”** साझा करते हैं, यह उसके बलिदान को दोहराने के लिए नहीं है, क्योंकि धर्मग्रंथ के अनुसार मसीह एक ही बार सब के लिए बलिदान हुआ:

वह, उन महायाजकों की तरह, प्रतिदिन पहले अपने पापों के लिए और फिर लोगों के पापों के लिए, बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं रखता। क्योंकि उसने अपने आप को एक बार सदा के लिए अर्पित कर यह कर दिखाया।
(इब्रानियों 7:27)

- यीशु के ये कथन **“यह मेरी देह है”** और **“यह मेरा लहू है”** सामान्यतः प्रतीकात्मक रूप में समझे जाते हैं, अर्थात् रोटी और दाखमधु **उसकी देह और लहू का प्रतिनिधित्व** करते हैं, न कि वे वास्तव में उसकी देह और लहू हैं।

आइए स्मरण करें कि यीशु ने हमारे लिए अपनी मृत्यु स्वीकारी, जिससे हम जीवित रह सकें। आइए यीशु की स्मृति में रोटी और प्याले को साझा करें। आइए **“प्रभु की मृत्यु की घोषणा करें जब तक वह न आ जाए।”**

आगे मनन के लिए

मत्ती 26:17-30: अंतिम भोजन। (मरकुस 14:12-26, लूका 22:7-39 भी देखें)

1कुरिन्थियों 11:17-34: पौलुस के निर्देश।

मत्ती 26:47-27:54: यीशु का न्याय और क्रूस पर चढ़ाया जाना। (साथ ही मरकुस 14:43-15:39; लूका 22:47-23:49; यूहन्ना 18:1-19:37 भी देखें)

अध्याय 19

अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करो

उनमें से एक, जो व्यवस्था का ज्ञाता था, यीशु की परीक्षा करते हुए उससे पूछने लगा, “गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है?” यीशु ने उससे कहा, “‘तू अपने परमेश्वर प्रभु से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा, और अपनी पूरी बुद्धि से प्रेम कर।’ यही पहली और सबसे बड़ी आज्ञा है। और दूसरी भी इसी के समान है, ‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।’ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इन्हीं दो आज्ञाओं पर आधारित हैं।”

(मत्ती 22:35-40)

“स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने पुत्र के लिए विवाह भोज आयोजित किया।”

(मत्ती 22:2)

“इसी कारण पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिल जाएगा। और वे दोनों एक शरीर हो जाएंगे।” यह भेद बहुत बड़ा है, परन्तु मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।

(इफिसियों 5:31-32)

मैंने एक बड़ी भीड़ की-सी आवाज़, और बहुत से जलों की-सी आवाज़, और प्रबल गड़गड़ाहट की-सी आवाज़ सुनी, जो कह रही थी, “हल्लेलूय्याह! क्योंकि हमारा परमेश्वर प्रभु, सर्वशक्तिमान, राज्य करता है! आओ, हम आनन्दित हों और अत्यन्त प्रसन्न हों, और उसे महिमा दें। क्योंकि मेम्ने का विवाह आ गया है, और उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है।” उसे उज्ज्वल, शुद्ध, सूती वस्त्र पहनने का अधिकार दिया गया; क्योंकि यह वस्त्र पवित्र लोगों के धर्मी कार्य हैं। उसने मुझसे कहा, “लिख, ‘धन्य हैं वे जो मेम्ने के विवाह भोज के लिए आमंत्रित किए गए हैं।’” उसने मुझसे कहा, “ये परमेश्वर के सच्चे वचन हैं।”

(प्रकाशितवाक्य 19:6-9)

अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ परमेश्वर से प्रेम करो। संक्षेप में, यही सबसे बड़ी आज्ञा है। इसके अतिरिक्त, नया नियम हमारे और परमेश्वर के संबंध की तुलना एक महान प्रेम कहानी से करता है: मसीह (“मेम्ना”) का परमेश्वर की प्रजा से विवाह। यह विवाह शारीरिक/यौनिक संयोग नहीं, बल्कि एक गहरी आत्मिक एकता है।

विचार कीजिए कि परमेश्वर ने प्रेम और विवाह को आंशिक रूप से इसी उद्देश्य के लिए बनाया है: पुरुष और स्त्री के बीच गहरा प्रेम और विवाह, उस गहरे अंतरंग संबंध की छाया है जो परमेश्वर अपनी प्रजा के साथ चाहता है।

जैसे प्रायः दूल्हा अपने होने वाली दुल्हन से संबंध की पहल करता है, वैसे ही परमेश्वर ने हमारे साथ प्रेम संबंध की शुरुआत की है। हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम के प्रत्युत्तर में हमें परमेश्वर के प्रति प्रेम रखना चाहिए:

हम उससे प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया। (1यूहन्ना 4:19)

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से हम पर अपना तीव्र प्रेम प्रकट किया है:

परन्तु परमेश्वर अपना स्वयं का प्रेम हमारे प्रति इस प्रकार प्रकट करता है कि जब हम अभी पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियों 5:8)

परमेश्वर ने मसीह को हमारे लिये मरने के लिए भेजकर हमारे प्रति अपना प्रेम प्रकट किया, ताकि हमारे पाप क्षमा किए जाएं और हम दोषारोपण से मुक्त रहें। यह स्वाभाविक है कि परमेश्वर से मिली क्षमा हमें परमेश्वर से गहरे प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है।

उस स्त्री के विषय में विचार करें **“जो पापिनी थी”** और जो यीशु के पास आई, उसने उनके पाँव अपने आँसुओं से धोए और सुगंधित इत्र से अभिषेक किया (लूका 7:36-50)। यीशु ने संकेत किया कि इस स्त्री ने उनसे अत्यधिक प्रेम किया, विशेषकर इसलिए क्योंकि वह जानती थी कि उसके बहुत से पाप क्षमा किए गए हैं।

यीशु का अनुसरण करने वाले सभी के लिए भी यही सत्य है: हम सब पर पाप का एक बड़ा ऋण था, जिसे हम चुका नहीं सकते थे। यीशु की क्रूस पर मृत्यु के द्वारा, हमारे ऊपर जो भारी ऋण था, वह बिना हमारे किसी प्रयास के पूरी तरह चुका दिया गया है! हमारे भीतर परमेश्वर के प्रति गहरा, उन्मुख प्रेम स्वतः ही प्रकट होना चाहिए।

परमेश्वर के प्रति गहरे प्रेम का अभाव, या तो अपने पाप की गहराई को न समझने के कारण होता है, या फिर परमेश्वर की क्षमा को प्राप्त न करने के कारण (यदि व्यक्ति परमेश्वर की ओर पश्चाताप और यीशु पर विश्वास के साथ नहीं आता; देखें अध्याय 16 **“मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?”**)।

हम कैसे जान सकते हैं कि हम सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं या नहीं?

“यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाएँ मानो।” (यूहन्ना 14:15)

क्योंकि परमेश्वर से प्रेम करना यह है कि हम उसकी आज्ञाएँ मानें। (1यूहन्ना 5:3)

ये वचन दर्शाते हैं कि सच्चा परमेश्वर के प्रति प्रेम, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में प्रकट होता है। जैसे दो प्रेमी एक-दूसरे को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं, वैसे ही

हमारा परमेश्वर के प्रति प्रेम भी हमें उसे प्रसन्न करने के लिए प्रेरित करता है। हम प्रयास करते हैं कि हम हर बात उसकी इच्छा के अनुसार करें, न कि केवल स्वयं या अन्य लोगों को प्रसन्न करने के लिए।

परंतु यहाँ हमें सावधान रहना चाहिए। उपरोक्त पद हमें यह सिद्ध करने के लिए नहीं बुला रहे कि हमें परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को परमेश्वर की आज्ञा मानने का प्रयास करके प्रमाणित करना है। बल्कि, वे यह संकेत कर रहे हैं कि यदि हम वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो आज्ञाकारिता स्वाभाविक परिणाम होगी। जैसा कि स्वयं यीशु ने सिखाया:

यीशु ने उससे उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम करता है, तो वह मेरे वचन को मानेगा। मेरा पिता उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आकर उसके साथ निवास करेंगे। जो मुझसे प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन को नहीं मानता। जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, परंतु पिता का है जिसने मुझे भेजा।” (यूहन्ना 14:23-24)

यहाँ और अधिक सावधान रहें। रोमियों 7 में मोक्ष के बाद भी पाप की दासता में रहने की संभावना दिखाई देती है, विशेषकर यदि हम आत्मा के बजाय व्यवस्था के अनुसार जीने का प्रयास करें। हालांकि, यह स्पष्ट है कि रोमियों 8 में जिस स्वतंत्रता की चर्चा की गई है, वही यीशु के अनुयायियों के लिए सामान्य होनी चाहिए, न कि रोमियों 7 वाली दासता। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम पाप को विश्वास के जीवन का सामान्य भाग मानकर स्वीकार न करें। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में जानबूझकर लगातार पाप होता है, तो उस व्यक्ति का मोक्ष ही प्रश्न के घेरे में आ जाता है (इब्रानियों 10:26-27)।

किन्तु कुछ लोग सोच सकते हैं: “परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना कितना बोझिल है!”

क्योंकि परमेश्वर के प्रति प्रेम यही है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें, और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं। (1यूहन्ना 5:3 YLT)

मैं सुझाव देना चाहूँगा कि यदि परमेश्वर के साथ आपका संबंध वैसा है जैसा होना चाहिए, तो परमेश्वर की आज्ञाकारिता **बिल्कुल भी** बोझिल नहीं है। परमेश्वर की आज्ञाकारिता केवल तभी बोझिल लग सकती है जब आप वास्तव में **“परमेश्वर से उत्पन्न”** नहीं हुए हों, या यदि आपका परमेश्वर के साथ संबंध परमेश्वर के प्रति प्रेम पर आधारित नहीं है। मैं कहूँगा कि सच्चे परमेश्वर प्रेमियों के लिए, परमेश्वर की अवज्ञा ही बोझिल होती है, आज्ञाकारिता नहीं (पौलुस के लिए अवज्ञा के बोझ के विषय में रोमियों 7 पढ़ें)।

साथ ही, जैसे-जैसे हम परमेश्वर को और भली-भांति जानते हैं, वैसे-वैसे हमारा परमेश्वर के प्रति प्रेम और गहरा होना चाहिए। यह कुछ समय ले सकता है, ठीक वैसे ही जैसे मानवीय रोमांटिक संबंधों में प्रेम समय के साथ गहरा होता जाता है। परमेश्वर की आज्ञा मानने की बढ़ती इच्छा, परमेश्वर के प्रति बढ़ते प्रेम का प्रमाण है।

आपके विषय में क्या? क्या आपके जीवन में परमेश्वर के प्रति प्रेम का प्रमाण है? क्या आप परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा रखते हैं? क्या आप परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं? क्या आपके परमेश्वर के प्रति प्रेम में वृद्धि हो रही है?

आगे मनन के लिए

लूका 7:36-50: वह स्त्री जिसने पापमय जीवन व्यतीत किया था।

1यूहन्ना 2:1-6: हम जानते हैं कि हमने उसे जान लिया है...

1यूहन्ना 2:15-17: संसार से प्रेम न करो।

1यूहन्ना 4:20-21: दूसरों से बैर रखते हुए परमेश्वर के प्रति प्रेम का दावा करना।

प्रकाशितवाक्य 2:1-7: इफिसुस में परमेश्वर के प्रति प्रेम करने में असफलता।

यशायाह 62:4-5: परमेश्वर दूल्हे के समान आनन्दित होता है।

यिर्मयाह 2:1 से 3:25: इस्राएल की परमेश्वर के प्रति अविश्वासिता की तुलना व्यभिचार और वेश्यावृत्ति से की गई है।

प्रकाशितवाक्य 21:9-27: दुल्हिन, मेम्ने की पत्नी।

अध्याय 20

अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो।

उनमें से एक, जो एक वकील था, ने उसे परखने के लिए प्रश्न किया, “गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है?” यीशु ने उससे कहा, “‘तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी बुद्धि से प्रेम कर।’ यही पहली और सबसे बड़ी आज्ञा है। और दूसरी भी इसी के समान है, ‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।’ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इन्हीं दो आज्ञाओं पर आधारित हैं।”

(मत्ती 22:35-40)

“अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।” यह आज्ञा केवल “अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम रखो...” के बाद दूसरी है। प्रथम दृष्टि में ये दोनों आज्ञाएँ सरल और सीधी प्रतीत होती हैं। परन्तु जब और गहराई से विचार किया जाए, तो ये बहुत गूढ़ और कठिन हैं, संभवतः किसी के लिए भी पूरी तरह समझना या पूरी तरह पालन करना असंभव सा है। स्पष्टीकरण के लिए, आइए हम केवल शास्त्र को देखें। यह ध्यान रखें कि कुछ पद विश्वासियों के बीच प्रेम पर केन्द्रित हैं, जबकि कुछ पद हमारे सभी लोगों के साथ संबंधों पर लागू होते हैं:

“तुम न तो बदला लेना, और न अपनी प्रजा के किसी व्यक्ति के विरुद्ध बैर पालना; परन्तु अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। मैं प्रभु हूँ।”

(लेव्यव्यवस्था 19:18)

“मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुम से प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो। इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो, यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम रखोगे।” (यूहन्ना 13:34-35)

प्रेम धैर्यशील है और दयालु है। प्रेम ईर्ष्या नहीं करता। प्रेम घमंड नहीं करता, अभिमानी नहीं होता, अनुचित आचरण नहीं करता, अपना लाभ नहीं ढूँढता, उत्तेजित नहीं होता, बुराई का कोई लेखा नहीं रखता; अधार्मिकता में आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य के साथ आनन्दित होता है; सब कुछ सह लेता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ आशा करता है, और सब कुछ सहन करता है। प्रेम कभी असफल नहीं होता। (1कुरिन्थियों 13:4-8)

“तुम ने सुना है कि कहा गया है, ‘तू अपने पड़ोसी से प्रेम कर और अपने शत्रु

से बैर करा।' परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ— अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुम्हें श्राप देते हैं उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुमसे बैर रखते हैं उनके साथ भलाई करो, और जो तुम्हारा अपमान करते और सताव करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो, ताकि तुम अपने उस पिता की संतान बनो जो स्वर्ग में है। क्योंकि वह अपना सूर्य बुरे और भले दोनों पर उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा बरसाता है। यदि तुम केवल उनसे प्रेम करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो तुम्हें क्या प्रतिफल मिलेगा? क्या चुंगी लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते?"

(मत्ती 5:43-46)

प्रियजन, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है; और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से उत्पन्न है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (1यूहन्ना 4:7-8)

यदि कोई कहता है, 'मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ,' और अपने भाई से बैर रखता है, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने देखे हुए भाई से प्रेम नहीं करता, वह अपने न देखे हुए परमेश्वर से कैसे प्रेम कर सकता है? यह आज्ञा हमें उसी से मिली है कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वह अपने भाई से भी प्रेम करे।

(1यूहन्ना 4:20-21)

हमें तुम्हारे लिए सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना उचित ही है, हे भाइयों*, क्योंकि तुम्हारा विश्वास अत्यधिक बढ़ रहा है, और तुम सबका प्रेम एक-दूसरे के प्रति बढ़ता जा रहा है। (2थिस्सलुनीकियों 1:3)

आपके विषय में क्या? आप दूसरों से कितना गहरा प्रेम करते हैं? क्या आपके प्रेम में निरंतर वृद्धि हो रही है?

आगे मनन के लिए

मरकुस 12:28-34: सबसे बड़ी आज्ञाएँ।

लूका 10:25-37: भला सामरी।

रोमियों 13:8-10: एक-दूसरे से प्रेम करने का सतत ऋण।

1कुरिन्थियों 13:1-13: "प्रेम" का अध्याय।

गलातियों 5:13-15: एक-दूसरे की सेवा करें।

याकूब 2:8-9: धर्मग्रंथ में पाई जाने वाली राजकीय व्यवस्था।

1यूहन्ना 3:10-18: हम परमेश्वर की संतान को किस प्रकार पहचानें।

अध्याय 21

देना

“मैंने तुम्हें सब बातों में उदाहरण दिया है कि परिश्रम करते हुए निर्बलों की सहायता करनी चाहिए, और प्रभु यीशु के उन वचनों को स्मरण रखना चाहिए, जो उन्होंने स्वयं कहा: ‘लेने से देना अधिक धन्य है।’”

(प्रेषितों के काम 20:35)

इसी से हम प्रेम को जानते हैं, क्योंकि वह हमारे लिए अपना जीवन दे गया; और हमें भी भाईयों के लिए अपने अपने प्राण देने चाहिए। लेकिन यदि किसी के पास संसार की वस्तुएं हों और वह अपने भाई को आवश्यकता में देखता है, और फिर भी उस पर दया का हृदय बंद कर लेता है, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? मेरे छोटे बच्चों, हम केवल वचन या ज़बान से ही नहीं, बल्कि कार्य और सत्य में भी प्रेम करें।

(1यूहन्ना 3:16-18)

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने दिया...

(यूहन्ना 3:16)

दूसरों के प्रति प्रेम हमें प्रेरित करता है कि हम जरूरतमंदों की सहायता के लिए सक्रिय हों। प्रेम के कारण हम अपनी समय और संसाधन जरूरतमंदों की सहायता हेतु समर्पित करते हैं। देन के बारे में कुछ और पदों पर विचार करें:

भाइयों के प्रति प्रेम में एक-दूसरे के प्रति कोमल स्नेह रखो; ... पवित्रों की आवश्यकताओं में सहभागी बनो, और आतिथ्य में तत्पर रहो। (रोमियों 12:10, 13)

जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे बेच दो और जरूरतमंदों को वरदान में दो। अपने लिए ऐसी थैलियाँ बनाओ जो पुरानी नहीं होतीं, स्वर्ग में वह खज़ाना जो कभी समाप्त नहीं होता, जहाँ न कोई चोर पहुँचता है और न कोई पतंगा नष्ट करता है। (लूका 12:33)

यदि तुम्हारा शत्रु भूखा हो, तो उसे भोजन दो; यदि वह प्यासा हो, तो उसे पानी पिलाओ। क्योंकि ऐसा करने से तुम उसके सिर पर जलते हुए अंगारों का बोझ रखोगे, और प्रभु तुम्हें प्रतिफल देगा। (नीतिवचन 25:21-22)

अतिथियों का सत्कार करना न भूलो, क्योंकि कुछ ने अनजाने में ऐसा करते हुए स्वर्गदूतों की सेवा की है। (इब्रानियों 13:2)

पर भलाई करने और बांटने को न भूलो, क्योंकि ऐसे बलिदानों से परमेश्वर प्रसन्न होता है। (इब्रानियों 13:16)

जो तुमसे मांगता है, उसे दो; और जो तुमसे उधार लेना चाहता है, उससे मुंह न फेरो। (मत्ती 5:42)

उसने उन्हें उत्तर दिया, “जिसके पास दो वस्त्र हैं, वह उसके साथ बाँटे जिसके पास नहीं है। जिसके पास भोजन है, वह भी ऐसा ही करे।” (लूका 3:11)

जिसने चोरी की है, वह अब और चोरी न करे; परन्तु वह अपने हाथों से परिश्रम करके भला कार्य करे, ताकि उसके पास भी जरूरतमंद को देने के लिए कुछ हो। (इफिसियों 4:28)

जो निर्धन पर दया करता है, वह प्रभु को उधार देता है; प्रभु उसे उसका प्रतिफल देगा। (नीतिवचन 19:17)

दुष्ट उधार लेते हैं और चुकाते नहीं, परन्तु धर्मी उदारता से देते हैं। (भजन 37:21)

धर्मग्रंथ हमारी उदारता पर कुछ सीमाएँ निर्धारित करता है:

जब हम आपके साथ थे, तब भी हमने आपको यह आज्ञा दी थी : “यदि कोई काम करना न चाहे, तो वह न खाये।” (2थिस्सलुनीकियों 3:10)

धर्मग्रंथ हमें बिना प्रेम के देने के विषय में चेतावनी देता है:

यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति दरिद्रों को खिलाने के लिए दे दूँ, और यदि मैं अपना शरीर जलाए जाने के लिए सौंप दूँ, परन्तु मेरे पास प्रेम न हो, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं होता। (1कुरिन्थियों 13:3)

अन्त में, धर्मग्रंथ हमें हमारी दानशीलता में निष्कपट होने का आह्वान करता है:

हर एक व्यक्ति जैसा उसने अपने मन में निश्चित किया है, वैसा ही दे, न हिचकिचाहट के साथ, और न ही जबरदस्ती; क्योंकि परमेश्वर आनन्दपूर्वक देने वाले से प्रेम करता है। (2कुरिन्थियों 9:7)

आगे मनन के लिए

मत्ती 6:1-4: पाखंडियों के समान मत बनो।

मत्ती 20:20-28: जो तुम्हारे बीच महान होना चाहता है...

लूका 10:25-37: जाओ और उसी प्रकार करो।

1तीमुथियुस 5:3-16: संबंधियों की व्यवस्था करना।

अध्याय 22

जैसे प्रभु ने आपको क्षमा किया, वैसे ही आप भी क्षमा करें

...एक-दूसरे के साथ सहन करते हुए, और यदि किसी को किसी पर कोई शिकायत हो, तो एक-दूसरे को क्षमा करें; जैसे मसीह ने आपको क्षमा किया, वैसे ही आप भी करें।

(कुलुस्सियों 3:13)

“हमें हमारे पाप क्षमा करें, जैसे हम भी अपने दोषियों को क्षमा करते हैं।”

(मत्ती 6:12)

“यदि आप मनुष्यों के अपराध क्षमा करें, तो आपका स्वर्गीय पिता भी आपको क्षमा करेगा। परन्तु यदि आप मनुष्यों के अपराध क्षमा नहीं करते, तो आपका पिता भी आपके अपराध क्षमा नहीं करेगा।”

(मत्ती 6:14-15)

“उसका प्रभु क्रोधित हुआ और उसे यातना देने वालों के हाथ सौंप दिया, जब तक कि वह उसे दिया गया सब चुका न दे। इसी प्रकार मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे साथ करेगा, यदि तुम में से प्रत्येक अपने भाई को उसके अपराधों के लिए अपने हृदय से क्षमा न करे।”

(मत्ती 18:34-35)

हमारे पापों की क्षमा, परमेश्वर द्वारा, हमारे मोक्ष का मूल है। क्षमा यीशु के बलिदान के द्वारा संभव हुई है। क्षमा कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे हम अर्जित करते हैं; यह हमें परमेश्वर की अनुग्रह से, यीशु में विश्वास के द्वारा प्राप्त होती है (अध्याय 29 “पापों की क्षमा” के अनुसार)।

जिन्हें परमेश्वर ने क्षमा किया है, उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे भी दूसरों को क्षमा करें। यह परमेश्वर के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, यहाँ तक कि यीशु ने यह भी शिक्षा दी:

“पर यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।” (मत्ती 6:15)

हमने अध्याय 20 (“अपने पड़ोसी से प्रेम करो...”) में देखा कि **“जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में बना रहता है।”** (1यूहन्ना 3:14)। इसी प्रकार, किसी व्यक्ति का दूसरों को क्षमा न करना उनके मोक्ष के विरुद्ध प्रमाण के रूप में दिखाई देता है। यह तर्क दिया जा सकता है कि दूसरों को क्षमा न करना, दूसरों से प्रेम न करने के

समान है। दूसरों को क्षमा न करने की अनिच्छा आपकी मोक्ष को प्रश्नवाचक बना देती है।

यह प्रश्न उठता है: मैं _____ को वह करने के लिए कैसे क्षमा कर सकता/सकती हूँ, जो _____ (वह/वे) ने किया? (आप रिक्त स्थान भरें।)

क्या दूसरों को क्षमा करना यह अर्थ रखता है कि मैं उनके किए को भूल जाऊँ? क्या इसका अर्थ है कि मुझे उन पर फिर से विश्वास करना चाहिए? नहीं, बिल्कुल नहीं। क्षमा हमारे स्मृति और विश्वास को प्रभावित कर सकती है, पर ये अलग विषय हैं। क्षमा का अर्थ पाप की अनदेखी करना नहीं है। हम किसी को क्षमा कर सकते हैं, और फिर भी यीशु की उस शिक्षा का पालन कर सकते हैं जिसमें उन्होंने सामना करने का निर्देश दिया (मत्ती 18:15-17)। व्यवस्था से जुड़े मामलों में, परिस्थितियों के अनुसार, कानूनी कार्रवाई करना उचित हो सकता है।

क्षमा हमारे अपने निर्णय का कार्य है। क्षमा कटुता को छोड़ने का चुनाव करना है; प्रतिशोध न लेने का चुनाव करना; दुर्भावना में उस विषय को न उठाने का निर्णय लेना; प्रार्थना करना कि परमेश्वर उस व्यक्ति पर दया करें जिसने अपमानित किया है; मेल-मिलाप की संभावना को रहने देने का चुनाव करना; जिस प्रकार परमेश्वर ने हमें अनुग्रह दिया, उसी प्रकार का अनुग्रह दूसरों को देना चुनना।

क्षमा का अर्थ यह नहीं है कि हम दूसरों के प्रति मन में कोई कोमल भावना उत्पन्न करें। दूसरों को क्षमा करने से आवश्यक नहीं कि वह पीड़ा दूर हो जाए; आप फिर भी किसी अन्य के पाप के परिणाम भुगत सकते हैं। बल्कि, क्षमा वह कार्य है जिसे हम अपनी इच्छा से, परमेश्वर की अनुग्रह के द्वारा, प्रेम के कारण चुनते हैं।

जैसा कि **'हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया'**, वैसे ही हमें **'जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया वैसे ही तुम भी क्षमा करो।'** परमेश्वर ने इसका उदाहरण दिया। प्रेम में, उसने यीशु को भेजा ताकि हमें क्षमा प्राप्त हो सके। प्रेम में, हमें भी दूसरों को क्षमा करने के लिए बुलाया गया है। यीशु ने यह संभव किया।

आपके विषय में क्या? क्या आपको किसी को क्षमा करने की आवश्यकता है? क्या आप उस व्यक्ति को क्षमा करेंगे? अब और देर न करें।

आगे मनन के लिए

नीतिवचन 17:9: जो अपराध को ढकता है।

मत्ती 18:21-35: निर्दयी दास का दृष्टांत।

मरकुस 11:25: यदि तुम्हारे मन में किसी के विरुद्ध कुछ है।

प्रेषितों के काम 7:59-60: स्टीफन की प्रार्थना।

रोमियों 12:17-21: बुराई का बदला बुराई से न दो।

अध्याय 23

आराधना करें, आनन्दित हों, और धन्यवाद दें!

आओ, हम आराधना करें और दण्डवत करें। आओ, अपने सृष्टिकर्ता प्रभु के सामने घुटने टेकें।

(भजन 95:6)

प्रभु में सदा आनन्दित रहो! मैं फिर कहता हूँ, “आनन्दित रहो!”

(फिलिप्पियों 4:4)

प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी प्रेमपूर्ण करुणा सदा बनी रहती है।

(1 इतिहास 16:34; भजन 106:1, 107:1, 118:1, 118:29, 136:1)

आप हाल ही में किस पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं? क्या आप परमेश्वर की भलाई, उसके प्रेम, और उसके आपके लिए किए गए प्रावधान पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं? या, क्या आप अपनी स्वयं की परीक्षाएँ और कठिनाइयों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं? क्या आप परमेश्वर को आपको बचाने के लिए धन्यवाद दे रहे हैं, या अधिकतर समय परमेश्वर से शिकायत और कुड़कुड़ाहट कर रहे हैं? क्या आप प्रभु में आनन्दित हो रहे हैं, या उसकी सृष्टि को कोस रहे हैं?

यह वह दिन है जिसे प्रभु ने बनाया है। हम आनन्दित होंगे और इसमें प्रसन्न रहेंगे! (भजन 118:24)

आप किन लोगों के साथ रहना पसंद करेंगे: वे लोग जो **आनन्दित** और **प्रसन्न** होते हैं, या वे जो कुड़कुड़ाते और शिकायत करते हैं? अपने लिए आप क्या पसंद करेंगे: आनन्दित होना और प्रसन्न रहना, या कुड़कुड़ाना और शिकायत करना? परमेश्वर हमें **आनन्दित होने और प्रसन्न रहने** के लिए बुलाते हैं।

चाहे आपकी परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि आप परमेश्वर की संतान हैं तो आप परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि उसने आपको बचाने के लिए यीशु को भेजा, और आप परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं तथा आनन्दित हो सकते हैं कि आपकी परीक्षाएँ अस्थायी हैं!

उन लोगों के लिए यीशु का यह कथन विचार करें जो सताए जा रहे हैं:

धन्य हैं आप जब लोग आपको दोष दें, सताएँ, और मेरे कारण आप पर झूठा दोष लगाएँ। आनन्दित होना और अत्यन्त प्रसन्न रहना, क्योंकि स्वर्ग में

आपका प्रतिफल महान है। इसी प्रकार उन्होंने तुम से पहले हुए भविष्यद्वक्ताओं को सताया था।” (मत्ती 5:11-12)

हमें सबको पतरस के साथ मिलकर यह कहना चाहिए:

धन्य है हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता, जिन्होंने अपनी महान दया के अनुसार हमें यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान के द्वारा जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया, उस अविनाशी और निर्मल विरासत के लिए जो मुरझाती नहीं, जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है। जिन्हें परमेश्वर की शक्ति से विश्वास के द्वारा सुरक्षित रखा गया है, उस मोक्ष के लिए जो अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार है। इसी में तुम अत्यन्त आनन्दित होते हो, यद्यपि अब कुछ समय के लिए (यदि आवश्यक हो) तुम्हें विभिन्न परीक्षाओं में दुःख उठाना पड़ा है, ताकि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा, जो नाशमान सोने से भी अधिक बहुमूल्य है (जो अग्नि में तपा कर भी नष्ट हो जाता है), यीशु मसीह के प्रकाशित होने पर प्रशंसा, महिमा और सम्मान का कारण सिद्ध हो—उससे, जिसे तुमने नहीं देखा, तुम प्रेम करते हो। उसमें, यद्यपि आप अब उसे नहीं देखते, फिर भी विश्वास करते हुए, आप ऐसे आनन्द से भर जाते हैं जो अवर्णनीय और महिमा से पूर्ण है, और अपने विश्वास का परिणाम—अपनी आत्माओं का मोक्ष—प्राप्त करते हैं। (1पतरस 1:3-9)

यदि आप यीशु के अनुयायी हैं, तो आपका भविष्य महिमामय है। इस जीवन की आपकी परीक्षाएँ, चाहे वे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अस्थायी हैं।

परमेश्वर की आराधना करना, आनन्दित होना और धन्यवाद देना, सामर्थ्यपूर्ण आत्मिक जीवन के प्रमुख सूत्र हैं।

आपके विषय में क्या? क्या आप प्रत्येक दिन परमेश्वर की आराधना करने, आनन्दित होने और धन्यवाद देने का चुनाव करेंगे?

आगे मनन के लिए

2 इतिहास 20:20-24: विजय से पहले स्तुति और गायन।

भजन संहिता 145: स्तुति का एक भजन।

लूका 4:5-8: केवल प्रभु की ही आराधना करो।

प्रेषितों के काम 16:22-26: बन्दीगृह में प्रार्थना और गायन।

कुलुस्सियों 3:16: भजन, स्तुतिगीत और आत्मिक गीत।

गिनती 14:1-38: प्रभु के विरुद्ध कुड़कुड़ाना।

अध्याय 24

प्रार्थना

और मोक्ष का शिरस्त्राण तथा आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो; सारी प्रार्थना और निवेदन के साथ, हर समय आत्मा में प्रार्थना करते रहो, और इसी के लिए जागरूक रहकर सम्पूर्ण धैर्य और सभी पवित्र लोगों के लिए लगातार निवेदन करते रहो।

(इफिसियों 6:17-18)

प्रार्थना में दृढ़ता से लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागरूक रहो।

(कुलुस्सियों 4:2)

सदा आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना करते रहो।

(1थिस्सलुनीकियों 5:16-17)

प्रार्थना क्या है? मैं किसी ऐसे धर्मग्रंथ से परिचित नहीं हूँ जो सीधे इस प्रश्न का उत्तर देता हो। फिर भी, धर्मग्रंथों में, विशेषकर भजनों में, प्रार्थना के अनेक उदाहरण मिलते हैं। मैं एक सरल परिभाषा प्रस्तुत करता हूँ: प्रार्थना परमेश्वर से संवाद है।

कौन प्रार्थना करे? धर्मग्रंथ सभी यीशु के अनुयायियों को प्रार्थना के लिए प्रेरित करते हैं (जैसा कि ऊपर दिए गए तीन पद्यांशों में है)।

हमें कब प्रार्थना करनी चाहिए? **“हर समय”** (इफिसियों 6:18), और **“निरन्तर”** (1थिस्सलुनीकियों 5:17)।

हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए? **“आत्मा में”** और **“सब प्रकार की स्थिरता के साथ”** (इफिसियों 6:18 के अनुसार)। **“आत्मा में”** का अर्थ बहुत से प्रकार से समझा जा सकता है, किन्तु मैं **“आत्मा में”** को **“शरीर में”** के विपरीत समझता हूँ, जैसा कि रोमियों 8:1-17 में बताया गया है।

यीशु स्वयं हमें प्रार्थना करने का और भी उत्कृष्ट मार्गदर्शन देते हैं:

“जब तुम प्रार्थना करो, तो कपटियों के समान मत बनो, क्योंकि वे सभा-गृहों और सड़कों के कोनों पर खड़े होकर प्रार्थना करना पसंद करते हैं, ताकि लोग उन्हें देखें। मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, उन्हें उनका प्रतिफल मिल चुका है। परन्तु तू जब प्रार्थना करे, तो अपने अंतरकक्ष में जा, और अपना द्वार बंद करके, गुप्त में रहने वाले अपने पिता से प्रार्थना कर; और तेरा पिता, जो गुप्त में देखता है, वह तुझे प्रकट रूप में प्रतिफल देगा।

“प्रार्थना करते समय व्यर्थ दोहराव मत करो, जैसा कि अन्यजाति करते हैं; क्योंकि वे सोचते हैं कि उनकी बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। इसलिए उनके समान मत बनो, क्योंकि तुम्हारे पिता तुम्हारी आवश्यकता को उनसे माँगने से पहले ही जानते हैं।” (मत्ती 6:5-8)

फिर यीशु एक आदर्श प्रार्थना प्रस्तुत करते हैं, जिसे सामान्यतः “प्रभु की प्रार्थना” कहा जाता है, जिसे अनेक यीशु के अनुयायी धर्मविधि प्रार्थना के रूप में करते हैं:

“ऐसे प्रार्थना करो: ‘हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आ जाए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। आज हमें हमारी प्रतिदिन की रोटी दे। और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं, वैसे तू हमारे ऋण क्षमा कर। हमें परीक्षा में न ला, परंतु दुष्ट से बचा। क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा सदा तेरी है। आमीन।’” (मत्ती 6:9-13)

अब यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि निरंतर प्रार्थना, जिसकी ओर धर्मग्रंथ हमें बुलाते हैं, वह प्रभु की प्रार्थना की निरंतर पुनरावृत्ति नहीं है। बल्कि, परमेश्वर चाहते हैं कि हम जीवन के सभी पहलुओं के संबंध में उनसे संवाद करें। धर्मग्रंथ हमें इसका बोध कराता है:

किसी भी बात की चिंता न करो, परंतु हर बात में, प्रार्थना और विनती के साथ धन्यवाद देकर अपनी याचिकाएँ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करो। और परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से बढ़कर है, वह तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों की मसीह यीशु में रक्षा करेगी। (फिलिप्पियों 4:6-7)

आगे मनन के लिए

भजन 143, या आपकी पसंद का कोई अन्य भजन प्रार्थना करें।

भजन 143 या अपनी पसंद का कोई अन्य भजन कंठस्थ करने का विचार करें (इसे सीखने के लिए स्वयं को कई सप्ताह या अधिक समय दें)।

लूका 18:1-8: दृढ़ विधवा।

इफिसियों 3:14-21; फिलिप्पियों 1:9-11; कुलुस्सियों 1:9-12: कलीसियाओं के लिए प्रार्थनाएँ।

2थिस्सलुनीकियों 3:1-2: प्रार्थना के लिए अनुरोध।

याकूब 5:13-18: प्रार्थना।

अध्याय 25 पवित्रशास्त्र का परीक्षण करें

ये लोग थिस्सलुनीके के लोगों से अधिक उदात्त थे, क्योंकि उन्होंने पूर्ण मन से वचन को ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्र का परीक्षण किया कि क्या ये बातें सच हैं।

(प्रेषितों के काम 17:11)

यीशु के अनुयायी सामान्यतः मानते हैं कि बाइबल की पुस्तकें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई हैं। हम बाइबल को सत्य का विश्वसनीय स्रोत मानते हैं, जो हमें परमेश्वर का मार्ग दिखाता है। हम परमेश्वर और सृष्टि के विषय में जानने तथा यह समझने के लिए बाइबल को पढ़ते हैं कि किस प्रकार से ऐसा जीवन जिएं जो परमेश्वर को प्रसन्न करे। जैसा कि धर्मग्रंथ में लिखा है:

हर एक धर्मग्रंथ परमेश्वर की श्वास से प्रेरित है और शिक्षा, समझाने, सुधार करने तथा धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए लाभकारी है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर भले काम के लिए पूरी तरह तैयार हो सके। (2तीमुथियुस 3:16-17)

जो कुछ पहले लिखा गया है, वह हमारे सीखने के लिए लिखा गया, ताकि हम निरंतरता और धर्मग्रंथ से मिलने वाले उत्साह के द्वारा आशा पा सकें। (रोमियों 15:4)

हमारे पास भविष्यवाणी का और भी अधिक सुनिश्चित वचन है; और आप भली प्रकार करते हैं कि उस पर ध्यान देते हैं, जैसे कोई दीपक अंधकारमय स्थान में प्रकाशमान होता है, जब तक कि दिन न निकल आए और भोर का तारा आपके हृदयों में उदित न हो जाए। सबसे पहले यह समझ लें कि किसी भी धर्मग्रंथ की भविष्यवाणी अपनी व्यक्तिगत व्याख्या के अधीन नहीं है। क्योंकि कभी भी कोई भविष्यवाणी किसी मनुष्य की इच्छा से नहीं आई, अपितु परमेश्वर के पवित्र पुरुषों ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर बोला। (2पतरस 1:19-21)

बाइबल दो मुख्य भागों में विभाजित है: पुराना नियम और नया नियम। पुराना नियम उन 39 "पुस्तकों" को समाहित करता है जो यीशु के पृथ्वी पर जीवन से पूर्व लिखी गई थीं। नया नियम उन 27 "पुस्तकों" को समाहित करता है जो यीशु के पृथ्वी पर जीवन

के बाद लिखी गई थीं। यहाँ बाइबल की एक अत्यंत संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है:

पुराना नियम की पुस्तकें:

उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक: ये पाँच पुस्तकें प्रायः यह मानी जाती हैं कि इन्हें मूसा ने लिखा था। इनमें सृष्टि से लेकर मूसा की मृत्यु तक की घटनाएँ तथा मूसा की व्यवस्था सम्मिलित हैं।

यहोशू से एस्तेर तक (12 पुस्तकें): ऐतिहासिक पुस्तकें, जो मूसा की मृत्यु से लेकर यरूशलेम में दूसरे मन्दिर के निर्माण (लगभग 517 ईसा पूर्व) तक की अवधि को वर्णित करती हैं।

अय्यूब: अय्यूब के दुःख और उद्धार की कथा।

भजन: कई लेखकों द्वारा रचित प्रार्थनाएँ और गीत।

नीतिवचन: बुद्धि पर आधारित, मुख्यतः राजा सुलैमान द्वारा लिखित।

सभोपदेशक: राजा सुलैमान द्वारा और अधिक बुद्धि; यह बताता है कि 'सूर्य के नीचे' जीवन कैसा प्रतीत होता है।

श्रेष्ठगीत: राजा सुलैमान द्वारा; प्रेम संबंधी गीत।

यशायाह से मलाकी तक (17 पुस्तकें): भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें, जो लोगों को परमेश्वर की ओर लौटने का आह्वान करती हैं।

नया नियम की पुस्तकें:

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना (या 'स्वास्थ्य समाचार ... के अनुसार'): यीशु के जीवन के चार वृत्तान्त; प्रत्येक पुस्तक अपने लेखक के नाम पर है।

प्रेषितों के काम (या "प्रेरितों के काम"): यह वह कथा है जो यीशु के मृतकों में से जी उठने के बाद घटी, जिसे लूका ने लिखा।

रोमियों से फिलेमोन तक (13 पुस्तकें): पौलुस प्रेरित द्वारा विभिन्न कलीसियाओं और व्यक्तियों को लिखित पत्र। प्रत्येक पुस्तक का नाम उसके मूल प्राप्तकर्ता के नाम पर है।

इब्रानियों से यहूदा तक (8 पुस्तकें): परमेश्वर की प्रजा को लिखे गए अन्य पत्र। प्रत्येक पुस्तक का नाम उसके लेखक के नाम पर है, सिवाय इब्रानियों के (इब्रानियों के लेखक के बारे में निश्चितता नहीं है)।

प्रकाशितवाक्य: यीशु द्वारा यूहन्ना को दिया गया एक दर्शन। इसमें सात कलीसियाओं को पत्र और भविष्य से संबंधित भविष्यवाणियाँ सम्मिलित हैं।

पुराना नियम अधिकांशतः इब्रानी भाषा में लिखा गया था, और नया नियम मुख्यतः यूनानी भाषा में लिखा गया था। बाइबल का अनुवाद अनेक भाषाओं में किया गया है, और अधिकांश विश्वासी इब्रानी और यूनानी भाषा सीखने के बजाय अपनी स्वयं की भाषा में किए गए अनुवाद का ही अध्ययन करते और पढ़ते हैं।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बाइबल का उद्देश्य हमें यह दिखाना है कि परमेश्वर को कैसे जानें और उसका अनुसरण करें। कुछ लोग गलती से बाइबल को जानना ही अपना मुख्य लक्ष्य बना लेते हैं, जबकि उद्देश्य परमेश्वर को जानना और उनका अनुसरण करना है। सावधान रहें कि आप वैसे लोगों के समान न हो जाएँ, जिनके विषय में यीशु ने कहा:

“तुम धर्मग्रंथ खोजते हो, क्योंकि समझते हो कि उनमें तुम्हें अनन्त जीवन है; और यही वे हैं जो मेरे विषय में गवाही देते हैं। फिर भी तुम मेरे पास आना नहीं चाहते कि तुम्हें जीवन मिले।” (यूहन्ना 5:39-40)

यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम का बहुत बड़ा भाग 'व्यवस्था' से संबंधित है, जिसे परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दिया था। यह 'मूसा की व्यवस्था' मुख्यतः निर्गमन और लैव्यव्यवस्था पुस्तकों में दी गई थी। मूसा की व्यवस्था ने लोगों को पाप के प्रति जागरूक किया और परमेश्वर के साथ सही संबंध के लिए अनेक पशु बलियों की आवश्यकता रखी। फिर भी, मूसा की व्यवस्था लोगों को धर्मी नहीं बना सकती थी, और न ही पाप के लिए कोई अंतिम समाधान उपलब्ध करा सकती थी। मूसा की व्यवस्था उस अंतिम समाधान की ओर संकेत करती थी, जिसे यीशु प्रदान करेंगे। जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

इसलिए व्यवस्था हमारा शिक्षक बनी कि वह हमें मसीह के पास ले आए, ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहर सकें। परंतु अब जब विश्वास आ गया है, तो हम अब शिक्षक के अधीन नहीं हैं। (गलातियों 3:24-25)

मैं व्यक्तिगत रूप से “मूसा की व्यवस्था” (एक अपूर्ण व्यवस्था, जो पाप को रोकने और लोगों को मसीह की ओर निर्देशित करने के लिए दी गई थी) और “प्रभु की व्यवस्था” (परमेश्वर की सिद्ध, शाश्वत नैतिक व्यवस्था, जिसकी भजन ग्रंथ में प्रशंसा की गई है) के बीच भेद करता हूँ।

जब आप बाइबल पढ़ें, तो परमेश्वर से बुद्धि और समझ माँगें। यदि आप बाइबल से परिचित नहीं हैं, तो मैं सुझाव देता हूँ कि आप मत्ती, मरकुस, लूका या यूहन्ना की पुस्तक में यीशु के जीवन से पढ़ना प्रारंभ करें।

अंत में, परमेश्वर के वचन की भलाई पर ध्यान करें:

मैंने आपके वचन को अपने हृदय में रख लिया है, ताकि मैं आपके विरुद्ध पाप न करूँ। (भजन 119:11)

मैं तेरी विधियों में आनन्दित रहूँगा। मैं तेरे वचन को नहीं भूलूँगा। (भजन 119:16)

तेरी आज्ञाएँ मुझे मेरे शत्रुओं से भी अधिक बुद्धिमान बनाती हैं, क्योंकि तेरी आज्ञाएँ सदा मेरे साथ रहती हैं। मुझे मेरे सभी शिक्षकों से अधिक समझ है, क्योंकि तेरी साक्षियाँ मेरा ध्यान हैं। मुझे वृद्धों से भी अधिक समझ है, क्योंकि मैं तेरी उपदेशों का पालन करता हूँ। मैंने अपने पाँवों को हर बुरी राह से बचाए रखा है, ताकि मैं तेरे वचन का पालन कर सकूँ। (भजन 119:98-101)

तेरी प्रतिज्ञाएँ मेरे स्वाद में कितनी मधुर हैं, मेरे मुँह में मधु से भी अधिक! (भजन 119:103)

तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए ज्योति है। (भजन 119:105)

तेरी प्रतिज्ञाएँ पूरी तरह से परखी गई हैं, और तेरा दास उनसे प्रेम करता है। (भजन 119:140)

मैं आपके वचन पर आनन्दित होता हूँ, जैसे कोई महान लूट पाता है। (भजन 119:162)

आगे मनन के लिए

भजन 1: धन्य है वह मनुष्य...

भजन 19:7-11: सोने से भी अधिक चाहने योग्य।

भजन 119: परमेश्वर के वचन की भलाई।

मत्ती 5:17-48: यीशु परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था स्पष्ट करते हैं।

मत्ती 22:29: तुम धर्मग्रंथों को नहीं जानते।

इब्रानियों 10:1-14: व्यवस्था एक छाया के समान है।

याकूब 1:22-25: वचन के कर्ता बनो...

बाइबल में कम से कम एक ऐसा पद खोजें जो आपके लिए अर्थपूर्ण हो, और आज ही उसे कंठस्थ करना प्रारंभ करें।

बाइबल सॉफ्टवेयर: यदि आपके पास उपयुक्त कम्प्यूटर, टैबलेट या स्मार्ट फ़ोन है, तो www.e-sword.net पर निःशुल्क बाइबल अध्ययन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हो सकता है। एंड्रॉयड फ़ोन के लिए: www.mysword.info। (कई भाषाओं में बाइबल अनुवाद उपलब्ध हैं।)

अध्याय 26 एक साथ मिलना

आइए हम विचार करें कि हम एक-दूसरे को प्रेम और भले कार्यों के लिए कैसे प्रेरित करें, और जैसा कुछ लोगों का स्वभाव है, वैसे अपने एक साथ मिलना न छोड़ें, परंतु एक-दूसरे को उत्साहित करें—और जितना आप उस दिन को निकट आते देखते हैं, उतना ही अधिक।

(इब्रानियों 10:24-25)

तब जिन्होंने उसके वचन को खुशी से स्वीकार किया, वे बपतिस्मा पाए। उस दिन लगभग तीन हज़ार आत्माएँ जोड़ दी गईं। वे प्रेरितों की शिक्षा, संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना में दृढ़तापूर्वक बने रहे।

(प्रेषितों के काम 2:41-42)

वे प्रतिदिन एक मन होकर मंदिर में दृढ़तापूर्वक बने रहते थे और घर-घर रोटी तोड़ते थे, वे आनन्द और सरल हृदय से भोजन करते थे, परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोगों के साथ अनुग्रह पाते थे। प्रभु प्रतिदिन उन लोगों को मंडली में जोड़ता गया जो उद्धार पा रहे थे।

(प्रेषितों के काम 2:46-47)

प्रेषितों के काम 2:42 (ऊपर) यह दर्शाता है कि प्रारंभिक विश्वासियों ने चार बातों में स्वयं को समर्पित किया था:

- **प्रेरितों की शिक्षा:** वे एक साथ सीखते थे।
- **संगति:** वे जीवन को एक साथ साझा करते थे।
- **रोटी तोड़ना:** वे एक साथ रोटी तोड़ते थे। (यह साथ में भोजन करने और/या अध्याय 18 के अनुसार यीशु की मृत्यु को स्मरण रखने की ओर भी संकेत कर सकता है: “मुझे स्मरण रख कर यह करो।”)
- **प्रार्थना:** वे एक साथ प्रार्थना करते थे।

इब्रानियों 10:24-25 (ऊपर) में यह संकेत मिलता है कि **एक साथ इकट्ठा होने** का मुख्य उद्देश्य **एक-दूसरे को प्रेम और भले कार्यों के लिए उत्तेजित करना** तथा **एक-दूसरे को समझाना** है।

कृपया कुछ अन्य पदों पर विचार करें:

मसीह का वचन आप में भरपूर मात्रा में वास करे; सारी बुद्धि में एक-दूसरे को भजन, स्तुति-गान और आत्मिक गीतों के द्वारा सिखाएँ और चेतावनी दें, तथा अपने हृदय में अनुग्रह सहित प्रभु के लिए गाएँ। (कुलुस्सियों 3:16)

इसलिए एक-दूसरे को समझाएँ और एक-दूसरे का निर्माण करें, जैसा आप करते भी हैं। (1थिस्सलुनीकियों 5:11)

अपने पापों को एक-दूसरे के सामने स्वीकार करो और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करो, ताकि तुम चंगे हो सको। (याकूब 5:16)

यदि आपके अन्य विश्वासियों के साथ अच्छे संबंध नहीं हैं, तो मैं आपको ऐसे संबंध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति अद्वितीय है, अतः विशेष दिशा-निर्देश देना कठिन है। इस विषय में परमेश्वर से विवेक बुद्धि माँगें। जब आप अन्य विश्वासियों के साथ **एकत्रित होने** के विभिन्न विकल्पों पर विचार करें, तो ध्यान रखें कि किसी विशेष विश्वासियों के समूह की आत्मिक सामर्थ्य प्रायः उसमें शामिल स्थानीय लोगों और स्थानीय नेतृत्व पर अधिक निर्भर करती है, बजाए उस बड़े संगठन के, जिसका वे भाग हो सकते हैं। ऐसे नेताओं को खोजिए जो यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हों:

परन्तु यीशु ने उन्हें पास बुला कर कहा, “तुम जानते हो कि राष्ट्रों के शासक उन पर प्रभुत्व करते हैं, और उनके बड़े लोग उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न हो; परन्तु जो भी तुम में बड़ा बनना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। जो भी तुम में प्रथम बनना चाहे, वह तुम्हारा दास बने, जैसे मनुष्य का पुत्र सेवा कराने नहीं, परन्तु सेवा करने और बहुतों के लिए अपना जीवन बदले में देने आया।” (मत्ती 20:25-28)

आगे मनन के लिए

क्या आपके अन्य विश्वासियों के साथ मजबूत संबंध हैं?

संबंधों को विकसित या दृढ़ करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

सभोपदेशक 4:9-12: दो एक से बेहतर हैं।

रोमियों 16:17-18: उनसे सावधान रहें जो फूट डालते हैं।

1कुरिन्थियों 14:26-31: जब आप एक साथ इकट्ठा होते हैं।

2कुरिन्थियों 6:14-18: विश्वासियों और अविश्वासियों।

अध्याय 27 आज्ञा मानना

“यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाएँ मानो।”

(यूहन्ना 14:15)

इसी से हमें पता चलता है कि हम उसे जानते हैं: यदि हम उसकी आज्ञाएँ मानते हैं। जो कहता है, “मैं उसे जानता हूँ,” और उसकी आज्ञाएँ नहीं मानता, वह झूठा है और उसमें सत्य नहीं है। परन्तु परमेश्वर का प्रेम उसमें सिद्ध हुआ है जो उसका वचन मानता है। इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसमें हैं: जो कहता है कि वह उसमें रहता है, उसे स्वयं भी वैसे ही चलना चाहिए जैसे वह चला।

(1यूहन्ना 2:3-6)

ऐसा हुआ कि जब वह ये बातें कह रहा था, तो भीड़ में से एक स्त्री ने ऊँचे स्वर में उससे कहा, “धन्य है वह गर्भ जिसने तुझे जन्म दिया, और वे स्तन जिन्होंने तुझे दूध पिलाया!” परन्तु उसने कहा, “इसके विपरीत वे धन्य हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसे मानते हैं।”

(लूका 11:27-28)

परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता हमारे मोक्ष का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके मोक्ष नहीं पाते, बल्कि हम इसलिए आज्ञा मानते हैं क्योंकि हमें मोक्ष प्राप्त हुआ है। जैसा कि हमने पहले देखा है, परमेश्वर के प्रति प्रेम का स्वाभाविक परिणाम आज्ञाकारिता है:

यीशु ने उससे उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम करता है, तो वह मेरे वचन को मानेगा। मेरा पिता उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आकर उसके साथ निवास करेंगे। जो मुझसे प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन को नहीं मानता। जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, परन्तु पिता का है जिसने मुझे भेजा।” (यूहन्ना 14:23-24)

क्योंकि परमेश्वर के प्रति प्रेम यही है कि हम उसकी आज्ञाएँ मानें। (1यूहन्ना 5:3)

हमें व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों का उदाहरण नहीं अपनाना चाहिए। यीशु ने मत्ती 23 में उन्हें ताड़ना दी, क्योंकि वे केवल बाहरी धार्मिकता पर ध्यान देते थे, न कि सच्ची आंतरिक धार्मिकता पर। धोखा न खाएं; परमेश्वर आपके हृदय को जानता है। परमेश्वर चाहते हैं कि आपके पास वह आंतरिक धार्मिकता हो, जो केवल उन्हीं से प्राप्त होती है:

क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी शरीर उसकी दृष्टि में धर्मी नहीं ठहर सकेगा; क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का ज्ञान होता है। परंतु अब व्यवस्था से अलग, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता भी देते हैं; यह परमेश्वर की वही धार्मिकता है, जो यीशु मसीह में विश्वास करने से उन सब पर और सब के लिए है जो विश्वास करते हैं। (रोमियों 3:20-22)

मेरे पास अपनी कोई धार्मिकता नहीं है, जो व्यवस्था से है, परंतु वह जो मसीह में विश्वास के द्वारा है—अर्थात् वह धार्मिकता, जो परमेश्वर की ओर से विश्वास के द्वारा प्राप्त होती है। (फिलिप्पियों 3:9)

हम परमेश्वर के बुलावे के अनुसार जीवन जी रहे हैं या नहीं, यह हमारी आत्मिक सेहत का माप है। अपने जीवन का विचार करें। पिछले कुछ अध्यायों के विषय में आप कैसे कर रहे हैं?

- क्या आपके कार्य यह दिखाते हैं कि आप अपने पड़ोसी से प्रेम करते हैं?
- क्या आप उन लोगों को क्षमा करें जो आपके विरुद्ध पाप करते हैं?
- क्या आप परमेश्वर की उपासना करते हैं, आनन्दित होते हैं, और धन्यवाद करते हैं?
- क्या आप सभी अवसरों पर प्रार्थना करते हैं?
- क्या आप परमेश्वर के वचन से प्रेम करते हैं? क्या आप उसमें समय बिताते हैं?
- क्या आपकी अन्य विश्वासियों के साथ संगति है?
- क्या आप हर बात में परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहते हैं?

यदि आप स्वयं को इनमें से अधिकांश बातों में कमजोर पाते हैं, तो मैं आपको यह सलाह दूँगा कि आप अध्याय 16 “उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?” पर पुनर्विचार करें और यह सुनिश्चित करें कि आपने परमेश्वर के अब्दुत अनुग्रह को समझा है, जो अगले खंड का विषय है।

आगे मनन के लिए

रोमियों 6:16-23: धार्मिकता के दास।

2कुरिन्थियों 13:5: अपने आप को परखें।

फिलिप्पियों 3:1-16: परमेश्वर से धार्मिकता।

इब्रानियों 10:26-31: यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें...

भाग 3: वे बातें जो परमेश्वर करते हैं

भाग 2 में हमने उन बातों पर ध्यान केंद्रित किया जिन्हें हमें करना है। भाग 3 उन बातों पर केंद्रित है जिन्हें परमेश्वर करते हैं, या वे जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही कर दिया है। विशेष रूप से, हम उस अनुग्रह को देखेंगे जो परमेश्वर उन सभी को देते हैं जो यीशु का अनुसरण करते हैं:

- क्योंकि यीशु ने अपना लहू बहाया, हमारे पाप क्षमा किए गए हैं।
- क्योंकि यीशु मरे, हम पाप से स्वतंत्र किए गए हैं।
- क्योंकि यीशु मृतकों में से जी उठे, हमें नया जीवन मिला है।
- क्योंकि यीशु सर्वोच्च किए गए हैं, पवित्र आत्मा उंडेली गई है।
- हम एक देह, मसीह के शरीर के सदस्य हैं।
- परमेश्वर ने हमें मसीह में हर आत्मिक आशीष दी है।

अध्याय 28

अनुग्रह

उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने अनुग्रह पर अनुग्रह पाया है। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई; अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के द्वारा प्रकट हुए।

(यूहन्ना 1:16-17)

क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह को जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे कारण गरीब बन गया, कि उसकी गरीबी से तुम धनी बन जाओ।

(2कुरिन्थियों 8:9)

क्योंकि परमेश्वर की अनुग्रह प्रकट हुई है, जो सब मनुष्यों के लिए मोक्ष लेकर आई।

(तीतुस 2:11)

“अद्भुत अनुग्रह, कितनी मधुर है यह धुन, जिसने मुझ जैसे पापी को बचा लिया!” (जॉन न्यूटन)। ओह, परमेश्वर की अनुग्रह का यह अद्भुत आश्चर्य!!

अनुग्रह क्या है? अनुग्रह को प्रायः “असमर्थनीय कृपा” या “असमर्थनीय आशीर्वाद” के रूप में परिभाषित किया जाता है। “असमर्थनीय” का अर्थ है कि हम इसके योग्य नहीं हैं; हमने इसे अर्जित नहीं किया। परमेश्वर की अनुग्रह, परमेश्वर द्वारा हमें दी जाने वाली सभी अनेक आशीर्षों में शामिल है; जिनमें से कोई भी हम योग्य नहीं हैं। जब हम कहते हैं कि **“परमेश्वर प्रेम है”** (1यूहन्ना 4:16), तो हम परमेश्वर के स्वभाव और करुणा की चर्चा कर रहे होते हैं। जब हम परमेश्वर की **अनुग्रह** की बात करते हैं, तो हम परमेश्वर द्वारा हमारे लिए उपलब्ध कराई गई व्यवस्थाओं की बात करते हैं: वे बातें जो परमेश्वर हमें देता है, या वे कार्य जो परमेश्वर हमारे लिए करता है। अनुग्रह को परमेश्वर के हमारे प्रति प्रेम के परिणामस्वरूप हमारे लिए उसकी व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है। यह प्रसिद्ध पद इसके द्वारा स्पष्ट होता है:

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र उत्पन्न पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

अपने एकमात्र उत्पन्न पुत्र को देना परमेश्वर की अनुग्रह की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? क्योंकि **परमेश्वर ने संसार से अत्यंत प्रेम किया।**

मोक्ष केवल परमेश्वर की अनुग्रह से ही संभव है:

अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हो, और यह तुम्हारा नहीं है; यह परमेश्वर का वरदान है, कर्मों से नहीं, ताकि कोई भी घमंड न करे। (इफिसियों 2:8-9)

आगामी छह अध्याय परमेश्वर की अनुग्रह के उन विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे, जो उन लोगों को दी गई है जो मोक्ष प्राप्त करते हैं, जो पश्चात्ताप में परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं और यीशु में विश्वास रखते हैं (अध्याय 16 के अनुसार):

- क्योंकि यीशु ने अपना लहू बहाया, हमारे पाप क्षमा किए गए हैं।
- क्योंकि यीशु मरे, हम पाप से स्वतंत्र किए गए हैं।
- क्योंकि यीशु मृतकों में से जी उठे, हमें नया जीवन मिला है।
- क्योंकि यीशु सर्वोच्च किए गए हैं, पवित्र आत्मा उंडेली गई है।
- हम एक देह, मसीह के शरीर के सदस्य हैं।
- परमेश्वर ने हमें मसीह में हर आत्मिक आशीष दी है।

इसी प्रकार, अगला खंड *“वह बातें जो परमेश्वर और हम करते हैं।”* के बारे में है। उन अध्यायों में जिन बातों की चर्चा की गई है, वे सभी भी हमारे प्रति परमेश्वर की अनुग्रह को शामिल करती हैं: विश्वास, आशा, प्रेम, आत्मा के अनुसार चलना, आत्मा का फल, विभिन्न वरदान, और हाथ रखना। परमेश्वर का अनुग्रह प्रत्येक भलाई को सम्मिलित करता है, जो परमेश्वर हमें देता है या हमारे लिए करता है। इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने प्रभु यीशु से प्राप्त अपनी सेवा का सार इस प्रकार व्यक्त किया: ***“परमेश्वर के अनुग्रह की शुभ समाचार की पूरी गवाही देना।”*** (प्रेषितों के काम 20:24)।

हे परमेश्वर, यीशु के द्वारा हमें प्राप्त अनुग्रह के लिए धन्यवाद!

आगे मनन के लिए

लूका 15:11-32: पिता के अनुग्रह का उदाहरण।

रोमियों 5:1-2: विश्वास के द्वारा अनुग्रह में प्रवेश।

रोमियों 5:15-21: प्रचुर अनुग्रह।

रोमियों 12:6-8: अनुग्रह के अनुसार दिए गए भिन्न-भिन्न वरदान।

2कुरिन्थियों 9:8: परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह प्रचुरता से देने में समर्थ है।

गलातियों 5:4: अनुग्रह से गिर जाना।

तीतुस 2:11-15: परमेश्वर की अनुग्रह हमें सिखाती है।

इब्रानियों 4:14-16: आवश्यकता के समय सहायता के लिए अनुग्रह प्राप्त करें।

इब्रानियों 12:14-16: परमेश्वर की अनुग्रह पाने में असफल न हों।

याकूब 4:6, 1पतरस 5:5: परमेश्वर नम्रों को अनुग्रह देता है।

1पतरस 4:10-11: परमेश्वर की अनुग्रह के अच्छे भंडारी बनें।

यहूदा 1:4: परमेश्वर की अनुग्रह को विकृत करना।

अध्याय 29 पापों की क्षमा

धन्य है वह जिसकी अवज्ञा क्षमा कर दी गई है, जिसका पाप ढाँपा गया है। धन्य है वह मनुष्य जिसके लिए प्रभु अधर्म को अभिप्राय नहीं ठहराते, और जिसकी आत्मा में कोई कपट नहीं है।

(भजन 32:1-2)

उसी में हमें उसका लहू बहाए जाने के द्वारा हमारा उद्धार, हमारे अपराधों की क्षमा, उसकी अनुग्रह की धन्यता के अनुसार प्राप्त हुई है।

(इफिसियों 1:7)

हमारे पापों की परमेश्वर द्वारा क्षमा प्राप्त होना कितना महान आशीर्वाद है! यीशु ने हमारे लिए क्षमा मिलने हेतु कितना अद्भुत बलिदान दिया! परमेश्वर की अनुग्रह कितनी अद्भुत है!

जब कोई हमारे विरुद्ध पाप करता है, तो उसे क्षमा करना हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है (अध्याय 22 के अनुसार)। लेकिन, हमारा एक-दूसरे को क्षमा कर देना हमें मोक्ष नहीं दिलाता; पर परमेश्वर की हमारे प्रति क्षमा ही मोक्ष को संभव बनाती है। यह केवल परमेश्वर ही कर सकता है।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारे पापों की क्षमा केवल इस कारण संभव है क्योंकि यीशु ने हमारे लिए अपना लहू बहाया:

लहू बहाए बिना कोई क्षमा नहीं होती। (इब्रानियों 9:22)

क्योंकि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करना असंभव है। (इब्रानियों 10:4)

वह प्याला लेकर धन्यवाद करता है और उन्हें देता है, और कहता है, "तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह नये वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है।" (मत्ती 26:27-28)

यह परमेश्वर की अनुग्रह के कारण, और यीशु के अपने लहू बहाने के कारण है, कि हमारे पापों की क्षमा हो सकती है। हम परमेश्वर से क्षमा पाने के लिए स्वयं कुछ भी नहीं कर सकते। यह हमें परमेश्वर से प्रभु यीशु में विश्वास के द्वारा स्वतंत्र रूप से प्राप्त होती है।

यद्यपि यीशु का बलिदान सबके सभी पापों की क्षमा के लिए पर्याप्त है, फिर भी यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति के पाप क्षमा नहीं हुए हैं, और न ही हर किसी के पाप क्षमा

किए जाएंगे। पापों की क्षमा परमेश्वर से उन लोगों को दिया गया एक वरदान है, जो उद्धार पाए हैं, जो परमेश्वर की ओर पश्चाताप में लौटते हैं और यीशु में विश्वास करते हैं (अध्याय 16 के अनुसार)। हम में से प्रत्येक को अपने पापों की क्षमा के लिए **प्रभु यीशु में विश्वास** करना आवश्यक है (प्रेषितों के काम 16:31), अन्यथा परमेश्वर का क्रोध हमारे ऊपर बना रहता है:

“जो पुत्र पर विश्वास करता है उसके पास अनन्त जीवन है, परन्तु जो पुत्र की आज्ञा नहीं मानता, वह जीवन को न देखेगा; वरन् परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।” (यूहन्ना 3:36)

इसके अतिरिक्त, यदि (या जब) हम यीशु के अनुयायी बनने के बाद पाप करते हैं, तो हमें अपने पाप परमेश्वर के समक्ष स्वीकार करना चाहिए:

यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है कि वह हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सारी अधर्मिता से शुद्ध करे। (1यूहन्ना 1:9)

अंत में, पापों की क्षमा वह मुख्य शुभ समाचार है जिसे प्रचारित किया जाना है:

तब उसने उनकी बुद्धि खोल दी, ताकि वे धर्मग्रंथ को समझ सकें। उसने उनसे कहा, “जैसा लिखा है, और जैसा आवश्यक था कि मसीह दुःख उठाए और तीसरे दिन मरे हुआं में से जी उठे, और उसके नाम से सभी जातियों में, यरूशलेम से आरंभ करके, पश्चाताप और पापों की क्षमा का प्रचार किया जाए।” (लूका 24:45-47)

धन्यवाद, परमेश्वर, आपने यीशु के द्वारा हमारे सारे पापों को क्षमा किया!

आगे मनन के लिए

मत्ती 6:14-15: क्योंकि यदि तुम मनुष्यों के पाप क्षमा करो...

मरकुस 2:1-12, लूका 5:17-26: “पापों को कौन क्षमा कर सकता है...?”

प्रेषितों के काम 10:43: उसके नाम से पापों की क्षमा।

प्रेषितों के काम 26:15-18: कि वे पापों की क्षमा प्राप्त करें।

कुलुस्सियों 1:13-14: क्योंकि उसने हमें छुड़ाया है...

अध्याय 30 पाप से स्वतंत्र किया गया

हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्य उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर नष्ट किया जाए, जिससे हम अब पाप की दासता में न रहें। क्योंकि जो मर गया है, वह पाप से स्वतंत्र हो गया है।

(रोमियों 6:6-7)

क्योंकि जो मृत्यु उसने मरी, उसने एक ही बार पाप के लिए मरी; पर जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। इसी प्रकार, अपने आप को भी पाप के लिए मरा हुआ, परंतु मसीह यीशु में हमारे प्रभु के लिए जीवित समझो। इसलिए अपने नश्वर शरीर में पाप को राज्य न करने दो, कि तुम उसकी अभिलाषाओं में उसकी आज्ञा मानो।

(रोमियों 6:10-12)

हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; परन्तु जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह अपनी रक्षा करता है, और दुष्ट उसे छू नहीं सकता। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं, और संपूर्ण संसार दुष्ट के अधिकार में पड़ा है।

(1यूहन्ना 5:18-19)

परमेश्वर से उत्पन्न होने से पूर्व, हम सब दुष्ट के अधिकार में थे; हम पाप की दासता में थे। पश्चात्ताप और विश्वास (अध्याय 16) के द्वारा, हम परमेश्वर से उत्पन्न होते हैं और पाप से स्वतंत्र किए जाते हैं!

पाप की क्षमा मुख्यतः यीशु के बहाए गए लहू से संबंधित है (पूर्ववर्ती अध्याय अनुसार)। परन्तु पाप की शक्ति से उद्धार मुख्यतः यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान से संबंधित है। हम विशेष रूप से इस अध्याय में यीशु की मृत्यु पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और यह बताते हैं कि किस प्रकार यीशु की मृत्यु में उसके साथ एक होने से हमें पाप की शक्ति से मुक्ति मिलती है।

पाप से स्वतंत्रता मुख्य रूप से परमेश्वर की अनुग्रह का भाग है। यीशु के माध्यम से, परमेश्वर ने अपने लोगों को पाप के आधिपत्य से स्वतंत्र कर दिया है। पाप की शक्ति टूट चुकी है। फिर भी, हमें अब भी यह सीखना है और चुनना है कि हम पाप के सेवक न बनकर, परमेश्वर के सेवक के रूप में कैसे जीवन बिताएँ, जैसा कि धर्मग्रंथ रोमियों 6:15-23 में बलपूर्वक कहा गया है।

अपने आपको यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ जोड़ना, हमारे ऊपर पाप के

आधिपत्य की समस्या का समाधान करता है। हम जानते हैं कि **हमारा पुराना मनुष्य उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया** (रोमियों 6:6)। उसकी मृत्यु हमारी अपनी मृत्यु है, जो हमें पाप के आधिपत्य से स्वतंत्र करती है:

क्योंकि जो मर गया, वह पाप से मुक्त हो गया है। (रोमियों 6:7)

पौलुस का रोमियों को पत्र उन कुछ मुख्य बिंदुओं को दर्शाता है, जो पाप के अधिकार से स्वतंत्रता को व्यावहारिक वास्तविकता बनाने के लिए आवश्यक हैं:

- हमें ये बातें **जाननी** चाहिए (जैसा ऊपर रोमियों 6:6-7 में लिखा है)।
- हमें अपने आपको यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकीकृत करना चाहिए:
इस प्रकार, अपने आपको भी पाप के लिए मरा हुआ, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में हमारे प्रभु के द्वारा जीवित समझो। (रोमियों 6:11)
- हमें अपने आपको परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करना है:
और अपने सदस्यों को पाप के अधर्म के हथियारों के रूप में प्रस्तुत न करो, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करो जैसे कि तुम मृत्यु में से जीवित किए गए हो, और अपने सदस्यों को परमेश्वर के लिए धार्मिकता के हथियारों के रूप में प्रस्तुत करो। (रोमियों 6:13)
- हमें जीवन की नवीनता में चलना है:
हम उसके साथ बपतिस्मे के द्वारा मृत्यु में गाड़े गए, ताकि जैसा मसीह पिता की महिमा से मरे हुएों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी जीवन की नवीनता में चलें। (रोमियों 6:4)

(यदि आपको पाप की शक्ति से मुक्त जीवन जीने के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो, तो कृपया नीचे दिए गए पुस्तक संदर्भ देखें।)

धन्यवाद परमेश्वर, कि आपने हमें यीशु के माध्यम से पाप से मुक्त किया!

आगे मनन के लिए

यूहन्ना 8:34-36: जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।

रोमियों अध्याय 5 से 8: पाप और धार्मिकता।

गलातियों 5:1-4: मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है।

कुलुस्सियों 3:1-10: क्योंकि तुम मर गए हो।

पुस्तक संदर्भ: “बंधन-विनाशक” नील एंडरसन द्वारा।

पुस्तक संदर्भ: “क्रूस का रहस्य” एंड्रयू मरे द्वारा; 32-दिवसीय भक्ति-पुस्तिका; इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध।

अध्याय 31 परमेश्वर से जन्मे

**जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह हैं, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।
जो कोई पिता से प्रेम करता है, वह उससे उत्पन्न संतति से भी प्रेम करता है।**

(1यूहन्ना 5:1)

**वह अपनी जाति में आया, और उसके अपने लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया।
परन्तु जितनों ने उसे स्वीकार किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान बनने का
अधिकार दिया; अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं, जो न तो लहू से,
न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।**

(यूहन्ना 1:11-13)

**हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं, जिन्होंने अपनी महान दया
के अनुसार हमें जीवित आशा के लिए, यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान के
द्वारा नया जन्म दिया।**

(1पतरस 1:3)

ना केवल हमारे पाप परमेश्वर की अनुग्रह द्वारा क्षमा किए गए हैं (अध्याय 29 के अनुसार), और हम पाप के अधिकार से छुड़ाए गए हैं (अध्याय 30), बल्कि हमें परमेश्वर से नया जीवन भी मिलता है! जब हम उद्धार प्राप्त करते हैं, तो हम **परमेश्वर से उत्पन्न** होते हैं। यह नया जन्म हमें **यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान** के द्वारा (1पतरस 1:3) प्राप्त होता है। क्योंकि यीशु मृतकों में से जीवित हुए, इसलिए जो कोई उनका अनुसरण करता है, उसे नया जीवन दिया जाता है। आदम से मिली हमारी आत्मिक मृत्यु (अध्याय 3) आत्मिक जीवन से बदल दी जाती है!

हमारे भीतर नए आत्मिक जीवन की आवश्यकता हमारे उद्धार से पहले हमारे जीवन में पाप के प्रभुत्व से स्पष्ट हो जाती है:

तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे, जिनमें तुम कभी इस संसार की रीति के अनुसार चलते थे। (इफिसियों 2:1-2)

परन्तु परमेश्वर, जो दया में धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया, उसने जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जीवित किया—अनुग्रह से ही तुम उद्धार पाए हो। (इफिसियों 2:4-5)

नया जन्म लेना परम आवश्यकता है, यह यीशु स्पष्ट करते हैं:

यीशु ने उसे उत्तर दिया, “मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जब तक कोई नया जन्म

न पाए, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।” (यूहन्ना 3:3)

“नया जन्म” या “परमेश्वर से उत्पन्न” या “मसीह के साथ जीवित किए गए” (आदि) का अनुभव विश्वासियों में बहुत भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। कुछ लोगों के लिए यह एक अचानक और सामर्थी अनुभव होता है, जो एक निश्चित निर्णय के परिणामस्वरूप मिलता है। कुछ लोगों के लिए यह प्रक्रिया अधिक क्रमिक प्रतीत हो सकती है। हर व्यक्ति के लिए नया जन्म पाने का मार्ग किसी प्रकार परमेश्वर की ओर लौटना (पश्चात्ताप) और किसी प्रकार यीशु में विश्वास उत्पन्न करना (अध्याय 16 अनुसार) आवश्यक है।

धर्मग्रंथ में **नया जन्म** किस प्रकार घटित होता है, यह बहुत स्पष्ट नहीं है। यीशु **नया जन्म** की तुलना पवन से करते हैं। हो सकता है हम इसे समझ न सकें, परंतु हमें यह ज्ञात होता है कि यह होता है:

“यह मत चकित हो कि मैंने तुझसे कहा, ‘तुझे नया जन्म लेना अवश्य है।’ पवन जहाँ चाहता है वहाँ बहता है और तू उसकी ध्वनि सुनता है, पर नहीं जानता कि वह कहाँ से आता है और कहाँ जाता है। ऐसा ही हर एक है जो आत्मा से जन्मा है।” (यूहन्ना 3:7-8)

आपके विषय में क्या? क्या आप **परमेश्वर से उत्पन्न** हुए हैं? यदि नहीं, या यदि आप निश्चित नहीं हैं, तो मैं आपको अध्याय 16 “उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?” पढ़ने की सलाह देता हूँ।

यदि आप पहले से ही **परमेश्वर से उत्पन्न** हैं, तो मेरे साथ कहें: धन्यवाद परमेश्वर, कि आपने हमें **मसीह के साथ जीवित** किया है!

आगे मनन के लिए

रोमियों 5:12-21: आदम के द्वारा मृत्यु; यीशु के द्वारा जीवन।

रोमियों 6:13: मृत्यु से जीवन में लाए गए।

2कुरिन्थियों 5:17: एक नई सृष्टि।

इफिसियों 2:1-7: पाप में मरे हुए; मसीह के साथ जीवित किए गए।

तीतुस 3:4-7: पुनर्जनन का स्नान।

1पतरस 1:22-23: आप नया जन्म पाए हैं।

1यूहन्ना 3:9, 4:7, 5:4, 5:18: परमेश्वर से जन्मे।

1यूहन्ना 3:14: मृत्यु से जीवन में प्रवेश किया है।

1यूहन्ना 5:11-12: जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है।

अध्याय 32

पवित्र आत्मा का वरदान

यूहन्ना ने सबको उत्तर दिया, “मैं तो तुम्हें केवल पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परंतु वह जो मुझसे अधिक सामर्थी है, आ रहा है, मैं उसके जूते का फीता खोलने के योग्य भी नहीं हूँ।” वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

(लूका 3:16)

“यदि कोई प्यासा है, तो वह मेरे पास आए और पिए! जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि धर्मग्रंथ ने कहा है, उसके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।” उसने आत्मा के विषय में यह कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले प्राप्त करने वाले थे। क्योंकि पवित्र आत्मा अभी तक दिया नहीं गया था, क्योंकि यीशु की अभी महिमा नहीं हुई थी।

(यूहन्ना 7:37-39)

इसलिये वह परमेश्वर के दाहिने हाथ से ऊँचे किए जाने के कारण, और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा पाकर, उसने वही उंडेला है, जो तुम अब देख और सुन रहे हो।

(प्रेषितों के काम 2:33)

पतरस ने उनसे कहा, “मन फिराओ और तुममें से प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह के नाम में पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।”

(प्रेषितों के काम 2:38)

पवित्र आत्मा कितना अद्भुत वरदान है... हमारे भीतर वास करने वाली परमेश्वर की आत्मा! परमेश्वर की अनुग्रह कितनी अद्भुत है!

पवित्र आत्मा का वरदान सभी विश्वासियों के लिए है:

क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे लिए, तुम्हारे बाल-बच्चों के लिए, और जितने दूर हैं, उन सभी के लिए भी है, जिन्हें हमारे परमेश्वर प्रभु अपने पास बुलाएँगे। (प्रेषितों के काम 2:39)

पवित्र आत्मा का उंडेला जाना यीशु के द्वारा हुआ, और यह यीशु के “परमेश्वर के दाहिने हाथ से ऊँचे किए जाने” का परिणाम है (ऊपर प्रेषितों के काम 2:33 के अनुसार)।

पवित्र आत्मा हमें किन-किन प्रकार से सहायता करता है?

“परन्तु वह सलाहकार, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम में भेजेंगे, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और तुम्हें सब कुछ स्मरण कराएगा जो मैंने तुमसे कहा

है।” (यूहन्ना 14:26)

परन्तु हमने संसार की आत्मा नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से मिली हुई आत्मा को प्राप्त किया है, ताकि हम वे बातें जान सकें, जो परमेश्वर ने हमें निःशुल्क दी हैं। (1कुरिन्थियों 2:12)

अब प्रभु आत्मा है; और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है। (2कुरिन्थियों 3:17)
वह अपनी महिमा की समृद्धि के अनुसार तुम्हें अपनी आत्मा के द्वारा आंतरिक मनुष्यत्व में सामर्थ्य से बल दे। (इफिसियों 3:16)

इन आयतों से हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा हमें सिखाता है, हमें स्मरण दिलाता है, हमारी समझ में सहायता करता है, हमें स्वतंत्रता देता है, और हमें सामर्थ्य प्रदान करता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की प्रजा को विशेष क्षमताएँ भी देता है, जैसा कि 1कुरिन्थियों अध्याय 12 में कहा गया है। यह समझना आवश्यक है कि ये क्षमताएँ अथवा वरदान सभी विश्वासियों को नहीं दिए जाते, अपितु वह इन्हें **“प्रत्येक को पृथक-पृथक अपनी इच्छा के अनुसार देता है।”** (1कुरिन्थियों 12:11)। कुछ लोग सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा सभी सच्चे विश्वासियों को कोई एक विशेष वरदान देता है, अथवा कि कुछ वरदान अब किसी को नहीं दिए जाते। मैं यही पसंद करता हूँ कि वह इन्हें **“प्रत्येक को पृथक-पृथक जैसे वह चाहता है।”** देता है। इस विषय पर अधिक जानने के लिए अध्याय 40 **“भिन्न वरदान”** देखें।

पवित्र आत्मा के वरदान के लिए, परमेश्वर, धन्यवाद!

आगे मनन के लिए

लूका 11:11-13: जो मांगते हैं उन्हें पवित्र आत्मा दिया जाता है।

यूहन्ना 14:15-18, 14:23-27, 16:7-15: सहायक।

यूहन्ना 20:21-23: “पवित्र आत्मा को प्राप्त करो।”

प्रेषितों के काम 2:1-47: पेन्टेकोस्त पर पवित्र आत्मा।

1कुरिन्थियों 3:16-17, 6:18-20: आप परमेश्वर का मन्दिर हैं।

इफिसियों 1:13-14: एक छाप और बंधक। (साथ ही 2कुरिन्थियों 1:21-22, 5:5)

1यूहन्ना 2:20 और 27: पवित्र जन से अभिषिक्त।

1यूहन्ना 4:1-6: आत्माओं की परख करें।

पुस्तक संदर्भ: “गुप्त सामर्थ्य” अथवा “मसीही जीवन और कार्य में सफलता का रहस्य” डी. एल. मूडी द्वारा (एक ही पुस्तक के दो शीर्षक)। इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध।

अध्याय 33

एक देह

जैसे हमारे एक देह में बहुत से सदस्य होते हैं, और सभी सदस्यों का एक ही कार्य नहीं होता, वैसे ही हम, जो बहुत हैं, मसीह में एक देह हैं और व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे के सदस्य हैं।

(रोमियों 12:4-5)

अब आप मसीह का शरीर हैं, और व्यक्तिगत रूप से सदस्य हैं।

(1कुरिन्थियों 12:27)

अन्यजाति भी वारिस हैं, देह के साथी सदस्य हैं, तथा मसीह यीशु में शुभ समाचार के द्वारा उसकी प्रतिज्ञा के सहभागी हैं।

(इफिसियों 3:6)

इसलिए, झूठ को छोड़कर, तुम में से हर एक अपने पड़ोसी से सत्य बोले, क्योंकि हम एक दूसरे के सदस्य हैं।

(इफिसियों 4:25)

परमेश्वर की अनुग्रह से, यीशु के अनुयायी पृथ्वी की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था के सदस्य हैं: **मसीह का शरीर।**

यह स्वाभाविक है कि हम सामान्यतः यह सोचते हैं कि मोक्ष के मुख्य लाभ वे हैं जो परमेश्वर हमारे लिए करते हैं: पाप की क्षमा, पाप की शक्ति से स्वतंत्रता, अनन्त जीवन, और अन्य आशीषें जो हमें मसीह में प्राप्त हैं। परन्तु इसे समझने में हमें देर लगती है कि जब हम यीशु का अनुसरण करते हैं, तो हम में से प्रत्येक संसारव्यापी **मसीह के शरीर** का भाग बन जाते हैं, और हम **व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे के सदस्य** हैं।

मैं इस एक देह की शिक्षा को इस प्रकार समझना पसंद करता हूँ: हम सभी एक विशाल परिवार, परमेश्वर के परिवार, का अंग हैं, और हम प्रत्येक का उत्तरदायित्व है कि हम एक-दूसरे की सहायता करें और उत्साहित करें।

एक देह के सदस्य होना सामान्य मानवीय विभाजनों के विपरीत है। जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है:

यहूदी या यूनानी नहीं, दास या स्वतंत्र नहीं, नर या नारी नहीं; क्योंकि आप सब मसीह यीशु में एक ही हैं। (गलातियों 3:28)

“यहूदी या यूनानी नहीं” का अर्थ है कि सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमियाँ हमें विभाजित नहीं कर सकतीं। **“दास या स्वतंत्र नहीं”** का अभिप्राय है कि स्थिति और वर्ग जैसी बातें हमें विभाजित नहीं कर सकतीं। **“नर या नारी नहीं”** का अर्थ है कि लिंग भी हमें विभाजित नहीं कर सकता।

कृपया कुछ अन्य ऐसे भेदों पर विचार करें, जिन्हें, मेरा विश्वास है कि, परमेश्वर की सच्ची प्रजा के बीच विभाजन का कारण नहीं बनना चाहिए: आयु, धन या गरीबी, शारीरिक योग्यताएँ या अक्षमताएँ, मानसिक योग्यताएँ या अक्षमताएँ, शिक्षा, राष्ट्रियता, विद्यालय संबंध, सामाजिक संबंध, कलीसिया संबंध, और धर्मवैज्ञानिक अंतर।

दुर्भाग्यवश, परमेश्वर की प्रजा प्रायः उपर्युक्त में से एक या अधिक भेदों के कारण विभाजित प्रतीत होती है। प्रिय मित्रों, ऐसा नहीं होना चाहिए। यीशु ने कहा:

“इसी से सब जान लेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो, यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम रखते हो।” (यूहन्ना 13:35)

परमेश्वर हम सबको यह विवेक दें कि हम अधर्मी विभाजनों से दूर रहें, तथा एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करें और सेवा करें जैसे **“एक देह।”**

धन्यवाद, परमेश्वर, कि आपने हमें, अपनी प्रजा को, **एक देह** बनाया।

आगे मनन के लिए

यूहन्ना 10:14-16: एक झुंड।

यूहन्ना 17:9-23: ताकि वे एक हों।

रोमियों 12:16: दीन लोगों के साथ संगति रखें।

रोमियों 16:17-18: उनसे सावधान रहें जो फूट डालते हैं।

1कुरिन्थियों 10:16-17: एक रोटी, एक देह।

1कुरिन्थियों 12:12-31: एक देह, अनेक सदस्य।

2कुरिन्थियों 8:1-15: परमेश्वर की प्रजा के लिए अर्पण।

इफिसियों 4:4-6: एक देह और एक आत्मा।

कुलुस्सियों 3:9-11: न यूनानी, न यहूदी...

याकूब 2:1-9: पक्षपात न करें।

3यूहन्ना 1:5-12: भाइयों का स्वागत करना।

अध्याय 34 हर आत्मिक आशीष

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं, जिन्होंने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर आत्मिक आशीष से आशीषित किया है।

(इफिसियों 1:3)

उसकी दिव्य शक्ति ने हमें जीवन और भक्ति से संबंधित हर एक बात प्रदान की है, उस ज्ञान के माध्यम से जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण से बुलाया है।

(2पतरस 1:3)

यीशु का अनुसरण करने वालों को दी गई परमेश्वर की अनुग्रह में **“मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर आत्मिक आशीष”** शामिल है। इनमें से कुछ आत्मिक आशीषें कौन-कौन सी हैं? इफिसियों 1 में हमारे पास एक सूची है:

- **उसने संसार की स्थापना से पहले हमें उसमें चुन लिया कि हम उसके सामने प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।** (इफिसियों 1:4)

सृष्टि से पहले, परमेश्वर ने यह ठाना कि हम, उसकी प्रजा, **उसके सामने पवित्र और निर्दोष होंगे।** परमेश्वर के सामने यह धर्मी स्थिति अन्य आत्मिक आशीषों के द्वारा संभव है: यीशु के बहाए गए लहू के द्वारा हमारे पापों की क्षमा, और पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म तथा नवीनीकरण के धोने के द्वारा।

- **वह ने हमें अपनी इच्छा की भली प्रसन्नता के अनुसार, यीशु मसीह के द्वारा अपने लिए पुत्रत्व के लिए पूर्व-नियुक्त किया।** (इफिसियों 1:5)

सभी जो यीशु का अनुसरण करते हैं, **पूर्व-नियुक्त** हैं कि वे उसके पुत्रत्व के लिए अपनाए जाएँ, जैसे कि रोमियों 8:23 में लिखा है: **“यहाँ तक कि हम भी अपने भीतर कराहते हैं, देह के उद्धार अर्थात् अंगीकार की प्रतीक्षा करते हैं।”**

- **उसी में हमें उसके लहू के द्वारा उद्धार मिला है, अर्थात् हमारे अपराधों की क्षमा हुई है।** (इफिसियों 1:7)

सभी जो यीशु का अनुसरण करते हैं, उनका उद्धार हो चुका है! अब हम खोए हुए और दोषारोपित नहीं रहे; हमारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं! (जैसा कि अध्याय 29 में चर्चा की गई है)। यीशु ने मेरे और तुम्हारे लिए अपना लहू बहाया, ताकि हमें यह आत्मिक आशीष प्राप्त हो।

- **वह ने हमें अपनी इच्छा का भेद प्रकट किया।** (इफिसियों 1:9)

पुराना नियम के समय में जो बहुत कुछ छिपा हुआ था, वह अब प्रकट कर दिया गया है। अब हम यह समझते हैं कि परमेश्वर का उद्देश्य **“सब बातों को मसीह में—स्वर्ग की बातों और पृथ्वी की बातों को—एकत्र करना है।”** (इफिसियों 1:10)

- **हमें भी उसी में विरासत प्राप्त हुई है, क्योंकि हम उसके उद्देश्य से, जो अपनी इच्छा की सम्मति के अनुसार सब कुछ करता है, पूर्व-नियत किए गए हैं।** (इफिसियों 1:11)

हम **“पूर्व-नियत”** हैं भविष्य की **“विरासत”** के लिए। जैसा कि 1पतरस 1:4 में लिखा है: हमारे पास **“एक अविनाशी, निर्मल और मुरझाने न वाली विरासत सुरक्षित है, जो आपके लिए स्वर्ग में रखी गई है।”** इस विषय में अधिक जानने के लिए अध्याय 15 **“स्वर्ग में आपका प्रतिफल”** देखें।

- **मसीह में आप भी, जब आपने सत्य का वचन—अपने मोक्ष की शुभ समाचार—सुनी और उस पर विश्वास किया, तो आपको प्रतिज्ञा किए गए पवित्र आत्मा द्वारा छाप दी गई, जो हमारी विरासत की प्रतिज्ञा है, परमेश्वर की अपनी संपत्ति के उद्धार के लिए, उसकी महिमा की स्तुति के लिए।** (इफिसियों 1:13-14)

जैसा कि हमने अध्याय 32 में देखा, पवित्र आत्मा हमें सिखाता है, स्मरण कराता है, हमारी समझ में सहायता करता है, हमें स्वतंत्रता देता है, और सामर्थ्य प्रदान करता है। पवित्र आत्मा हमारी विरासत की **प्रतिज्ञा भी है।**

हे परमेश्वर, हमें **मसीह में स्वर्गीय स्थानों में प्रत्येक आत्मिक आशीष** देने के लिए धन्यवाद!

आगे मनन के लिए

इफिसियों 1:1-14: आत्मिक आशीषों के विषय में संपूर्ण परिच्छेद।

रोमियों 8:32: वह हमें सब कुछ भरपूर रूप से देता है।

1पतरस 1:3-9: जीवित आशा के लिए नया जन्म।

भाग 4: वे बातें जो परमेश्वर और हम करते हैं

कुछ बातें ऐसी हैं जिनके विषय में धर्मग्रंथ यह संकेत करता है कि वे साझा उत्तरदायित्व हैं। कुछ पदों से स्पष्ट होता है कि परमेश्वर भी एक भाग निभाते हैं, और अन्य पदों से यह पता चलता है कि हमें भी एक भाग निभाना है। यह आवश्यक है कि हम इन बातों में सक्रिय भूमिका निभाएँ, और साथ ही यह भी जागरूक रहें कि परमेश्वर भी इसमें संलग्न हैं।

अध्याय 35

विश्वास

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर पर विश्वास रखो।”

(मरकुस 11:22)

क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है, उसके द्वारा मैं आप में से प्रत्येक से कहता हूँ कि जैसा तुम्हें सोचना चाहिए, उससे अधिक अपने आप को बड़ा न समझो; परन्तु, संयम से सोचो, जैसा कि परमेश्वर ने प्रत्येक को विश्वास की मात्रा बांटी है।

(रोमियों 12:3)

“मैंने तुम्हें लाभकारी कोई भी बात सुनाने से पीछे नहीं रहा, बल्कि तुम्हें सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर शिक्षा दी, और यहूदियों तथा यूनानियों दोनों के सामने परमेश्वर की ओर पश्चाताप और हमारे प्रभु यीशु की ओर विश्वास का प्रमाण दिया।”

(प्रेषितों के काम 20:20-21)

अध्याय 16 में हमने देखा कि मोक्ष के लिए पश्चाताप और यीशु में विश्वास दोनों आवश्यक हैं। आइए विश्वास को और निकटता से देखें।

विश्वास क्या है?

अब विश्वास उन बातों का निश्चय है जिनकी आशा रखी जाती है, और उन बातों का प्रमाण है जो देखी नहीं जातीं। (इब्रानियों 11:1 YLT)

इस पद से हम समझते हैं कि विश्वास उन बातों में दृढ़ निश्चय है जिन्हें हम प्रत्यक्ष रूप से देख या छू नहीं सकते। इसमें भविष्य की बातों पर विश्वास करना (“**जिनकी आशा रखी जाती है**”) और वर्तमान आत्मिक वास्तविकताओं पर विश्वास करना (“**जो देखी नहीं जातीं**”) दोनों सम्मिलित हैं। हम इस प्रकार का द्वैत इब्रानियों 11:6 में भी देखते हैं:

बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो परमेश्वर के पास आता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है, और वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों 11:6)

यह पद बताता है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें दोनों बातों में **विश्वास** करना आवश्यक है— **“कि वह विद्यमान है”** (यद्यपि हम उसे वर्तमान में नहीं देखते) और कि परमेश्वर **“अपने खोजने वालों का प्रतिफल देने वाला है”** (जो भविष्य में होगा)।

विश्वास उन सत्यों को मानने में सम्मिलित है, जो धर्मग्रंथ में प्रकट की गई हैं, जैसे: यीशु परमेश्वर का पुत्र हैं; यीशु ने हमारे पापों के लिए मृत्यु पाई, मृतकों में से जी उठे, और स्वर्ग पर गए; और जो कोई भी पश्चाताप में परमेश्वर की ओर मुड़ता है और यीशु में विश्वास करता है, वह उद्धार पाएगा।

सच्चे विश्वास के साथ कर्म भी जुड़ा होता है। हम इसे इब्रानियों 11 में देखते हैं, जहाँ कई लोगों का उल्लेख है जिन्होंने **“विश्वास के द्वारा”** वे कार्य किए जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। यीशु में सत्य विश्वास लोगों को यीशु के पास आने, यीशु पर भरोसा रखने और यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। याकूब उस विश्वास को, जिसमें कर्म नहीं है, **“मृत”** कहता है:

मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि उसके पास विश्वास है, परंतु कर्म नहीं हैं, तो उससे क्या लाभ? क्या विश्वास उसे उद्धार दे सकता है? और यदि कोई भाई या बहन नग्न हो और प्रतिदिन के भोजन की आवश्यकता में हो, और तुम में से कोई उनसे कहे, “शांति से जाओ। यदि तुमने कहा, “गरम रहो और तृप्त रहो”; फिर भी उन्हें वे वस्तुएँ नहीं दीं जिनकी शरीर को आवश्यकता थी, तो इसका क्या लाभ है? उसी प्रकार विश्वास भी, यदि उसमें कर्म न हों, तो वह अपने आप में मरा हुआ है। (याकूब 2:14-17)

सच्चा विश्वास आने वाले जीवन की उत्तम बातों की ओर देखता है, न कि केवल इसी जीवन के लाभों पर ध्यान केंद्रित करता है:

ये सब विश्वास में ही मर गए, यद्यपि उन्होंने प्रतिज्ञाएँ प्राप्त न कीं, परंतु उन्हें दूर से देख कर मान लिया और स्वीकार किया, और यह स्वीकार किया कि वे पृथ्वी पर परदेशी और यात्री हैं। क्योंकि जो ऐसे बातें करते हैं, वे यह स्पष्ट कर देते हैं कि वे अपने देश की खोज में हैं। यदि वे उस देश का स्मरण करते, जहाँ से निकले थे, तो लौटने का उन्हें अवसर मिलता। परंतु अब वे एक उत्तम देश, अर्थात् स्वर्गीय देश की इच्छा रखते हैं। इसलिए परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में लज्जा नहीं, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है। (इब्रानियों 11:13-16)

विश्वास के कुछ लाभ इस प्रकार हैं:

- हम परमेश्वर की अनुग्रह द्वारा विश्वास के माध्यम से मोक्ष पाते हैं:

अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हो, और यह तुम्हारा नहीं है; यह परमेश्वर का वरदान है, कर्मों से नहीं, ताकि कोई भी घमंड न करे। (इफिसियों 2:8-9)

- सच्ची धार्मिकता विश्वास से प्राप्त होती है:

**क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से विश्वास तक प्रकट होती है।
जैसा लिखा है, “परन्तु धर्मी विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा।” (रोमियों 1:17)**

- हम परमेश्वर की शक्ति द्वारा विश्वास के माध्यम से सुरक्षित रहते हैं:

धन्य है परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, जिन्होंने अपनी बड़ी दया के अनुसार, हमें यीशु मसीह के मरे हुआओं में से पुनरुत्थान के द्वारा, एक जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया, एक अविनाशी, निर्मल और कभी न मिटने वाली विरासत के लिए, जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है; जो परमेश्वर की शक्ति से विश्वास के द्वारा उस मोक्ष के लिए, जो अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार है, संभाली गई है। (1पतरस 1:3-5)

- विश्वास हमें भय से मुक्ति प्रदान करता है:

वह जाग उठा और वायु को डांटा, और समुद्र से कहा, “शांत हो! स्थिर हो!” तब वायु रुक गई और बड़ी शांति छा गई। वह उनसे कहने लगे, “तुम इतने डरते क्यों हो? तुम्हारा विश्वास क्यों नहीं है?” (मरकुस 4:39-40)

उसमें होकर हमें साहस और आत्मविश्वास के साथ उसके पास आने का अधिकार, हमारे विश्वास के द्वारा मिला है। (इफिसियों 3:12)

- विश्वास चंगाई, चमत्कारों और आत्मिक विजय की ओर ले जाता है:

परन्तु यीशु ने घूमकर उसे देखकर कहा, “बेटी, हिम्मत रख! तेरा विश्वास तुझे चंगा कर चुका है।” और उसी घड़ी वह स्त्री चंगी हो गई। (मत्ती 9:22)

यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस लकवे के रोगी से कहा, “पुत्र, तेरे पाप क्षमा किए गए।” (मरकुस 2:5)

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास हो और तुम संदेह न करो, तो केवल वही नहीं करोगे जो इस अंजीर के पेड़ के साथ हुआ, परन्तु यदि इस पहाड़ से कहो, ‘तू उखड़ जा और समुद्र में गिर जा,’ तो वह हो जाएगा।” (मत्ती 21:21)

क्योंकि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न है, वह संसार पर विजय पाता है। यही वह विजय है जिसने संसार पर विजय पाई है: तुम्हारा विश्वास। (1यूहन्ना 5:4)

- अंत में, हमारा विश्वास समय के साथ बढ़ना चाहिए:

हम परमेश्वर का धन्यवाद देने के लिए सदैव बाध्य हैं, भाइयों, जैसा कि उचित है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास अत्यंत बढ़ता जा रहा है, और तुम में से प्रत्येक का प्रेम एक-दूसरे के प्रति बढ़ता ही जा रहा है। (2थिस्सलुनीकियों 1:3)

और आप क्या? क्या आपका विश्वास बढ़ रहा है? यदि नहीं, तो आपको अपने जीवन में कौन सा परिवर्तन करना चाहिए जिससे आपका विश्वास बढ़े?

आगे मनन के लिए

मरकुस 6:1-6: उनके अविश्वास पर आश्चर्य।

मरकुस 16:14: अविश्वास के कारण उलाहना।

प्रेषितों के काम 26:18: विश्वास के द्वारा पवित्र किए गए।

रोमियों 3:20-22: विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता।

रोमियों 10:13-17: विश्वास सुनने से आता है।

गलातियों 2:16: विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं।

इफिसियों 6:16: विश्वास की ढाल उठा लो।

फिलिप्पियों 3:8-11: विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता।

1थिस्सलुनीकियों 3:9-10: विश्वास में जो कमी है, उसे पूरा करें।

1थिस्सलुनीकियों 5:8: विश्वास को पहन लें।

1तीमुथियुस 1:18-19: डूबी हुई विश्वास।

1तीमुथियुस 6:11-12: विश्वास का अनुसरण करें।

2तीमुथियुस 2:18: नष्ट हुआ विश्वास।

2तीमुथियुस 2:22: विश्वास का पीछा करें।

इब्रानियों 11: विश्वास के महान पुरुषों की दीर्घा।

इब्रानियों 12:2: यीशु, हमारे विश्वास के कर्ता और सिद्धकर्ता।

2पतरस 1:5-8: अपने विश्वास में भरसक प्रयास करो कि उसमें और गुण जोड़े जाएं...

पुस्तक संदर्भ: "अनंत जीवन की नींव के नीचे" थॉमस एडेल द्वारा। भाग 2 में विश्वास की प्रकृति पर चर्चा की गई है। एक निःशुल्क ई-पुस्तक संस्करण

ShalomKoinonia.org पर उपलब्ध हो सकता है।

अध्याय 36

आशा

**अब आशा के परमेश्वर आपको विश्वास में पूरी आनन्द और शान्ति से भर दे,
ताकि आप पवित्र आत्मा की शक्ति से आशा में परिपूर्ण हों।**

(रोमियों 15:13)

**हे मेरे मन, तू क्यों निराश है? तू मुझ में क्यों व्याकुल है? परमेश्वर में आशा रखो!
क्योंकि मैं अब भी उसकी उपस्थिति की उद्धारक सहायता के लिए उसकी स्तुति
करूंगा।**

(भजन 42:5, 42:11, 43:5)

आशा वह है, जो भविष्य की किसी बात से संबंधित होती है, जिसकी हमें अपेक्षा रहती है, किंतु जो अभी हमारे पास नहीं है। हमें दो प्रकार की आशा के बीच अंतर करना चाहिए:

1. उन बातों में आशा जो निश्चित हैं, तथा
2. उन बातों में आशा जो **निश्चित** नहीं हैं।

हम अक्सर उन वस्तुओं के लिए आशा रखते हैं जो निश्चित नहीं हैं, जैसे स्वास्थ्य और सुंदरता की आशा, अधिक धन या संबंधों में सुधार की आशा। जहाँ इन प्रकार की बातों में आशा रखना गलत नहीं है, वहीं धर्मग्रंथ हमें उन बातों में आशा रखने के लिए प्रोत्साहित करता है जो निश्चित हैं। आइए, दो सिद्धांतों पर विचार करें:

प्रथम: हमारी आशा परमेश्वर में और उसकी अटल प्रेमपूर्ण करुणा में होनी चाहिए; कि वह हमारे लिए व्यवस्था करेगा और हमें उद्धार देगा:

इस्राएल, प्रभु में आशा रखो, क्योंकि प्रभु के पास प्रेमपूर्ण करुणा है। उसके पास अत्यधिक उद्धार है। (भजन 130:7)

प्रभु उन्हीं में आनंदित होते हैं जो उनका भय मानते हैं, जो उनकी प्रेमपूर्ण करुणा में आशा रखते हैं। (भजन 147:11)

इस वर्तमान युग में जो धनवान हैं, उनसे कहो कि वे अभिमानी न हों, और अपनी आशा धन की अनिश्चितता पर न रखें, पर जीवित परमेश्वर पर रखें, जो हमें सब कुछ भरपूरता से भोगने के लिए प्रदान करता है। (1तीमुथियुस 6:17)

दूसरा: हमारी अंतिम आशा आने वाले जीवन में है; परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन, जो इस जीवन की कठिनाइयों से मुक्त है:

पौलुस, परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास और उस सत्य के ज्ञान के अनुसार, जो भक्ति के अनुसार है—अनन्त जीवन की आशा में, जिसे परमेश्वर, जो झूठ नहीं बोल सकता, ने समय के आरंभ से पहले वचन दिया था। (तीतुस 1:1-2)

वह ने हमें नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के द्वारा नवीनीकरण के माध्यम से बचाया, जिसे उसने हमारे ऊपर भरपूर रीति से यीशु मसीह हमारे उद्धारकर्ता के द्वारा उंडेला। ताकि हम उसकी अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बन जाएं। (तीतुस 3:5-7)

यदि हमने केवल इसी जीवन में मसीह में आशा रखी है, तो हम सभी मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय हैं। (1कुरिन्थियों 15:19)

आपके विषय में क्या? क्या आपकी आशा परमेश्वर में, उसके अटल प्रेम में, और आने वाले जीवन में है? या आपकी आशा किसी और बात में है?

आगे मनन के लिए

भजन 33:16-22: वे जो उसके अटल प्रेम में आशा रखते हैं।

भजन 146:5-6: जिसकी आशा प्रभु परमेश्वर में है।

नीतिवचन 11:7: उसकी आशा नष्ट हो जाती है।

रोमियों 5:1-5: दुःख आशा उत्पन्न करता है।

रोमियों 8:22-25: क्योंकि इसी आशा में हमें उद्धार मिला।

रोमियों 12:12: आशा में आनन्दित होना।

रोमियों 15:4: ताकि हम आशा रखें।

रोमियों 15:12-13: आशा से परिपूर्ण हो जाओ।

इफिसियों 1:18-19: वह आशा जिससे उसने तुम्हें बुलाया है।

इफिसियों 2:11-12: पहले बिना आशा के।

1थिस्सलुनीकियों 1:3: आशा की स्थिरता।

1तीमुथियुस 4:9-10: जीवित परमेश्वर में आशा।

इब्रानियों 6:17-20: आत्मा के लिए लंगर के समान आशा।

इब्रानियों 11:1: जिस वस्तु की हम आशा करते हैं, उस पर दृढ़ विश्वास।

1पतरस 1:3-5: जीवित आशा में नया जन्म।

1यूहन्ना 3:2-3: हम उसके समान होंगे।

अध्याय 37

प्रेम

हम जानते हैं कि हम मृत्यु से जीवन में पहुँच गए हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम करते हैं। जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में ही रहता है।

(1यूहन्ना 3:14)

प्रियजन, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है; और हर एक जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर से उत्पन्न है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

(1यूहन्ना 4:7-8)

हम उससे प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

(1यूहन्ना 4:19)

आशा हमें निराश नहीं करती, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उस पवित्र आत्मा के द्वारा उंडेला गया है, जो हमें दी गई है।

(रोमियों 5:5)

अध्याय 19 और 20 में हमने सबसे बड़ी आज्ञाओं पर ध्यान केंद्रित किया: परमेश्वर से प्रेम करो, और अपने पड़ोसी से प्रेम करो। यीशु की शिक्षा के संदर्भ में, मुख्य बल इस पर प्रतीत होता है कि हमें स्वयं परमेश्वर और दूसरों से प्रेम करने के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण निर्णय लेना चाहिए। फिर भी, हमारे प्रेम का एक पक्ष स्पष्ट रूप से ऐसा है जो परमेश्वर की ओर से है। जैसा कि उपर्युक्त पद बताते हैं, हमारे एक-दूसरे के प्रति प्रेम का स्रोत परमेश्वर का प्रेम है, और यह उस मोक्ष से गहराई से जुड़ा हुआ है जो उसने हमें स्वतंत्र रूप से प्रदान किया है।

पवित्र आत्मा के “फल” का वर्णन करते समय प्रेम सबसे पहले गिना गया है:

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शांति, धैर्य, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है। (गलातियों 5:22-23)

स्पष्ट है कि बिना पवित्र आत्मा के हम जैसे प्रेम करना चाहिए वैसे दूसरों से प्रेम नहीं कर सकते। इसी प्रकार, हमें फलदायी रहने के लिए यीशु में ही बने रहना आवश्यक है:

“मैं दाखलता हूँ। तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वही बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।” (यूहन्ना 15:5)

हमारा प्रेम अभी वैसा नहीं है जैसा भविष्य में होगा; यह समय के साथ बढ़ता जाना चाहिए:

प्रभु तुम्हें एक-दूसरे के प्रति और सब लोगों के प्रति प्रेम में बढ़ाए और सम्पन्न करे, जैसा हम भी तुम्हारे प्रति करते हैं। (1थिस्सलुनीकियों 3:12)

हम परमेश्वर का धन्यवाद देने के लिए सदैव बाध्य हैं, भाइयों, जैसा कि उचित है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास अत्यंत बढ़ता जा रहा है, और तुम में से प्रत्येक का प्रेम एक-दूसरे के प्रति बढ़ता ही जा रहा है। (2थिस्सलुनीकियों 1:3)

अन्य लोगों से प्रेम करना भी एक ऐसी बात है जिसे हमें स्वयं परमेश्वर ने सिखाया है:

परन्तु भाईचारे के प्रेम के विषय में तुम्हें लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम स्वयं परमेश्वर से एक-दूसरे से प्रेम करना सिखाए गए हो।
(1थिस्सलुनीकियों 4:9)

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जो धार्मिक कार्य प्रेम पर आधारित प्रतीत होते हैं, वे वास्तव में किसी अन्य प्रेरणा से भी उत्पन्न हो सकते हैं:

यदि मैं अपनी सारी वस्तुएँ दरिद्रों को खिला दूँ, और यदि मैं अपना शरीर जलाए जाने के लिए दे दूँ, पर मेरे पास प्रेम न हो, तो उसका मुझे कोई लाभ नहीं। (1कुरिन्थियों 13:3)

आपके विषय में क्या? क्या आपके जीवन में प्रेम स्पष्ट है? क्या यह समय के साथ बढ़ रहा है?

आगे मनन के लिए

1कुरिन्थियों 13: प्रेम का अध्याय। प्रार्थना भाव से विचार करें कि प्रेम के किस पहलू में आप सबसे अधिक दुर्बल हैं। परमेश्वर से विनती करें कि वह आपको दूसरों के प्रति और अधिक प्रेम करने में सहायता दे।

फिलिप्पियों 1:9-11: प्रेम के बढ़ने के लिए प्रार्थना।

1तीमुथियुस 1:7: परमेश्वर ने हमें ... प्रेम की आत्मा दी है।

इब्रानियों 10:24-25: एक-दूसरे को प्रेम के लिए प्रेरित करें।

1पतरस 1:22-23: निष्कपट भ्रातृ प्रेम।

1पतरस 4:8: सबसे बढ़कर, प्रेम करो...

2पतरस 1:5-8: अपने विश्वास में ... प्रेम भी जोड़ने का भरसक प्रयास करो।

अध्याय 38 आत्मा के अनुसार चलना

परन्तु मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, और तुम शरीर की अभिलाषा को पूरा न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरुद्ध लालसा करता है, और आत्मा शरीर के विरुद्ध; और ये एक-दूसरे के विरोधी हैं, जिससे आप वे बातें न करें जो आप करना चाहते हैं। परन्तु यदि आप आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, तो आप व्यवस्था के अधीन नहीं हैं।

(गलातियों 5:16-18)

जो मसीह के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी वासनाओं और इच्छाओं सहित क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के अनुसार जीवित हैं, तो हमें आत्मा के अनुसार चलना भी चाहिए। हमें घमंडी नहीं बनना चाहिए, न एक-दूसरे को उकसाना चाहिए और न एक-दूसरे से डाह करनी चाहिए।

(गलातियों 5:24-26)

परमेश्वर अपने लोगों को अनुग्रहपूर्वक पवित्र आत्मा प्रदान करते हैं। यह उसके अनुग्रह का भाग है जो वह हमें देता है (अध्याय 32 "पवित्र आत्मा का उपहार" के अनुसार)। तथापि, उपर्युक्त पद दर्शाते हैं कि इसमें हमारा भी एक भाग है, कि हमें "आत्मा के अनुसार चलना" है।

पश्चाताप और विश्वास (अध्याय 16) के द्वारा "उद्धार" प्राप्त होना आवश्यक नहीं कि बाहरी धार्मिकता उत्पन्न कर दे। मसीह में बढ़ने की एक प्रक्रिया है; आत्मिक बनने की भी प्रक्रिया है। सीखने की कि कैसे **आत्मा के अनुसार चलना** है। पौलुस बताता है कि कैसे परमेश्वर की प्रजा **शारीरिक** हो सकती है न कि **आत्मिक**।

भाइयों, मैं तुमसे आत्मिक के समान नहीं, बल्कि शारीरिक, अर्थात् मसीह में बच्चों के समान बोल सकता था। मैंने तुम्हें दूध पिलाया, ठोस भोजन नहीं दिया, क्योंकि तुम अब तक तैयार नहीं थे। वास्तव में, अब भी तुम तैयार नहीं हो, क्योंकि तुम अब भी शारीरिक हो। क्योंकि जब तक तुम में डाह, कलह और गुटबाजी है, क्या तुम शारीरिक नहीं हो, और क्या तुम मनुष्यों के मार्ग में नहीं चलते? (1कुरिन्थियों 3:1-3)

आत्मा के अनुसार चलना अपने कठिन प्रयासों से अधिक नहीं है। और न ही इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा हमारा नियंत्रण करती है, और हम कोई भाग नहीं लेते। अध्याय 32 से स्मरण करें कि पवित्र आत्मा हमें सिखाता है, हमें स्मरण दिलाता है, हमारी समझ में सहायता करता है, हमें स्वतंत्रता देता है और हमें सामर्थ्य प्रदान करता है। गलातियों

5:18 (ऊपर) 'आत्मा के द्वारा चलाए जाने' की बात करता है, जैसा कि रोमियों में भी लिखा है: **क्योंकि जितने परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं।** (रोमियों 8:14)। परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलना अर्थात् परमेश्वर की आत्मा का अनुसरण करने का निर्णय लेना; अपनी स्वयं की प्राथमिकताओं को परमेश्वर की प्राथमिकताओं के लिए त्याग देना; अपने तरीके के स्थान पर उसके तरीके से कार्य करना।

यदि हम आत्मा के अनुसार नहीं चलते, तो इसका परिणाम पाप की दासता तथा आत्मिक दुर्बलता के अन्य लक्षणों के रूप में हो सकता है। प्रेरित पौलुस ने इस विषय में अपनी स्वयं की समस्या का वर्णन रोमियों के सातवें अध्याय में किया है। यदि आप अपने आप को वह न करते हुए पाते हैं, जो आप करना चाहते हैं, परंतु वही करते हैं जिसे आप घृणा करते हैं (रोमियों 7:15), तो मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप प्रार्थना पूर्वक रोमियों के अध्याय 5 से 8 (साथ ही नीचे उल्लिखित अन्य पुस्तकों) पर विचार करें।

जैसे-जैसे हम **आत्मा के अनुसार चलते** हैं, हमारे जीवन में **“आत्मा का फल”** प्रकट होने लगेगा, जैसा कि अगले अध्याय में विस्तार से बताया गया है। आत्मा के अनुसार सफलतापूर्वक चलने से वे सत्य भी जीवन में व्यावहारिक रूप से प्रकट होंगे, जिनका उल्लेख रोमियों 8 में किया गया है।

इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, जो शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं, उन पर कोई दोषारोपण नहीं है। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। क्योंकि जो व्यवस्था शरीर की दुर्बलता के कारण असमर्थ रही, उसे परमेश्वर ने पूर्ण किया; उसने अपने स्वयं के पुत्र को पापी शरीर के स्वरूप में और पाप के लिए भेजकर, शरीर में पाप को दण्डित किया, ताकि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो, जो शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं। (रोमियों 8:1-4)

प्रभु, उस विजय के लिए धन्यवाद जो हमारी है जब हम **आत्मा के अनुसार चलते हैं!**

आगे मनन के लिए

रोमियों 7:1-6: आत्मा का नया मार्ग।

रोमियों 8:1-17: आत्मा और शरीर।

1कुरिन्थियों 2:9-16: वह आत्मा जो परमेश्वर से है।

गलातियों 3:1-7; 6:7-8: आत्मा, व्यवस्था और शरीर।

पुस्तक संदर्भ: “Walking in the Spirit” — Kenneth Berding द्वारा।

पुस्तक संदर्भ: “गुप्त सामर्थ्य” — डी. एल. मूडी (इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध)।

अध्याय 39

आत्मा का फल

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शांति, धैर्य, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है।

(गलातियों 5:22-23)

अतः परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और प्रिय जनों के रूप में, करुणा, दया, नम्रता, विनम्रता और सहनशीलता का मन धारण करें।

(कुलुस्सियों 3:12)

मुझ में बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाल अपने आप फल नहीं ला सकती जब तक वह दाखलता में न बनी रहे, वैसे ही तुम भी नहीं, जब तक मुझ में न बने रहो। मैं दाखलता हूँ; तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वही बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

(यूहन्ना 15:4-5)

परमेश्वर की अनुग्रह से, जब हम आत्मा के अनुसार चलते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें आत्मा का फल लाने में समर्थ करता है, जैसा कि ऊपर गलातियों 5:22-23 में लिखा गया है। कई लोगों ने यह ध्यान दिया है कि यह पद्यांश **“आत्मा का फल”** (एकवचन) का उल्लेख करता है, न कि **“आत्मा के फल”** (बहुवचन)। यहाँ मुख्य बात यह है कि जब हम यीशु का अनुसरण करते हैं, तो सूचीबद्ध सभी गुण हमारे जीवन में स्पष्ट रूप से प्रकट होने चाहिए। **आत्मा का फल** परमेश्वर द्वारा दिए गए विभिन्न योग्यताओं (या “वरदानों”) के समान नहीं हैं, जिन्हें अलग-अलग विश्वासियों को विभिन्न रूपों में दिया जाता है (जैसा कि अगले अध्याय में चर्चा की गई है)। **आत्मा का फल** के रूप में सूचीबद्ध गुण किसी न किसी स्तर पर हर विश्वासियों के जीवन में दिखाई देने चाहिए।

धर्मग्रंथ **आत्मा का फल** की तुलना **शरीर के कर्म** से करता है:

अब शरीर के कर्म प्रकट हैं, अर्थात्: व्यभिचार, यौन दुराचार, अशुद्धता, कामुकता, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, कलह, ईर्ष्या, क्रोध के प्रकोप, प्रतिद्वंद्विता, विभाग, कुपंथ, डाह, हत्या, शराबखोरी, दंगल, और इन जैसी बातें; जिसके विषय में मैं तुम्हें पहले से भी चेतावनी देता हूँ, जैसे अब भी देता हूँ, कि जो लोग ऐसी बातें करते हैं, वे परमेश्वर का राज्य प्राप्त नहीं करेंगे। (गलातियों 5:19-

21)

यीशु ने यह सिखाया कि हम झूठे भविष्यद्वक्ताओं को उनके फलों से पहचान सकते हैं:

झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के वस्त्र में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे फाड़ने वाले भेड़िए हैं। उनके फलों से ही तुम उन्हें पहचानोगे। क्या तुम कांटों से अंगूर या ऊंटकटार से अंजीर बटोरते हो? इसी प्रकार, हर अच्छा वृक्ष अच्छा फल उत्पन्न करता है, किंतु बुरा वृक्ष बुरा फल उत्पन्न करता है। अच्छा वृक्ष बुरा फल उत्पन्न नहीं कर सकता, और न ही बुरा वृक्ष अच्छा फल उत्पन्न कर सकता है। हर वह वृक्ष जो अच्छा फल नहीं लाता, काटकर आग में डाल दिया जाता है। इसलिए उनके फलों से ही तुम उन्हें पहचानोगे।” (मत्ती 7:15-20)

ध्यान रखें कि केवल कभी-कभी किसी व्यक्ति के सार्वजनिक कार्यों को देखकर उसके फलों को पहचानना कठिन हो सकता है। **आत्मा का फल** धार्मिक क्रियाएँ नहीं हैं, जैसे कि ज़रूरतमंदों को देना, प्रार्थना करना, उपवास करना, प्रचार करना या भविष्यवाणी करना, दुष्ट आत्माओं को निकालना, या चमत्कार करना (देखें मत्ती 6:1-18, 7:21-23)। ऐसे कार्य मोक्ष प्राप्त और खोए हुए दोनों व्यक्तियों द्वारा किए जा सकते हैं, और ये सच्चे मोक्ष का विश्वसनीय संकेत नहीं हैं।

आपके विषय में क्या? क्या आपका जीवन **आत्मा के फल** द्वारा पहचाना जाता है, या **शरीर के कर्म** द्वारा?

आगे मनन के लिए

मत्ती 12:33-37: वृक्ष को अच्छा बनाओ, तो उसका फल भी अच्छा होगा।

लूका 6:43-45: हर वृक्ष अपने ही फल से पहचाना जाता है।

लूका 13:6-9: वह फल खोजने आया।

यूहन्ना 15:1-8: डाली अकेले अपने आप फल नहीं ला सकती।

रोमियों 7:4-6: परमेश्वर के लिए फल लाओ।

इफिसियों 5:8-12: प्रकाश का फल।

फिलिप्पियों 1:9-11: धार्मिकता के फल से परिपूर्ण।

कुलुस्सियों 1:9-12: हर अच्छे काम में फल लाना।

याकूब 3:17-18: दया और अच्छे फलों से परिपूर्ण।

अध्याय 40 भिन्न-भिन्न वरदान

...हमें दी गई अनुग्रह के अनुसार वरदान अलग-अलग हैं: यदि भविष्यवाणी, तो अपने विश्वास के अनुसार भविष्यवाणी करें; या सेवा, तो सेवा में लग जाएं; या जो सिखाता है, वह अपनी शिक्षा में; या जो समझाता है, वह अपने समझाने में; जो देता है, वह उदारता से दे; जो प्रधानता करता है, वह परिश्रम से करे; जो दया दिखाता है, वह प्रसन्नता से करे।

(रोमियों 12:6-8)

हर एक ने जो वरदान पाया है, उससे परमेश्वर की विविध अनुग्रह के भले भण्डारी होकर एक-दूसरे की सेवा करो।

(1पतरस 4:10)

परमेश्वर अपने लोगों को विभिन्न योग्यताएँ (या "वरदान") प्रदान करता है। परंतु यह हम में से प्रत्येक पर निर्भर है कि परमेश्वर ने हमें जो योग्यताएँ दी हैं, उनसे हम नम्रता से दूसरों की सेवा करें।

दुर्भाग्यवश, परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमताएँ होना आत्मिक परिपक्वता से स्वाभाविक रूप से संबंध नहीं रखता। कोरिन्थ की कलीसिया आत्मिक वरदानों से समृद्ध प्रतीत होती है (1कुरिन्थियों 1:7; 12:4-31, 14:1-40), फिर भी पौलुस उन्हें लिखता है:

भाइयों, मैं तुमसे आत्मिक के समान नहीं, बल्कि शारीरिक, अर्थात् मसीह में बच्चों के समान बोल सकता था। मैंने तुम्हें दूध पिलाया, ठोस भोजन नहीं दिया, क्योंकि तुम अब तक तैयार नहीं थे। वास्तव में, अब भी तुम तैयार नहीं हो, क्योंकि तुम अब भी शारीरिक हो। क्योंकि जब तक तुम में डाह, कलह और गुटबाजी है, क्या तुम शारीरिक नहीं हो, और क्या तुम मनुष्यों के मार्ग में नहीं चलते? (1कुरिन्थियों 3:1-3)

परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदान पापपूर्ण अभिमान का स्रोत बन सकते हैं। पौलुस कोरिन्थियों को यह भी लिखता है:

कौन है जो तुम्हें भिन्न बनाता है? और तुम्हारे पास ऐसा क्या है जो तुमने पाया नहीं है? और यदि तुमने पाया है, तो फिर गर्व क्यों करते हो, जैसे तुमने पाया ही नहीं? (1कुरिन्थियों 4:7)

परमेश्वर के कुछ वरदान सामान्यतः अन्य वरदानों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। धर्मग्रंथ मानव शरीर की उपमा का प्रयोग करता है, ताकि मसीह के शरीर में प्रत्येक व्यक्ति और उसके वरदान के महत्व को दर्शाया जा सके:

आंख हाथ से यह नहीं कह सकती, “मुझे तेरी आवश्यकता नहीं,” और न ही सिर पांव से कह सकता है, “मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।” नहीं, बल्कि वे सदस्य जो शरीर में दुर्बल प्रतीत होते हैं, वे आवश्यक हैं। वे अंग जिन्हें हम कम प्रतिष्ठित समझते हैं, उन पर हम अधिक सम्मान प्रदान करते हैं; और हमारे अप्रस्तुत अंगों में अधिक लज्जा होती है, जबकि हमारे प्रस्तुत अंगों को ऐसी आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर ने शरीर को इस प्रकार रचा कि जो अंग कम महत्त्व का समझा जाता है, उसे अधिक सम्मान दिया जाए, जिससे शरीर में कोई विभाजन न हो, परन्तु सभी सदस्य एक-दूसरे की एक जैसी चिंता रखें।
(1कुरिन्थियों 12:21-25)

धर्मग्रंथ परमेश्वर की प्रजा को एक-दूसरे की प्रेम में सेवा करने की आवश्यकता पर बल देता है। प्रेम के बिना हमारे वरदानों का कोई लाभ नहीं है:

यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलूँ, परन्तु मेरे पास प्रेम न हो, तो मैं बजनेवाला पीतल या झंकारती झांझ बन गया हूँ। यदि मेरे पास भविष्यवाणी का वरदान हो, और मैं सब रहस्यों और सब ज्ञान को जानता हूँ, और यदि मुझे सब विश्वास हो, यहाँ तक कि पर्वतों को हटा सकूँ, परन्तु मेरे पास प्रेम न हो, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ। यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति दीनों को खिलाने के लिए दे दूँ, और यदि मैं अपने शरीर को जलाए जाने के लिए सौंप दूँ, परन्तु मेरे पास प्रेम न हो, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं होता। (1कुरिन्थियों 13:1-3)

आगे मनन के लिए

परमेश्वर से विवेक माँगें कि उसने आपको कौन-सा वरदान (या कौन-कौन से वरदान) दिए हैं, और आप दूसरों की सर्वोत्तम सेवा कैसे कर सकते हैं।

निर्गमन 31:1-6: परमेश्वर योग्यता प्रदान करता है।

व्यवस्थाविवरण 8:17-18: परमेश्वर योग्यता प्रदान करता है।

1कुरिन्थियों 12:4 से 13:3: विभिन्न वरदान, सेवाएँ, कार्य।

1कुरिन्थियों 14:1-40: आत्मिक वरदानों का उचित उपयोग।

अध्याय 41 हाथ रखना

अतः मसीह के प्रारम्भिक सिद्धांतों की शिक्षा को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर बढ़ें—मृत कर्मों से पश्चाताप, परमेश्वर पर विश्वास, बपतिस्मों की शिक्षा, हाथ रखने, मरे हुएओं का पुनरुत्थान, और अनन्त न्याय की नींव को फिर से न डालें। यदि परमेश्वर अनुमति देंगे, तो हम यह अवश्य करेंगे।

(इब्रानियों 6:1-3)

यह इस पुस्तक में जोड़े गए अंतिम अध्यायों में से एक है... मैं इस विषय से संबद्ध नहीं होना चाहता था। मेरे मत में, धर्मग्रंथ **“हाथ रखने”** के विषय में बहुत स्पष्ट नहीं है। मैं चाहता था कि यह पुस्तक केवल सरल और स्पष्ट विषयों तक ही सीमित रहे—वे विषय जिन्हें मुझे लगता है कि मैं ठीक प्रकार से समझता हूँ। फिर भी, इब्रानियों के लेखक इस विषय को **“मसीह के प्रथम सिद्धांतों”** में से एक और हमारी **“नींव”** का भाग (इब्रानियों 6:1-3) बताते हैं। हम इब्रानियों 6:1-3 में उल्लिखित अन्य विषयों को पहले ही कवर कर चुके हैं। यदि धर्मग्रंथ **हाथ रखना** को प्रथम सिद्धांत और नींव कहता है, तो निश्चय ही यह ऐसा है।

यहाँ **हाथ रखना** संबंधी वही एकमात्र नया नियम की शिक्षा दी गई है, जिसकी मुझे जानकारी है:

किसी पर शीघ्रता से हाथ मत रखो। दूसरों के पापों में सहभागी मत बनो। अपने आपको शुद्ध रखो। (1 तीमथियुस 5:22)

धर्मग्रंथ हमें हाथ रखने के कई उत्तम उदाहरण प्रदान करता है। यह अभ्यास चंगाई, आत्मिक वरदान प्राप्त करने, सेवा के लिए नियुक्ति, या परमेश्वर द्वारा किसी अन्य अनुग्रह को प्रदान करने से जुड़ा है। यहाँ कुछ शास्त्रीय उदाहरण दिए गए हैं:

“तुम लेवीयों को प्रभु के सामने उपस्थित करना। इस्राएल की संतान लेवीयों पर अपने हाथ रखें, और हारून लेवीयों को इस्राएल की संतान की ओर से प्रभु के लिए हिलावे की भेंट चढ़ाए, ताकि वे प्रभु की सेवा का कार्य कर सकें।” (गिनती 8:10-11)

मूसा ने वैसे ही किया जैसे प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी। उसने यहोशू को लिया, और उसे एलेआज़र याजक तथा समस्त सभा के सामने खड़ा किया। उसने अपने हाथ उस पर रखकर उसे नियुक्त किया, जैसा प्रभु ने मूसा के द्वारा कहा था। (गिनती 27:22-23)

नून का पुत्र यहोशू बुद्धि की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे। इस्राएल की संतान ने उसकी बात मानी, और जैसा प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही उन्होंने किया। (व्यवस्थाविवरण 34:9)

वह वहाँ कोई बड़ा कार्य नहीं कर सका, केवल कुछ बीमारों पर अपने हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। (मरकुस 6:5)

जब सूर्य अस्त हो रहा था, तो जिनके घर में विविध बीमारियों से पीड़ित कोई था, वे उन्हें उसके पास लाए; और उसने उनमें से हर एक पर अपने हाथ रखे, और उन्हें चंगा किया। (लूका 4:40)

ये वचन सारी भीड़ को प्रिय लगे। उन्होंने स्टीफन को, जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण मनुष्य था, और फिलिप, प्रोखोरुस, निकेनोर, तिमोन, परमेनास, तथा निकोलाउस जो अंताकिया का धर्मान्तरित था, को चुना, जिन्हें उन्होंने प्रेरितों के सामने रखा। जब उन्होंने प्रार्थना की, तब उन्होंने उन पर हाथ रखा। (प्रेषितों के काम 6:5-6)

फिर उन्होंने उन पर हाथ रखा, और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया। (प्रेषितों के काम 8:17)

उस वरदान की उपेक्षा न करें जो आप में है, जो आपको भविष्यवाणी द्वारा और प्राचीनों के हाथ रखने से दिया गया था। (1तीमुथियुस 4:14)

इसी कारण मैं आपको स्मरण दिलाता हूँ कि परमेश्वर का वह वरदान, जो मेरे हाथ रखने के द्वारा आप में है, उसे जागृत करें। (2तीमुथियुस 1:6)

आगे मनन के लिए

“हाथ रखने” के उचित उपयोग के लिए परमेश्वर से बुद्धि मांगें।

भाग 5: वे बातें जो हमें नहीं करनी चाहिए

जिस प्रकार परमेश्वर ने हमें **करने** के लिए कुछ बातें बताई हैं, जैसा कि भाग 2 में चर्चा की गई है, उसी प्रकार परमेश्वर अपने लोगों को कुछ बातें **न करने** के लिए भी कहता है।

यह विषय कुछ असहज है, क्योंकि मोक्ष पाने का एक भाग यह भी है कि हम अब व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। अब हमारा जीवन केवल “यह करो” या “यह मत करो!” के आधार पर नहीं चलता। हमें आत्मा के अनुसार चलने के लिए बुलाया गया है, न कि व्यवस्था के अनुसार। फिर भी, नया नियम स्पष्ट रूप से उन कार्यों का उल्लेख करता है जो यीशु का अनुसरण करने के विपरीत हैं। यदि आपके जीवन में ऐसी बातें हैं जो मोक्ष के विरुद्ध जाती हैं, तो सम्भव है कि आप अभी तक मोक्ष नहीं पाए हैं, या आपकी आत्मिक यात्रा में कोई गंभीर कमी है, जिसे सुधारने की आवश्यकता है।

अध्याय 42

न कर्मों से, न व्यवस्था से

अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हो, और यह तुम्हारा नहीं है; यह परमेश्वर का उपहार है, कर्मों के कारण नहीं, ताकि कोई घमण्ड न कर सके।

(इफिसियों 2:8-9)

क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी शरीर उसकी दृष्टि में धर्मी नहीं ठहर सकेगा; क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का ज्ञान आता है।

(रोमियों 3:20)

यह हमारे पतित स्वभाव का भाग है कि हम किसी न किसी प्रकार मोक्ष को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं; अपनी भलाई या प्रयास के आधार पर स्वयं को अनन्त जीवन के योग्य मानने का प्रयास करते हैं। यह विचार उस मोक्ष के बिल्कुल विपरीत है जो हमें यीशु में मिलता है। हमारा मोक्ष परमेश्वर का वरदान है। कोई भी इसका कभी योग्य नहीं रहा है। किसी ने भी इसे कमाया नहीं है।

यही विशेषता यीशु के द्वारा प्राप्त मोक्ष को अन्य 'धर्मों' से भिन्न करती है। अन्य धर्मों में स्वयं के सुधार एवं अच्छे कार्यों के माध्यम से परमेश्वर को प्रसन्न करना, या किसी प्रकार इस जीवन से ऊपर उठकर कुछ और श्रेष्ठ बनना सम्मिलित है।

दूसरी ओर, यीशु के अनुयायी अपनी किसी भलाई पर निर्भर किए बिना परमेश्वर के पास आते हैं। हम परमेश्वर से क्षमा और मोक्ष, यीशु का बलिदान हमारे पापों के लिए होने के कारण, एक निःशुल्क उपहार के रूप में प्राप्त करते हैं। हम परमेश्वर के द्वारा, नया जन्म और पवित्र आत्मा के उपहार से, धर्मी ठहराए जाते हैं; न कि अपने स्वयं के प्रयासों से। हम अपने प्रयासों से विराम लेना और परमेश्वर में विश्राम करना तथा उस पर भरोसा करना सीखते हैं।

पर अब व्यवस्था से अलग, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। यह वही परमेश्वर की धार्मिकता है, जो यीशु मसीह में विश्वास करनेवालों के लिए और उन सभी पर है जो विश्वास करते हैं। क्योंकि कोई भेद नहीं है, क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से वंचित हैं। और मसीह यीशु में जो उद्धार है, उसी के द्वारा वे उसके अनुग्रह से निःशुल्क धर्मी ठहराए जाते हैं। (रोमियों 3:21-24)

परन्तु प्रायः एक समस्या उत्पन्न होती है। हम अकसर अपने प्रयासों से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर उसे प्रसन्न करने के धार्मिक ढर्रे में लौट जाते हैं। यह हमें फिर से

पाप की दासता में ले जा सकता है। पौलुस ने अपने जीवन में इस समस्या का वर्णन किया है:

मैं एक समय व्यवस्था के बिना जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जीवित हो गया और मैं मर गया। जो आज्ञा जीवन के लिए थी, वही मेरे लिए मृत्यु सिद्ध हुई। क्योंकि पाप ने आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझे छल लिया, और उसी के द्वारा मुझे मार डाला। (रोमियों 7:9-11)

समाधान यह है कि हम **आत्मा के अनुसार चलना** सीखें:

परन्तु मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, और तुम शरीर की अभिलाषा को पूरा न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरुद्ध लालसा करता है, और आत्मा शरीर के विरुद्ध; और ये एक-दूसरे के विरोधी हैं, जिससे आप वे बातें न करें जो आप करना चाहते हैं। परन्तु यदि आप आत्मा के अनुसार चलते हैं, तो आप व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। (गलातियों 5:16-18)

यीशु के लिए जीने का यह मुख्य आधार है: **आत्मा के अनुसार चलना** सीखना। यह गहराई से समझने के लिए कि किस प्रकार **आत्मा के अनुसार चलें**, दिये गये पदों को प्रार्थना सहित मनन करें, जो “आगे और विचार के लिए” शीर्षक के अंतर्गत हैं, तथा अध्याय 38 “आत्मा के अनुसार चलना” का पुनरावलोकन करें।

आपके विषय में क्या? क्या आपने कभी सिर्फ अपने बल पर नियमों का पालन करके परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास किया है?

आगे मनन के लिए

रोमियों 3:9 से 4:25: विश्वास द्वारा धार्मिकता।

रोमियों 6:1 से 8:17: आत्मा के द्वारा जीवन।

गलातियों 1:1 से 6:18: लोग खतना और व्यवस्था पर निर्भर होने के लिए डांटे जाते हैं, बजाय यीशु में विश्वास के।

प्रकाशितवाक्य 2:1-7: प्रेम के बिना अच्छे कार्य।

अध्याय 43 पृथ्वी पर खजाना

“अपने लिए पृथ्वी पर खजाने जमा न करो, जहाँ कीट और जंग खा जाती है, और जहाँ चोर सेंध लगाकर चुरा लेते हैं; परन्तु अपने लिए स्वर्ग में खजाने जमा करो, जहाँ न तो कीट और न ही जंग नष्ट करती है, और न ही चोर सेंध लगाते हैं और चुराते हैं; क्योंकि जहाँ तुम्हारा खजाना है, वहीं तुम्हारा हृदय भी रहेगा।”

(मत्ती 6:19-21)

डरिए मत, हे छोटे झुंड, क्योंकि तुम्हारे पिता की यह शुभ इच्छा है कि वह तुम्हें राज्य प्रदान करे। जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच डालो और ज़रूरतमंदों को वरदान दो। अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने न होते हों, एक ऐसा खज़ाना स्वर्ग में जो कभी समाप्त न हो, जहाँ कोई चोर पास नहीं आ सकता और न ही कोई कीड़ा उसे नष्ट कर सकता है। क्योंकि जहाँ तुम्हारा खज़ाना है, वहीं तुम्हारा हृदय भी रहेगा।

(लूका 12:32-34)

यीशु हमें सांसारिक धन को शाश्वत उद्देश्यों के लिए उपयोग करने का आह्वान करते हैं; कि हम उसे स्वार्थी उद्देश्यों के लिए संग्रहीत न करें। धर्मग्रंथ उनकी निंदा करता है जो धन और शक्ति का उपयोग स्वार्थी उद्देश्यों के लिए करते हैं (याकूब 5:1-6)। जो संपन्न हैं, उन्हें दूसरा आचरण अपनाने की शिक्षा दी गई है:

इस वर्तमान युग के संपन्न लोगों को आज्ञा दो कि वे अभिमानी न बनें, न ही अपनी आशा धन की अनिश्चितता पर रखें, बल्कि जीवित परमेश्वर पर रखें, जो हमें सब कुछ भरपूर आनंद के लिए देता है। वे भलाई करें, भले कार्यों में धनी हों, बांटने के लिए तैयार और साझा करने के लिए इच्छुक रहें। उन्होंने अपने लिए भविष्य के लिए एक उत्तम आधार संचित किया है, ताकि वे अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकें। (1तीमुथियुस 6:17-19)

मेरे लिए, मैं पाता हूँ कि धन प्रबंधन के विषय को उचित रूप से संतुलित करना बहुत कठिन है। एक ओर हमारे पास ऐसे पद हैं जो हमारी आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने की आवश्यकता को प्रमुखता देते हैं, जैसे कि:

“इसलिए चिंता मत करो, यह कहते हुए, ‘हम क्या खाएँगे?’, ‘हम क्या पीएँगे?’ या, ‘हम क्या पहनेँगे?’ क्योंकि इन सब बातों की खोज अन्यजाति करते हैं; क्योंकि तुम्हारे स्वर्गीय पिता जानते हैं कि तुम्हें इन सब बातों की

आवश्यकता है। परन्तु पहले तुम परमेश्वर का राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो; तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें ऊपर से मिल जाएँगी।” (मत्ती 6:31-33)

अन्य पद कार्य की महत्वता पर ज़ोर देते हैं:

यदि कोई अपने घराने के लिए, विशेषकर अपने परिवार के लिए व्यवस्था नहीं करता, तो उसने विश्वास का इंकार किया है और वह अविश्वासी से भी बुरा है। (1तीमुथियुस 5:8)

क्योंकि जब हम तुम्हारे साथ थे, तब हमने तुम्हें यह आज्ञा दी थी: “यदि कोई काम नहीं करना चाहता, तो उसे भोजन न करने दो।” (2थिस्सलुनीकियों 3:10)

और कुछ पद्य संग्रहण की कुछ प्रकार की बुद्धि के विषय में कहते हैं:

बुद्धिमान के घर में बहुमूल्य धन और तेल रहता है, परन्तु मूर्ख मनुष्य उसे निगल जाता है। (नीतिवचन 21:20)

हे आलसी, चूटी के पास जा। उसकी चालों को देख और बुद्धि प्राप्त कर; जो न कोई प्रधान, न निरीक्षक, न अधिकारी रखती है, वही ग्रीष्म ऋतु में अपनी रोटी जुटा लेती है, और कटनी के समय अपने भोजन को इकट्ठा कर लेती है। (नीतिवचन 6:6-8)

आगे मनन के लिए

नीतिवचन 6:9-11: तू कब तक पड़ा रहेगा?

नीतिवचन 30:7-9: न तो मुझे दरिद्रता दे, और न धन दे।

मत्ती 6:19-34: आने वाले कल की चिंता न करें।

लूका 12:13-34: हर प्रकार के लोभ से सावधान रहें।

लूका 16:1-15: बुद्धिमान भण्डारी।

2कुरिन्थियों 9:6-11: आप हर प्रकार से समृद्ध किए जाएंगे।

1थिस्सलुनीकियों 4:11-12: अपने हाथों से कार्य करें।

2थिस्सलुनीकियों 3:10-12: अपनी रोटी स्वयं कमाएँ।

1तीमुथियुस 6:6-10: संतुष्ट रहें।

इब्रानियों 13:5: जो तुम्हारे पास है, उसमें संतुष्ट रहो।

1यूहन्ना 1:9: यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें...

अध्याय 44 यौन अनैतिकता

क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है: आपका पवित्रीकरण, कि आप यौन अनैतिकता से दूर रहें; तुम में से प्रत्येक को चाहिए कि वह अपने शरीर को पवित्रीकरण और आदर के साथ संभाले, न कि वासना की अभिलाषा में, जैसे वे अन्यजाति जो परमेश्वर को नहीं जानते, और यह भी कि इस विषय में कोई किसी भाई या बहन का अनुचित लाभ न उठाए और न ही उसे नुकसान पहुँचाए। क्योंकि प्रभु इन सभी बातों में प्रतिशोध लेने वाले हैं, जैसा कि हमने आपको पहले भी चेतावनी दी थी और गवाही दी थी। क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्धता के लिए नहीं, बल्कि पवित्रीकरण के लिए बुलाया है।

(1थिस्सलुनीकियों 4:3-7)

स्पष्टता से कहूं तो, यौन शुद्धता का क्षेत्र मेरे जीवन में संभवतः सबसे कठिन क्षेत्र रहा है। मुझे लगता है कि इस विषय में मैं कई दृष्टियों से 'सामान्य' ही हूँ। हालांकि, मुझे लगता है कि मुझे कुछ पुरुषों की अपेक्षा अधिक कठिनाइयाँ हैं, क्योंकि यीशु का अनुसरण करने से पहले मैंने अपने मन को अनैतिक कल्पनाओं के पीछे जाने दिया (और कभी-कभी बाद में भी!)। इसी तर्क के अनुसार, संभवतः मेरी कठिनाइयाँ उन अनेक लोगों से कम हैं, जिन्होंने यौन पाप में और अधिक प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया है।

पौलुस को संभवतः ब्रह्मचर्य का वरदान प्राप्त था, फिर भी वह हम में से उन लोगों के साथ सहानुभूति रख सकता था, जिनके पास यह वरदान नहीं है:

फिर भी मैं चाहता हूँ कि सभी लोग मेरी तरह हों। पर प्रत्येक को परमेश्वर से अपना-अपना वरदान मिला है—किसी को इस प्रकार का, और किसी को उस प्रकार का।

परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं से कहता हूँ कि उनके लिए अच्छा है कि वे मेरे समान ही रहें। परन्तु यदि वे अपने को संयमित नहीं कर सकते, तो उन्हें विवाह कर लेना चाहिए। क्योंकि विवाह करना, इच्छा की ज्वाला में जलने से उत्तम है। (1कुरिन्थियों 7:7-9)

पौलुस यह स्वीकार करता है कि यीशु के अनुयायियों के लिए “इच्छा की ज्वाला में जलना” और स्वयं को नियंत्रित करने में कठिनाई होना अस्वाभाविक नहीं है। हमारी यौन इच्छाएँ वही हैं जैसा परमेश्वर ने हमें बनाया। बहुत से, संभवतः अधिकांश, यीशु के अनुयायी अपनी यौन इच्छाओं को सहजता से रोक नहीं सकते। परमेश्वर ने हमें विवाह

और परिवार को बढ़ावा देने के लिए ऐसी इच्छाओं के साथ बनाया है। शैतान हमारे परमेश्वर-द्वारा दी गई इच्छाओं को मोड़कर हमें पाप की ओर ले जाने का प्रयास करता है।

यद्यपि एक उत्तम विवाह संबंध यौन संतुष्टि का मुख्य साधन है, यह अनेक लोगों के लिए तुरंत उपलब्ध विकल्प नहीं होता। जो विवाहित नहीं हैं या किसी कारणवश अपने जीवनसाथी के साथ नहीं हैं (परिस्थितियों या संबंध संबंधी समस्याओं के कारण), यदि आप इस क्षेत्र में स्वयं को नियंत्रित कर सकते हैं, तो आत्मसंयम के इस वरदान के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें। जिन्हें इस विषय में अधिक कठिनाई होती है, मेरी दृष्टि में धर्मग्रंथ आत्म-संतुष्टि की निंदा नहीं करता। यद्यपि आत्म-संतुष्टि ऐसे तरीकों से की जा सकती है, जो पापपूर्ण हैं, मैं नहीं मानता कि यह स्वयं में पाप है। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको दिखाए कि आप किस प्रकार ऐसा जीवन जीएँ जो उसे प्रसन्न करे।

मैं यह विश्वास करता हूँ कि पाप के भी विभिन्न स्तर होते हैं (जैसा कि उत्पत्ति 18:20-21, निर्गमन 32:30-31, 1 शमूएल 2:17, मरकुस 3:28-29 और यूहन्ना 19:11 में वर्णित है)। मुझे विश्वास है कि शारीरिक रूप से व्यभिचार करना, किसी पर वासना की दृष्टि डालने की अपेक्षा बड़ा पाप है, यद्यपि दोनों ही व्यभिचार के रूप हैं (मत्ती 5:27-28)। वास्तव में किसी को बहकाना केवल उसके बारे में सोचने की तुलना में बड़ा पाप है। उसी प्रकार, किसी की हत्या करना केवल उससे बैर रखने की तुलना में बड़ा पाप है। इस विचार को कि "सभी पाप समान हैं", आपको और बड़े पापों में न ले जाने दें। कभी भी किसी बात के बारे में सोचने को, उसे वास्तविक रूप में करने के लिए औचित्य ठहराने में इस विचार का प्रयोग न करें।

अनेक लोग गवाही देते हैं कि छोटे पाप प्रायः बड़े पापों का कारण बनते हैं। सॉफ्टकोर अश्लीलता हार्डकोर अश्लीलता की ओर ले जाती है, जो और भी गंभीर पाप की ओर ले जाती है। **यौन अनाचार से भागो!** (1कुरिन्थियों 6:18)।

आगे मनन के लिए

उत्पत्ति 18:16-19:28: वे सदोम की ओर देख रहे थे।

गिनती 25:1-18: जब इस्राएल शित्तिम में ठहरा था...

यूहन्ना 8:1-11: व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री।

रोमियों 1:18-32: परमेश्वर का क्रोध प्रकट हो रहा है...

1कुरिन्थियों 5:1-13: वास्तव में यह सुनने में आया है...

1कुरिन्थियों 6:9-20: अपने शरीर से परमेश्वर का आदर करो।

1यूहन्ना 1:9: यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें...

अध्याय 45

अहंकार

अहंकार के बाद विनाश होता है, और घमंडी आत्मा के बाद पतन।

(नीतिवचन 16:18)

क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा है जो अपनी ही दृष्टि में बुद्धिमान है? उससे भी अधिक मूर्ख के लिए आशा है।

(नीतिवचन 26:12)

एक-दूसरे के प्रति समान मनोभाव रखो। ऊँचे पदों की अभिलाषा न करो, बल्कि विनम्रों के साथ रहो। अपनी ही समझ में बुद्धिमान मत बनो।

(रोमियों 12:16)

अहंकार मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से एक और कठिन क्षेत्र रहा है, जिसे पार करना चुनौतीपूर्ण रहा।

यह एक कठिन पाप है जिसका सामना करना चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि अंग्रेज़ी भाषा में प्रयुक्त "अहंकार" हमेशा बुरा नहीं होता। कुछ प्रकार का घमंड और अहंकार स्वीकार्य है, जबकि अन्य प्रकार अनुचित हैं। यहाँ अच्छे प्रकार के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

परंतु प्रत्येक व्यक्ति अपने ही कार्य की परीक्षा करे, और तब उसे अपने आप में गर्व करने का कारण मिलेगा, और किसी और में नहीं। (गलातियों 6:4)

जैसा लिखा है, "जो घमंड करता है, वह प्रभु में घमंड करे।" (1कुरिन्थियों 1:31)

पापपूर्ण अभिमान की एक सरल परिभाषा यह है: स्वयं के विषय में जितना सोचना चाहिए, उससे अधिक ऊँचा सोचना। यह प्रायः दूसरों के बारे में जितना सोचना चाहिए, उससे कम सोचने के साथ होता है। जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है:

क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है, उसके द्वारा मैं आप में से प्रत्येक से कहता हूँ कि जैसा तुम्हें सोचना चाहिए, उससे अधिक अपने आप को बड़ा न समझो; परन्तु जैसा परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को विश्वास का परिमाण भाग दिया है, उसी अनुसार संयम से विचार करें। (रोमियों 12:3)

प्रतिस्पर्धा या दम्भ से कुछ न करें, परन्तु विनम्रता में एक-दूसरे को अपने से श्रेष्ठ समझें। (फिलिप्पियों 2:3)

अहंकार ऐसा मूल पाप प्रतीत होता है, जिसने शैतान के पतन का कारण बना। अहंकार संभवतः सम्पूर्ण सृष्टि का प्रथम पाप था (यहाँ तक कि उत्पत्ति 3 में आदम और हव्वा के पाप से भी पहले):

“तेरा हृदय तेरे सौंदर्य के कारण ऊँचा हो गया। तूने अपनी भव्यता के कारण अपनी बुद्धि को भ्रष्ट कर लिया। मैंने तुझे पृथ्वी पर गिरा दिया। मैंने तुझे राजाओं के सामने रख दिया, ताकि वे तुझे देखें।” (यहेजकेल 28:17)

अतः अगुवा निर्दोष होना चाहिए ... नये विश्वासी को न चुना जाए, कहीं वह घमण्ड में आकर शैतान के समान दोष में न गिर जाए। (1तीमुथियुस 3:2, 6)

विनम्रता को सामान्यतः अहंकार के विपरीत माना जाता है:

हाँ, तुम सब विनम्रता को ओढ़ लो और एक-दूसरे के अधीन रहो; क्योंकि “परमेश्वर घमण्डी का विरोध करता है, परन्तु विनम्र को अनुग्रह देता है।”
(1पतरस 5:5)

निश्चय ही वह ठट्टा करने वालों का ठट्टा करता है, परन्तु वह विनम्रों को अनुग्रह देता है। (नीतिवचन 3:34)

जब अहंकार आता है, तब लज्जा भी आती है, परन्तु नम्रता के साथ बुद्धि होती है। (नीतिवचन 11:2)

आपका क्या विषय है? क्या आप अहंकारी हैं या विनम्र?

आगे मनन के लिए

2 इतिहास 26:16-21: राजा उज्जिय्याह का अहंकार।

भजन 10:4-6: अपनी अहंकार में दुष्ट उसे नहीं खोजता...

नीतिवचन 18:12: उसके पतन से पहले...

यिर्मयाह 9:23-24: बुद्धिमान अपने ज्ञान पर घमंड न करे...

यहेजकेल 28:12-19: शैतान का पतन।

दानिय्येल 4:1-37: राजा नबूकदनेस्सर का अहंकार।

1कुरिन्थियों 1:17-31: ताकि कोई घमंड न करे।

1यूहन्ना 1:9: यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें...

अध्याय 46 प्रतिशोध

यह न कहो, "मैं उसके साथ वैसा ही करूंगा जैसा उसने मेरे साथ किया; मैं उसके काम के अनुसार उसे चुका दूंगा।"

(नीतिवचन 24:29)

हे प्रियजनों, आप स्वयं प्रतिशोध न लें, परन्तु परमेश्वर के क्रोध के लिए स्थान दें। क्योंकि लिखा है, "प्रतिशोध मेरा है; मैं ही चुका दूंगा, यह प्रभु कहता है।"

(रोमियों 12:19)

अध्याय 22 में हमने दूसरों को क्षमा करने के महत्व पर विचार किया था। क्षमा न कर पाने से प्रायः प्रतिशोध की इच्छा उत्पन्न होती है। मेरे विचार में, प्रतिशोध लेना क्षमा के बिल्कुल विपरीत है।

रोमियों 12 के एक बड़े अंश पर विचार करें:

किसी का बुराई का बदला बुराई से न चुकाओ। सभी मनुष्यों की दृष्टि में जो आदरणीय है, उसका सम्मान करो। यदि संभव हो, और जितना तुम्हारे पक्ष में हो सके, सब मनुष्यों के साथ मेल से रहो। हे प्रियजनों, आप स्वयं प्रतिशोध न लें, परन्तु परमेश्वर के क्रोध के लिए स्थान दें। क्योंकि लिखा है, "प्रतिशोध मेरा है; मैं बदला लूंगा, यह प्रभु कहते हैं।" इसलिए, यदि तुम्हारा शत्रु भूखा हो, तो उसे भोजन कराओ। यदि वह प्यासा हो, तो उसे पानी पिलाओ; क्योंकि ऐसा करने से तुम उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाओगे।" बुराई से पराजित मत हो, परन्तु भलाई से बुराई पर विजय पाओ। (रोमियों 12:17-21)

बदला लेना दूसरों के प्रति प्रेम में असफल होने का प्रमाण भी है। जब **"अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो"** की आज्ञा पहली बार दी गई थी, तब वह प्रतिशोध न लेने से जुड़ी हुई थी:

"तुम न तो बदला लेना, और न अपनी प्रजा के किसी व्यक्ति के विरुद्ध बैर पालना; परन्तु अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। मैं प्रभु हूँ।"

(लैव्यव्यवस्था 19:18)

पतरस भी प्रतिशोध लेने के विषय को उठाते हैं:

अंत में, तुम सब एक मन के, हमदर्दी रखने वाले, भाईयों के समान प्रेम करने वाले, कोमल हृदय वाले और विनम्र रहो; बुराई का बदला बुराई से या गाली का गाली से न दो; परन्तु इसके विपरीत, आशीष दो, यह जानते हुए कि तुम इसी के लिए बुलाए गए हो, ताकि तुम आशीष के अधिकारी बनो। (1पतरस 3:8-9)

यह विचारणीय है कि परमेश्वर न्याय और प्रतिशोध अपने लिए सुरक्षित रखते हैं:

“प्रतिशोध मेरा है; मैं बदला चुकाऊँगा, प्रभु कहता है।” (रोमियों 12:19)

शायद इसका कारण यह है कि केवल परमेश्वर का ज्ञान ही इतना पर्याप्त है कि वही लोगों का सही न्याय और प्रतिदान कर सकते हैं। अन्य लोगों के बारे में हमारे अपने निर्णय अक्सर हमारे स्वार्थ और अज्ञानता से विकृत हो जाते हैं।

यीशु हमें प्रतिशोध की जगह क्षमा का एक चुनौतीपूर्ण उदाहरण देते हैं:

जब वे उस स्थान पर पहुँचे जिसे “खोपड़ी” कहा जाता है, वहाँ उन्होंने उसे अपराधियों के साथ क्रूस पर चढ़ाया, एक दाहिने और दूसरा बाएँ। यीशु ने कहा, “पिता, इन्हें क्षमा करें, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।”

(लूका 23:33-34)

आपके विषय में क्या? जब आखिरी बार किसी ने आपके साथ बुरा किया, तब आपने क्या प्रतिक्रिया दी थी? प्रतिशोध या क्षमा?

आगे मनन के लिए

न्यायियों 15:1-20: शिमशोन का प्रतिशोध।

नीतिवचन 20:22: यह न कहो, “मैं बुराई का बदला लूँगा।”

मत्ती 5:38-48: आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत।

प्रेषितों के काम 7:59-60: स्टीफन की प्रार्थना।

2थिस्सलुनीकियों 1:5-10: परमेश्वर न्यायी है: वह प्रतिफल देगा...

2तीमुथियुस 4:14-15: प्रभु प्रतिफल देगा...

1यूहन्ना 1:9: यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें...

अध्याय 47

कलह

उन्हें ये बातें स्मरण दिलाओ, और प्रभु के सामने उन्हें यह आदेश दो कि वे ऐसे वचन को लेकर तर्क न करें, जिससे कोई लाभ नहीं, बल्कि सुनने वालों को हानि होती है।

(2तीमुथियुस 2:14)

परन्तु मूर्खतापूर्ण और अज्ञानी प्रश्नों से बचो, यह जानते हुए कि वे कलह उत्पन्न करते हैं। प्रभु के सेवक को झगड़ना नहीं चाहिए, बल्कि सबके प्रति नम्रता रखनी चाहिए, शिक्षा देने में सक्षम और सहनशील होना चाहिए, और नम्रता से विरोध करने वालों को सुधारना चाहिए। संभव है कि परमेश्वर उन्हें पश्चात्ताप प्रदान करें, जो सत्य के पूर्ण ज्ञान की ओर ले जाए, और वे शैतान के फंदे से छूट जाएँ, क्योंकि वे उसकी इच्छा पूरी करने के लिए बंदी बनाए गए थे।

(2तीमुथियुस 2:23-26)

मुझे यह बहुत रोचक लगता है कि यीशु के अनुयायी अक्सर विभिन्न विषयों पर, विशेषकर आत्मिक विषयों पर, एक-दूसरे से गंभीर असहमति रखते हैं। मैं इसे इस बात का प्रमाण मानता हूँ कि हमारी अपनी अनुभव और संस्कृति यह निर्धारित करती है कि हम चीज़ों को किस प्रकार समझते हैं, और यही हमारी समझ की अपूर्णता को भी दर्शाता है। कई सच्चे यीशु के अनुयायियों के अलग-अलग विश्वासों के आधार पर, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि हमारी समझ उतनी पवित्र आत्मा से प्रेरित नहीं है जितना हम सोचते हैं।

धर्मग्रंथ कहता है:

अब हम दर्पण में धुंधला सा देखते हैं, परन्तु तब आमने-सामने। अब मैं आंशिक रूप से जानता हूँ, परन्तु तब मैं पूरी रीति से जानूँगा, जैसे मैं पूरी रीति से पहचाना गया हूँ। (1कुरिन्थियों 13:12)

क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है, उसके द्वारा मैं आप में से प्रत्येक से कहता हूँ कि जैसा तुम्हें सोचना चाहिए, उससे अधिक अपने आप को बड़ा न समझो; परन्तु जैसा परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को विश्वास का परिमाण भाग दिया है, उसी अनुसार संयम से विचार करें। (रोमियों 12:3)

अक्सर हम स्वयं एवं अपने ज्ञान को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हैं। इससे विश्वासियों के मध्य ऐसे तर्क एवं विवाद उत्पन्न हो सकते हैं, जो लाभकारी नहीं होते। हमारे वचन के विषय में कुछ अन्य पदों पर विचार कीजिए:

शब्दों की अधिकता में अवज्ञा की कमी नहीं होती, परन्तु जो अपनी वाणी को रोकता है, वह बुद्धिमान है। (नीतिवचन 10:19)

तुम्हारे मुख से कोई अशुद्ध वचन न निकले, केवल वही निकलना चाहिए जो आवश्यकतानुसार दूसरों के निर्माण के लिए उत्तम हो, जिससे सुनने वालों को अनुग्रह प्राप्त हो। (इफिसियों 4:29)

इसलिए, मेरे प्रिय भाईयो, प्रत्येक व्यक्ति सुनने में शीघ्र, बोलने में धीमा और क्रोध करने में धीमा हो; क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर की धार्मिकता उत्पन्न नहीं करता। (याकूब 1:19-20)

आपके विषय में क्या? क्या आपने हाल ही में किसी से झगड़ा किया? उसका परिणाम क्या रहा?

आगे मनन के लिए

मत्ती 12:33-37: हृदय की अधिकता से...

लूका 6:45: क्योंकि उसके हृदय की अधिकता से...

रोमियों 16:17-18: उनसे सावधान रहें जो फूट डालते हैं।

तीतुस 3:9-11: मूर्खतापूर्ण विवादों से दूर रहें।

याकूब 1:26: अपनी जीभ पर कठोर नियंत्रण रखें।

याकूब 3:1-18: जीभ एक अग्नि है।

1यूहन्ना 1:9: यदि हम अपने पापों को स्वीकार करें...

अध्याय 48 पाप करते रहना

जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप कर नहीं सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न है।

(1यूहन्ना 3:9)

इसी से हमें पता चलता है कि हम उसे जानते हैं: यदि हम उसकी आज्ञाएँ मानते हैं। जो कोई कहता है, "मैं उसे जानता हूँ," और उसकी आज्ञाएँ नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं है।

(1यूहन्ना 2:3-4)

उपरोक्त पद स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि सच्चा मोक्ष जीवन में परिवर्तनशील कार्यों के रूप में प्रकट होता है। दुर्भाग्यवश, कई यीशु के अनुयायी परमेश्वर के **अनुग्रह** द्वारा मोक्ष पर इतना बल देते हैं कि वे मोक्ष के परिणामस्वरूप जीवन बदलने की किसी अपेक्षा का महत्व नहीं रखते। इसी कारण, मैं मानता हूँ कि बहुत से लोग जो वास्तव में मोक्ष नहीं पाए हैं, वे इसके विपरीत विश्वास कर धोखे में रहते हैं।

यूहन्ना के लिए, सच्चे मोक्ष की कसौटी किसी आत्मिक वरदान का होना, कोई विशेष आत्मिक अनुभव प्राप्त करना या केवल सही आत्मिक शब्द कहना नहीं है। यूहन्ना के लिए, मोक्ष का मुख्य प्रमाण परमेश्वर की आज्ञाकारिता है। पुनः, यूहन्ना के इस कथन पर विचार करें:

इसी से हमें पता चलता है कि हम उसे जानते हैं: यदि हम उसकी आज्ञाएँ मानते हैं। जो कोई कहता है, "मैं उसे जानता हूँ," और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं है। (1यूहन्ना 2:3-4)

इब्रानियों के लेखक भी आज्ञाकारिता के विषय में चर्चा करते हैं:

क्योंकि यदि हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद जानबूझकर पाप करते हैं, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान शेष नहीं रहता, बल्कि न्याय की भयानक प्रतिक्षा और उस आग का भयंकर डर रहता है, जो विरोधियों को भस्म कर देगी। (इब्रानियों 10:26-27)

पौलुस भी इस विषय को संबोधित करते हैं:

क्या तुम नहीं जानते कि अधर्मी लोग परमेश्वर का राज्य प्राप्त नहीं करेंगे? धोखा न खाओ। न तो व्यभिचारी, न मूर्तिपूजक, न व्यभिचार करनेवाले, न पुरुष वेश्याव्रती, न समलैंगिक, न चोर, न लोभी, न शराबी, न अपवाद

करनेवाले, न ठग—कोई भी परमेश्वर का राज्य प्राप्त नहीं करेंगे। तुम में से कुछ वैसे थे, परंतु तुम धोए गए; तुम पवित्र किए गए। आप प्रभु यीशु के नाम में, और हमारे परमेश्वर की आत्मा में धर्मी ठहराए गए। (1कुरिन्थियों 6:9-11)

मैं यह दावा नहीं कर रहा हूँ कि यीशु के अनुयायी पूर्ण हैं और कभी पाप नहीं करते। किन्तु मैं यह अवश्य कह रहा हूँ कि हमारे जीवन में पाप अपवाद होना चाहिए, नियम नहीं—विशेषकर जब हम यीशु को अधिक जानने लगते हैं। जैसा कि यूहन्ना भी लिखते हैं:

मेरे प्रिय बच्चों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो। यदि कोई पाप करता है, तो हमारे पास पिता के साथ एक सलाहकार है, यीशु मसीह, जो धर्मी है। और वही हमारे पापों के लिए प्रायश्चित्त बलिदान है, और केवल हमारे ही लिए नहीं, अपितु सारे संसार के लिए भी। (1यूहन्ना 2:1-2)

आपके विषय में क्या? क्या आपके जीवन की पहचान परमेश्वर की आज्ञाकारिता से है, या पाप की आज्ञाकारिता से? यदि आपके जीवन की पहचान अभी भी परमेश्वर की आज्ञाकारिता के स्थान पर पाप की आज्ञाकारिता से होती है, तो मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप अध्याय 16 (मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?), अध्याय 27 (आज्ञा मानना), अध्याय 30 (पाप से स्वतंत्र किए गए), अध्याय 38 (आत्मा के अनुसार चलना), और अध्याय 42 (कर्मों से नहीं, व्यवस्था से नहीं) को पुनः पढ़ें।

आगे मनन के लिए

मत्ती 7:21-27: “प्रभु, प्रभु...”

लूका 6:46-49: “तुम मुझे ‘प्रभु, प्रभु’ क्यों कहते हो...”

रोमियों 6:1-23: क्या हम पाप करते ही रहें?

1कुरिन्थियों 5:9-11: ऐसे व्यक्ति के साथ भोजन भी न करो।

गलातियों 5:19-26: शरीर के काम।

गलातियों 6:1: यदि कोई किसी पाप में पकड़ा जाए।

गलातियों 6:7-10: जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे।

1पतरस 1:14-16: पवित्र बनो।

1पतरस 2:11-12: पापपूर्ण इच्छाओं से दूर रहो।

भाग 6: वे बातें जो परमेश्वर नहीं करता

कुछ बातें परमेश्वर के स्वभाव के विपरीत हैं, और परमेश्वर उन बातों को कभी नहीं करता। यद्यपि ये बातें स्पष्ट होनी चाहिए, फिर भी हम सहजता से विपरीत सोचने और व्यवहार करने लगते हैं। इन बातों की समझ हमारे परमेश्वर पर विश्वास को दृढ़ करनी चाहिए।

अध्याय 49 गलत करना, न्याय को विकृत करना

निश्चय ही, परमेश्वर कभी बुरा नहीं करते, और न ही सर्वशक्तिमान कभी न्याय को विकृत करते हैं।

(अय्यूब 34:12)

परमेश्वर ने कभी गलत नहीं किया या न्याय को विकृत नहीं किया, और वह ऐसा कभी नहीं करेगा। फिर भी, हम अकसर अपनी समस्याओं के लिए दोष परमेश्वर को देते हैं।

जब अय्यूब का जीवन अत्यंत अच्छा था और वह सब कुछ खो बैठा, तब अय्यूब की पत्नी ने उससे कहा:

“क्या तुम अब भी अपनी अखंडता बनाए रखते हो? परमेश्वर को त्याग दो, और मर जाओ।” (अय्यूब 2:9)

हमारी स्वाभाविक पापमय प्रवृत्ति यह है कि हम अपनी समस्याओं के लिए परमेश्वर को दोष दें। अक्सर, हमारी समस्याएँ स्वयं हमारे द्वारा उत्पन्न होती हैं; अक्सर हम वही काटते हैं, जो हमने बोया है; फिर भी हम परमेश्वर को दोष देते हैं।

कई बार, जैसे अय्यूब के जीवन में हुआ, हमारी समस्याएँ मुख्य रूप से दूसरों के कारण होती हैं, और तब भी हम परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं। अय्यूब दुःख में धैर्य का अद्भुत उदाहरण है, परन्तु उसमें भी परमेश्वर में दोष ढूँढने की प्रवृत्ति थी:

मैं तुझसे पुकारता हूँ, परन्तु तू मुझे उत्तर नहीं देता। मैं खड़ा होता हूँ, और तू मेरी ओर देखता है। तू मुझ पर क्रूर हो गया है। अपनी भुजा की शक्ति से तू मुझे सताता है। तू मुझे पवन में उठा देता है, और उसके साथ बहा ले जाता है। तू मुझे आँधी में घोल देता है। (अय्यूब 30:20-22)

परमेश्वर ने अय्यूब पर आक्रमण नहीं किया था। अय्यूब की पुस्तक के पहले दो अध्यायों से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने अस्थायी रूप से अय्यूब की रक्षा करना रोक दिया था, और वास्तव में शैतान ही था जिसने अय्यूब पर आक्रमण किया। अय्यूब इसे नहीं जानता था, और उसने परमेश्वर पर उस पर आक्रमण करने का दोष लगाया।

आपकी परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, यदि आप यीशु के अनुयायी हैं, तो स्मरण रखें:

हम जानते हैं कि सब बातें मिलकर परमेश्वर से प्रेम रखने वालों के लिये, अर्थात् उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए लोगों के लिये, भलाई के लिये ही काम करती हैं। (रोमियों 8:28)

वह जिसने अपने ही पुत्र को नहीं छोड़ा, परन्तु हम सब के लिये उसे दे दिया, वह उसके साथ हमें सब कुछ मुक्त रूप से क्यों न देगा? (रोमियों 8:32)

परमेश्वर ज्योति है, और उसमें तनिक भी अंधकार नहीं है। (1यूहन्ना 1:5)

इस पृथ्वी पर जीवन बहुत कठिन हो सकता है, और प्रायः इसे बदलने के लिये हमारे पास बहुत कुछ नहीं होता। हमारी परीक्षाएँ कभी-कभी बहुत लंबे समय तक चल सकती हैं। भविष्यद्वक्ता हबक्कूक ने पूर्वाभास किया था कि परमेश्वर अपनी ही देश पर बाबुली सेना भेजेंगे। उसे यह सीखना पड़ा कि जब उसका संसार टूटने के कगार पर था, तब परमेश्वर पर कैसे विश्वास और अनुसरण करें। उसके निष्कर्ष का एक भाग यह था:

यद्यपि अंजीर का वृक्ष न फले, और बेलों में फल न हो, जैतून का श्रम व्यर्थ हो जाए, खेत अन्न न दें, भेड़-बकरियाँ बाड़े से काट दी जाएँ, और तबेले में न तो गाय-बैल हों, तौभी मैं प्रभु में आनन्दित रहूँगा, अपने मोक्ष के परमेश्वर में उल्लासित रहूँगा! (हबक्कूक 3:17-18)

आपके विषय में क्या? क्या आप अपनी परिस्थितियों की परवाह किए बिना **प्रभु में आनन्दित होंगे**, और **परमेश्वर में प्रसन्न रहेंगे**?

आगे मनन के लिए

क्या आपने कभी अपनी समस्याओं के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराया है? क्या आपको क्षमा मांगनी चाहिए?

भजन 10:1-18: हे प्रभु, आप दूर क्यों खड़े हैं?

नीतिवचन 3:11-12: प्रभु की ताड़ना को तुच्छ न जानें।

2कुरिन्थियों 4:16-17: हमारे हल्के और क्षणिक क्लेश।

तीतुस 1:1-2: परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलते।

इब्रानियों 6:16-18: परमेश्वर के लिए झूठ बोलना असंभव है।

इब्रानियों 12:3-11: परमेश्वर की ओर से ताड़ना।

इब्रानियों 13:5-6: "मैं कभी तुम्हें नहीं छोड़ूँगा..."

भाग 7: सब कुछ एक साथ जोड़ना

अब तक हमने अनन्त जीवन के आधार को विभिन्न “चीज़ों” पर विचार करके समझने का प्रयास किया है:

भाग 1: वे बातें जिन्हें हम जानते हैं

भाग 2: वे बातें जो हम करते हैं

भाग 3: वे बातें जो परमेश्वर करते हैं

भाग 4: वे बातें जो परमेश्वर और हम करते हैं

भाग 5: वे बातें जो हमें नहीं करनी चाहिए

भाग 6: वे बातें जो परमेश्वर नहीं करता

यद्यपि ये सभी “चीज़ें” अलग-अलग स्तर पर महत्वपूर्ण हैं, किंतु अंत में सबसे आवश्यक बात यह है कि हम इन चीज़ों की समझ का उपयोग कर मोक्ष में प्रवेश करें और उस मोक्ष में इस प्रकार जीवन बिताएँ कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करे।

इस अनुभाग में हम मोक्ष को तीन विभिन्न दृष्टिकोणों से देखेंगे:

- हम मोक्ष के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करेंगे।
- उद्धार पाना अर्थात् “मसीह में” होना है।
- मोक्ष में यीशु के पास आना, परमेश्वर से मेल-मिलाप होना, तथा परमेश्वर को जानना और उससे प्रेम करना सम्मिलित है।

इसके पश्चात् हम “दृढ़ रहना” की आवश्यकता के साथ इस खंड का समापन करेंगे।

अध्याय 50

मोक्ष

“मनुष्य का पुत्र खोए हुए को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।”

(लूका 19:10)

यह वचन सत्य है और हर प्रकार से स्वीकार करने योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए संसार में आए, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।

(1तीमुथियुस 1:15)

क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता उत्पन्न पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिये नहीं भेजा कि वह संसार का न्याय करे, परन्तु इसलिये कि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए।”

(यूहन्ना 3:16-17)

यीशु **पापियों को बचाने** और **जो खो गया था उसे खोजने और बचाने** के लिए आए। इसमें आप और मैं दोनों ही सम्मिलित हैं। मुझे प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण बाइबल का एक मुख्य विषय यह है कि परमेश्वर ने मानवता के लिए मोक्ष का प्रावधान किया है। एक अन्य प्रमुख विषय है कि अधिकांश लोगों द्वारा मोक्ष को अस्वीकार कर दिया गया। परमेश्वर ने मेरे और आपके लिए मोक्ष का मार्ग प्रदान किया है। आइए, हम सतर्क रहें कि हम इसे अस्वीकार न करें!

उद्धार या बचाए जाने का क्या अर्थ है? 'मोक्ष' कैसा प्रतीत होता है? परमेश्वर ही हैं जिन्होंने मोक्ष का आरंभ किया, और परमेश्वर हमें मोक्ष की अनेक आशीषें और व्यवस्थाएँ स्वतंत्र रूप से प्रदान करते हैं। इस पुस्तक में मोक्ष के अनेक पहलुओं पर चर्चा की गई है:

- पाप के कारण उत्पन्न हमारी आत्मिक मृत्यु के कारण मोक्ष आवश्यक है (अध्याय 3)।
- यीशु ने हमारे पापों के लिए मृत्यु स्वीकार की, जिससे मोक्ष संभव हुआ (अध्याय 4)।
- यीशु मृतकों में से जीवित हुए, जिससे उन्होंने मृत्यु पर अपनी सामर्थ्य तथा हमें हमारे पापों से बचाने की अपनी शक्ति सिद्ध की (अध्याय 5)।
- मोक्ष का स्रोत परमेश्वर के प्रेम में है (अध्याय 6)।
- परमेश्वर और सृष्टि के विषय में ज्ञान हमें मोक्ष को समझने में सहायता करता है

(अध्याय 1 से 15)।

- मोक्ष में यीशु के पास आना, यीशु पर विश्वास करना और यीशु का अनुसरण करना सम्मिलित है। हम में से प्रत्येक को परमेश्वर की ओर पश्चाताप के साथ मुड़ना और यीशु पर विश्वास करना चाहिए (अध्याय 16)।
- मोक्ष में परमेश्वर की ओर से इस जीवन में बहुत सी आशीषें और प्रावधान सम्मिलित हैं: हमारे पाप क्षमा किए जाते हैं; हम पाप की शक्ति से मुक्त होते हैं; हम परमेश्वर से उत्पन्न होते हैं; पवित्र आत्मा का वरदान; हम एक देह के सदस्य होते हैं; और मसीह में हमें हर आत्मिक आशीष दी जाती है! (अध्याय 28-34)।
- परमेश्वर के प्रति प्रेम हमारे जीवन को प्रभावित करता है: वे कार्य जो हम करते हैं (अध्याय 17 से 27, एवं 35 से 41) और वे बातें जिनसे हम बचते हैं (अध्याय 42 से 48)। हम केवल परमेश्वर की अनेक आशीषों और प्रावधानों के कारण ही धार्मिक जीवन जी सकते हैं (अध्याय 28 से 41)।
- भविष्य की आशीषें भी सम्मिलित हैं: न्याय के दिन कोई दोषारोपण नहीं होगा, और भविष्य में प्रतिफल मिलेगा (अध्याय 14 और 15)।

इस अद्भुत मोक्ष पर पुनः विचार करें:

परन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की दया और मनुष्यों के प्रति उसका प्रेम प्रकट हुआ, तो उसने हमें अपने किए हुए धार्मिकता के कामों से नहीं, अपितु अपनी दया के अनुसार, पुनर्जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के नवीनीकरण के द्वारा उद्धार दिया, जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर भरपूर रीति से उंडेला। ताकि हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बन सकें। (तीतुस 3:4-7)

ऐसी महान मोक्ष के लिए परमेश्वर, तेरा धन्यवाद!

आगे मनन के लिए

प्रेषितों के काम 4:8-12: मोक्ष किसी और में नहीं है।

रोमियों 1:16-17: मोक्ष के लिए परमेश्वर की शक्ति।

2कुरिन्थियों 6:1-2: आज ही मोक्ष का दिन है।

2कुरिन्थियों 7:8-10: पश्चाताप जो मोक्ष की ओर ले जाता है।

तीतुस 2:11-14: परमेश्वर का अनुग्रह जो मोक्ष लाता है।

इब्रानियों 2:1-4: यदि हम इतने महान मोक्ष की उपेक्षा करें।

पुस्तक संदर्भ: "सामान्य मसीही जीवन" वॉचमैन नी द्वारा।

अध्याय 51 मसीह में

**अतः यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं।
देखो, सब कुछ नया हो गया है।**

(2कुरिन्थियों 5:17)

इसलिए अब मसीह यीशु में जो हैं, उन पर दंड की कोई आज्ञा नहीं है।

(रोमियों 8:1)

मसीह यीशु में जो तुम सब हो, उन पर शांति हो।

(1पतरस 5:14)

धर्मग्रंथ उन लोगों को उद्धार प्राप्त हुए बताते हैं जो **“मसीह में”** हैं। यदि आप **“मसीह में”** हैं, तो आप **एक नई सृष्टि** हैं; पुरानी बातें बीत गई हैं; सब कुछ नया हो गया है! आपको एक नई पहचान प्राप्त हुई है। यह परमेश्वर की अनुग्रह का भाग है; कुछ ऐसा जो परमेश्वर करता है:

अब वह जो हमें आपके साथ मसीह में स्थिर करता है और हमें अभिषेक करता है, वह परमेश्वर है, जिसने हमें छाप भी दी और हमारे हृदयों में आत्मा का बयाना दिया। (2कुरिन्थियों 1:21-22)

हमारी नई पहचान की समझ **मसीह में** यीशु का अनुसरण करने की एक महत्वपूर्ण कुंजी है। हमारी स्थिति **मसीह में** ही हमें परमेश्वर की अनुग्रह से जोड़ती है, वे अनेक आशीष जो परमेश्वर ने हमें freely दी हैं।

हम पहले ही उन अनेक आशीषों को देख चुके हैं, जो हमें परमेश्वर की अनुग्रह से मिलती हैं, यदि हम **मसीह में** हैं (अध्याय 28 से 34):

- क्योंकि यीशु ने अपना लहू बहाया, हमारे पाप क्षमा किए गए हैं।
- क्योंकि यीशु मरे, हम पाप से स्वतंत्र किए गए हैं।
- क्योंकि यीशु मृतकों में से जी उठे, हमें नया जीवन मिला है।
- क्योंकि यीशु सर्वोच्च किए गए हैं, पवित्र आत्मा उंडेली गई है।
- हम एक देह, मसीह के शरीर के सदस्य हैं।
- परमेश्वर ने हमें हर आत्मिक आशीष **मसीह में** दी है।

आइए हम कुछ और शास्त्र वचन विचारें जो **मसीह में** होने से संबंधित हैं:

इसलिए अब उन लोगों पर जो मसीह यीशु में हैं और जो शरीर के अनुसार

नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं, कोई दंड की बात अब नहीं रही। क्योंकि मसीह यीशु में जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। (रोमियों 8:1-2)

परन्तु अब जब विश्वास आ गया है, तब हम शिक्षक के अधीन नहीं रहे। क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान हो। (गलातियों 3:25-26)

क्योंकि हम उसी के कार्य हैं, जो मसीह यीशु में अच्छे कार्यों के लिए सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया कि हम उनमें चलें। (इफिसियों 2:10)

पर अब मसीह यीशु में तुम, जो पहले दूर थे, मसीह के लहू में निकट आ गए हो। (इफिसियों 2:13)

ये पद हमें वे और आशीषें स्पष्ट करते हैं जो हमें **मसीह में** प्राप्त होती हैं:

- अब हम दोषी नहीं ठहराए जाते।
- हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र किया गया है।
- हम सब विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान बन गए हैं।
- हम परमेश्वर की कृति हैं, जिन्हें भले कामों के लिए रचा गया है।
- हमें परमेश्वर के निकट लाया गया है।

हमारे शत्रु की सबसे बड़ी छलनाओं में से एक है कि वह विश्वासियों को उनकी नई पहचान **“मसीह में”** समझने से रोके, जिससे वे बिना उद्धार पाए लोगों की तरह ही जीवन जीते रहें। उसके छल में न पड़ें! परमेश्वर ने हम, अपनी प्रजा को, महान आशीष दी है। आइए, हम उसी आशीष में जीवन यापन करें!

क्योंकि तुम पहिले अंधकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो। ज्योति के बच्चों के समान चलो। (इफिसियों 5:8)

आगे मनन के लिए

ऊपर दिए गए 11 बिंदुओं को ज़ोर से पढ़ें, उन्हें व्यक्तिगत बनाते हुए (जैसे, “हमारा” को “मेरा” में और “हम हैं” को “मैं हूँ” में बदलें)।

इफिसियों 1:3-14: मसीह में हर आत्मिक आशीष।

फिलिप्पियों 1:1; कुलुस्सियों 1:2: उन लोगों के लिए जो मसीह में हैं।

1यूहन्ना 3:1-3: हमें परमेश्वर की संतान कहलाने का अधिकार मिला है!

पुस्तक संदर्भ: “Victory Over the Darkness” नील एंडरसन द्वारा; “मसीह में अपनी पहचान की सामर्थ को पहचानना।”

अध्याय 52 “मेरे पास आओ”

“तुम सब जो परिश्रम करते हो और बोझ से दबे हो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जुआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं कोमल और विनम्र हृदय हूँ; और तुम्हारी आत्माओं को विश्राम मिलेगा। क्योंकि मेरा जुआ सहज है और मेरा बोझ हल्का है।”

(मत्ती 11:28-30)

“यदि कोई प्यासा है तो वह मेरे पास आए और पिये! जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा धर्मग्रंथ में कहा गया है, उसके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।”

(यूहन्ना 7:37-38)

यीशु हम में से प्रत्येक को अपने पास बुलाते हैं। यह मोक्ष का निमंत्रण है: **“मेरे पास आओ।”** हम यीशु के पास कैसे आते हैं? हम पश्चाताप और विश्वास के द्वारा यीशु के पास आते हैं (अध्याय 16 के अनुसार)।

मोक्ष मुख्य रूप से उन बातों का विषय नहीं है जिन्हें हम जानते हैं या जो हम करते हैं; मोक्ष का विषय सही संबंध है:

“अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे, जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, और जिसे तूने भेजा है, अर्थात् यीशु मसीह को जानें।” (यूहन्ना 17:3)

अनन्त जीवन का अर्थ परमेश्वर को जानना है। पाप ने हमारे और परमेश्वर के संबंध को तोड़ दिया था। यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारा परमेश्वर से संबंध फिर से स्थापित हुआ है; हम परमेश्वर के साथ **मेल-मिलाप** हो गए हैं:

क्योंकि जब हम शत्रु थे, तो भी उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप हुए; तो जब मेल-मिलाप हो चुका, तो उसके जीवन के द्वारा उद्धार अवश्य ही पाएंगे। और केवल इतना ही नहीं, परन्तु हम परमेश्वर में अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा भी आनन्दित होते हैं, जिनके द्वारा अब हमें मेल-मिलाप प्राप्त हुआ है। (रोमियों 5:10-11)

मोक्ष को समझने में सहायता के लिए, इस पुस्तक ने आत्मिक अवधारणाओं को **“जो बातें हम जानते हैं”** और **“जो बातें हम करते हैं”** जैसी श्रेणियों में विभाजित किया है। फिर भी, यह समझना एक भूल है कि मोक्ष केवल जानने या कुछ करने तक सीमित है। केवल आत्मिक सत्य जानना तथा धार्मिक कार्य करना हमें नहीं बचाता। इसके विपरीत,

मोक्ष का अर्थ यीशु के पास आना, यीशु पर विश्वास करना, और यीशु का अनुसरण करना है। हम यीशु के पास परमेश्वर से **मेल-मिलाप** होने के लिए तथा **पिता** और **पुत्र** को **जानने** के लिए आते हैं।

जब हम यीशु के द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप हो जाते हैं, तब हमें वे बातें सीखनी और करनी चाहिए जो परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को दृढ़ करें। साथ ही, हमें उन बातों से बचना चाहिए जो परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को क्षति पहुँचाती हैं। इन्हीं बातों के संदर्भ में “**जो बातें हम जानते हैं,**” “**जो बातें हम करते हैं,**” और “**जो बातें हमें नहीं करनी चाहिए**” लिखा गया है। इसका उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर को और अधिक भली-भांति जानें; परमेश्वर के साथ अपने संबंध को और गहरा करने के लिए; परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को और गहरा करने के लिए।

क्या आप पहले ही मोक्ष के लिए यीशु के पास आ चुके हैं? यदि ऐसा है, तो मैं आपको आग्रह करता हूँ कि आप हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ें। महिमा उसी को अब और सदा सर्वदा तक हो। आमीन। (2पतरस 3:18)

यदि आप अभी तक यीशु के पास नहीं आए हैं, तो आज ही क्यों नहीं आते?

देखो, अब स्वीकार करने का समय है। देखो, अब मोक्ष का दिन है। (2कुरिन्थियों 6:2)

आत्मा और दुल्हन कहते हैं, “आ!” सुनने वाला भी कहे, “आ!” जो प्यासा है वह आए। जो चाहे, वह जीवन का जल निःशुल्क ले ले। (प्रकाशितवाक्य 22:17)

आगे मनन के लिए

मत्ती 7:21-23: “मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना।”

मत्ती 19:13-15: छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो।

यूहन्ना 3:19-21: ज्योति के पास आना।

यूहन्ना 5:39-40: यीशु के पास आने से इंकार करना।

यूहन्ना 6:35-51: “जो मेरे पास आएगा, वह कभी भूखा न होगा।”

यूहन्ना 14:6: यीशु के माध्यम से पिता के पास आना।

2कुरिन्थियों 5:17-21: यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप।

फिलिप्पियों 3:7-16: यीशु को जानने का सर्वोच्च मूल्य।

1यूहन्ना 5:20: ताकि हम उसे जान सकें जो सत्य है।

पुस्तक संदर्भ: “The Way to God” डी. एल. मूडी द्वारा। इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध।

अध्याय 53

दृढ़ रहना

इसलिए उस स्वतंत्रता में दृढ़ रहो जिसमें मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है, और फिर से दासत्व के जुए में न फंसो।

(गलातियों 5:1)

अंत में, प्रभु में और उसकी शक्ति के महान सामर्थ्य में दृढ़ बनो। परमेश्वर का पूरा हथियार धारण करो, ताकि तुम शैतान की चालों का सामना कर सको। क्योंकि हमारी कुशती शरीर और लहू से नहीं है, परन्तु प्रधानताओं से, शक्तियों से, इस युग के अंधकारमय संसार के शासकों से, और स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आत्मिक शक्तियों से है। इसलिए परमेश्वर का सम्पूर्ण शस्त्रागार पहन लो, कि तुम दुष्ट दिन में सामर्थ्य सहित टिके रह सको, और सब कुछ कर लेने के बाद भी स्थिर रह सको। अतः डटे रहो, अपनी कमर को सत्य की utility belt से कसकर, और धार्मिकता का बख्तर पहनकर, अपने चरणों को शांति के शुभ समाचार के लिए तैयार हो जाने के साथ बाँधकर; और इन सब के ऊपर विश्वास की ढाल लेकर, जिससे तुम दुष्ट के सब जलते हुए बाणों को बुझा सको। और मोक्ष का शिरस्त्राण ले लो, तथा आत्मा की तलवार भी, जो परमेश्वर का वचन है। सारी प्रार्थना और निवेदन के साथ, हर समय आत्मा में प्रार्थना करते रहो, और इसी के लिए जागरूक रहकर सम्पूर्ण धैर्य और सभी पवित्र लोगों के लिए लगातार निवेदन करते रहो।

(इफिसियों 6:10-18)

धर्मग्रंथ उन लोगों को उपदेश देता है जो उद्धार पाए हैं कि वे “दृढ़ रहें।” ध्यान दें कि निर्देश आगे बढ़ने या विजय प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि **दृढ़ रहने** के लिए है। यीशु पहले ही विजय प्राप्त कर चुके हैं (कुलुस्सियों 2:8-15)। हमें उसी विजय में **दृढ़ रहना** चाहिए।

इफिसियों 6:13-18 (ऊपर) में, हमें यह चित्रात्मक उदाहरण दिया गया है कि हमें किस प्रकार **दृढ़ रहना** है—परमेश्वर के सम्पूर्ण शस्त्रों के साथ, जो हमारी रक्षा के लिए हैं। यह चित्र हमें दिखाता है कि परमेश्वर ने हमें विजय दिलाने के लिए कितनी व्यवस्थाएँ की हैं:

- **सत्य का कमरबंध:** शैतान और दुष्टात्माओं का मुख्य शस्त्र झूठ है। सत्य को जानना हमें उनके झूठे प्रलोभनों से सुरक्षित करता है। मुख्य सत्य जिसे हम जानते हैं, वह यह है कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, जिसने पापियों का उद्धार करने के लिए मृत्यु को सहा; और जो मृतकों में से पुनरुत्थान हुआ। सत्य को जानो और उसमें दृढ़ रहो!

- **धार्मिकता की छाती की पट्टी:** यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हमारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं और हम परमेश्वर के सामने धार्मिक ठहराए गए हैं (1यूहन्ना 1:9)। इसके विपरीत लगाए गए सभी आरोप असत्य हैं। यीशु के द्वारा प्राप्त धार्मिकता में दृढ़ रहो! (अध्याय 29, 30, 31, 32 तथा 42 भी देखें।)
- **जूते... शांति के शुभ समाचार की तैयारी:** अब यीशु के माध्यम से हमें परमेश्वर के साथ शांति प्राप्त है (रोमियों 5:1)। हमें उस शांति में दृढ़ रहना चाहिए और दूसरों के साथ शुभ समाचार, अर्थात् शांति का सुसमाचार, बांटने के लिए तैयार रहना चाहिए (1पतरस 3:15)।
- **विश्वास की ढाल:** परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ विश्वास रखने से हम **दुष्ट के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सकते हैं!** विश्वास में दृढ़ रहो! (अध्याय 35 "विश्वास।" भी देखें।)
- **मोक्ष का शिरस्त्राण:** संपूर्ण सृष्टि में कुछ भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता (रोमियों 8:31-39)। मोक्ष की आशा में दृढ़ रहना! (1थिस्सलुनीकियों 5:8)
- **आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है:** हमें धर्मग्रंथ को जानना चाहिए और उसमें दृढ़ रहना चाहिए। दृढ़ रहने के लिए विशिष्ट पदों को ऊँचे स्वर में बोलें (यीशु हमें इसका उदाहरण मत्ती 4:1-11 में देते हैं)। परमेश्वर के वचन के साथ दृढ़ रहना!
- **प्रत्येक समय आत्मा में प्रार्थना करना:** हमें सदैव परमेश्वर के साथ संवाद में रहना चाहिए। कभी भी प्रार्थना करना न छोड़ें! (1थिस्सलुनीकियों 5:17) (साथ ही अध्याय 24 "प्रार्थना।" देखें)
- **हर प्रकार की जागरूकता और स्थिरता के साथ चौकसी करना:** दृढ़ रहने के लिए आवश्यक है कि हम सदैव सजग रहें। जैसा कि स्वयं यीशु ने कहा: **"सावधान रहो! जागते रहो!"** (मरकुस 13:33 NIV)

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि विजय हमारी है जब हम परमेश्वर के पूरे हथियार को धारण कर यीशु में दृढ़ रहते हैं!

आगे मनन के लिए

फिलिप्पियों 1:27-28: एक आत्मा में दृढ़ रहना।

2थिस्सलुनीकियों 2:15: दृढ़ रहना।

पुस्तक संदर्भ: "बैठो, चलो, दृढ़ रहो" — वॉचमैन नी द्वारा।

पुस्तक संदर्भ: "विजयी जीवन" — डी. एल. मूडी द्वारा।

निष्कर्ष

परमेश्वर भला है; हर समय; हर प्रकार से!

इस पूरी पुस्तक में, हमने परमेश्वर की भलाई, उसके प्रेम और उसके अनुग्रह को उसके लोगों के लिए देखा है। इन सत्यों को दृढ़ता से थामे रहें! इन्हें कभी न छोड़ें! कुछ सप्ताह या महीनों में इस पुस्तक की पुनरावृत्ति करने का विचार करें, ताकि आप स्वयं को इन बातों की याद दिला सकें।

परन्तु वचन के करनेवाले बनों, केवल सुननेवाले ही नहीं, अपने आप को धोखा देनेवाले न बनो। (याकूब 1:22)

जैसा कि मैंने परिचय में किया था, वैसे ही मैं पुनः आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप निम्नलिखित प्रार्थना को अपनी बना लें:

हे परमेश्वर, मेरी सहायता कर कि मैं तेरे प्रेम को जान सकूँ। मेरी सहायता कर कि मैं तेरे मार्ग सीख सकूँ और उनमें चल सकूँ। मेरी आत्मिक आंखें खोल, ताकि मैं स्वयं को वैसे ही देख सकूँ जैसे तू मुझे देखता है, और अपनी परिस्थितियों को वैसे ही समझ सकूँ जैसे तू उन्हें समझता है। मुझे अपनी आत्मा से भर दे, ताकि मैं जहां भी तू ले चले, वहां तेरा अनुसरण कर सकूँ।

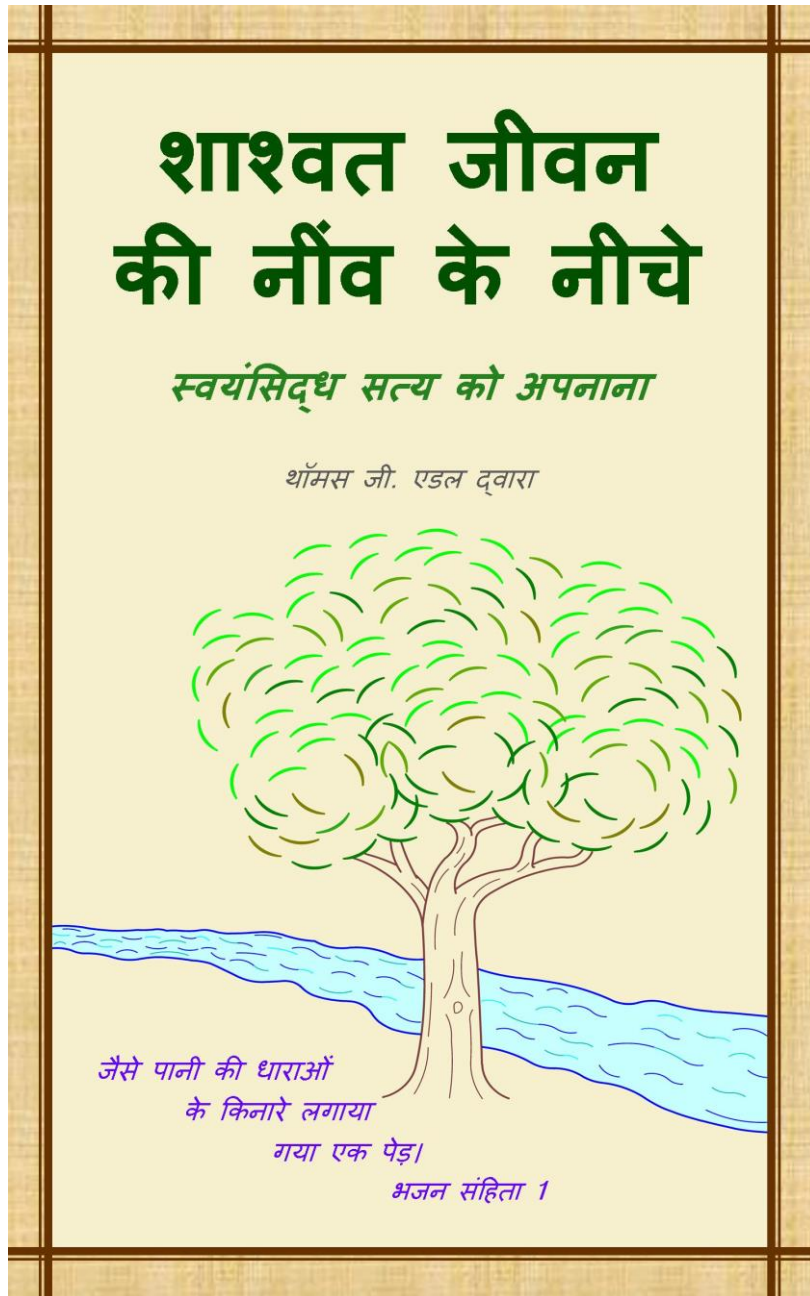
अंत में:

अब शांति के परमेश्वर, जिन्होंने भेड़ों के महान चरवाहा, हमारे प्रभु यीशु को, अनंत वाचा के लहू के साथ मृतकों में से फिर से जीवित किया, वही आपको हर अच्छे कार्य में अपनी इच्छा पूरी करने के लिए सिद्ध करें, और अपने दृष्टिकोण में जो प्रिय है, वह आप में यीशु मसीह के द्वारा करें, जिनको युगानुयुग महिमा मिले। आमीन। (इब्रानियों 13:20-21)

आत्मा और दुल्हन कहते हैं, "आओ!" जो सुनता है, वह भी कहे, "आओ!" जो प्यासा है, वह आ जाए। जो चाहे, वह जीवन का जल निःशुल्क ले ले।
(प्रकाशितवाक्य 22:17)

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह आप सब के साथ रहे। आमीन। (प्रकाशितवाक्य 22:21)

लेखक की अन्य पुस्तकें

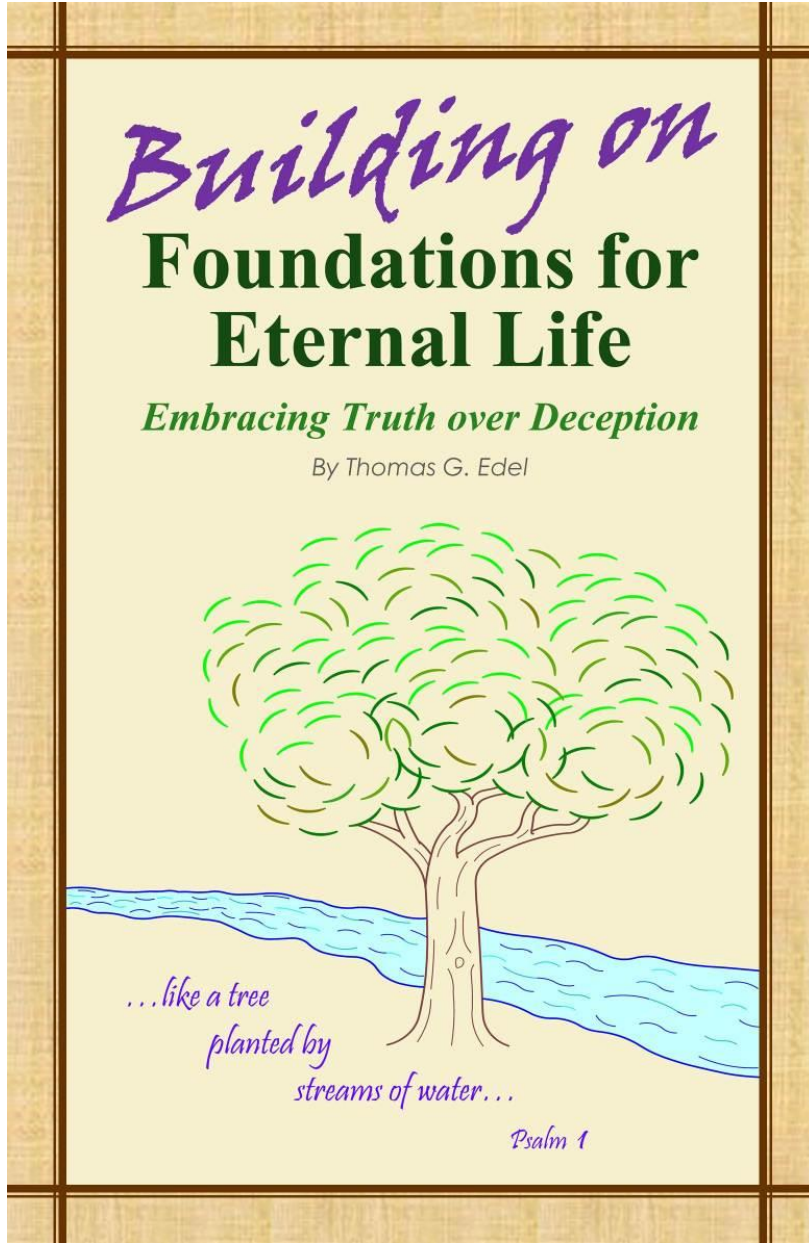


शाश्वत जीवन की नींव के नीचे

क्या सत्य अस्तित्व में है? सत्य क्या है? सत्य को कैसे जाना जा सकता है? पर्यवेक्षण और तर्क के माध्यम से सत्य के कई आयामों को जाना जा सकता है। इस प्रकार के सत्य वह आधारशिला बनाते हैं, जिन पर सच्चा विश्वास और ज्ञान स्थापित किए जा सकते हैं। आप स्वयं विचार करें कि क्या आप सहमत हैं कि इस पुस्तक में चर्चा किए गए "सत्य" "स्व-सिद्ध" हैं!

निःशुल्क ई-पुस्तक संस्करण यहां उपलब्ध होने चाहिए:

ShalomKoinonia.org



शाश्वत जीवन की नींव पर निर्माण

राजा सुलैमान ने लिखा: **“धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि प्राप्त करता है, और वह जो समझ पाता है। क्योंकि उसका लाभ चाँदी प्राप्त करने से उत्तम है, और उसकी उपज शुद्ध सोने से उत्तम है। वह माता माणिकों से भी अधिक बहुमूल्य है। तुम जिन वस्तुओं की इच्छा कर सकते हो, उनमें से कोई भी उसकी तुलना में नहीं है।** (नीतिवचन 3:13-15)

“तुम जिन वस्तुओं की इच्छा कर सकते हो, उनमें से कोई भी उसकी तुलना में नहीं है।” क्या आपके पास यह है? क्या यह सचमुच इतना मूल्यवान है? क्या आपके पास **बुद्धि** और **समझ** है?

निःशुल्क ई-पुस्तक संस्करण यहां उपलब्ध होने चाहिए:

ShalomKoinonia.org
